श्रीः

बैतालपच्चीसी ॥

जिसमें

श्रीमन्महाराजराजेन्द्र वीरविक्रमादित्य और बैताल के प्रश्नोत्तर न्याय शास्त्रानुसार अनेक विचित्र और सुललित कहानियों में वर्णित हैं

जिसको

श्री जयनगराधीश राजाजयसिंहसवाई की आज्ञानुसार सूरतकविने संस्कृत बैताल पचीसी से ब्रजभाषा में रचना किया

प्रोपाइटर सेठ टीकारामजी ने

"निर्णयसागर मुम्बई"

स्वच्छाक्षरोंमें छापकरप्रकाशितकिया।

Gyan Bhaskar Press, Bara Banki

श्रावण शुक्ल ११ सम्वत १९६०

श्रीगणेशायनमः ॥

बैतालपच्चीसी ॥

इस कथा का प्रारम्भ इस प्रकार से है कि मुहम्मदशाह बादशाह के ज़माने में राजा जयसिंहसवाई ने जो मालिक जयनगर का था सूरतनाम कवीश्वरसे कहा कि बैतालपच्चीसी को जो ज़बान संस्कृत में है तुम ब्रजभाषा में कहो तब उसने बमूजिब हुक्म राजा के ब्रज की बोली में कही अब वह खड़ी बोली में होकर छापी जाती है जिसमें सब लोगों की समझ में आवे ॥

प्रथम कहानी का आरम्भ ॥

धारा नगर नाम एक शहर था वहां का राजा गन्धर्बसेन था उसके चार रानियां थीं उनसे छः बेटे थे एक से एक पण्डित और बलवान था मृत्युबश थोड़े दिनों में वह राजा मरगया और उसकी जगह बड़ा बेटा शंखनाम राजा हुआ फिर कितने दिनों पीछे उसका छोटा भाई बिक्रम बड़े भाई को मारकर आप राजा हुआ और निर्विघ्न राज्य करने लगा दिनों दिन उसका राज्य ऐसा बढ़ा कि संपूर्ण जम्बूद्वीप का राजा हुवा और अचल राज्य करके शाका बांधी कितने दिनों के पीछे राजा ने यह मन में बिचारा कि जिन मुल्कों का नाम मैं सुनता हूं उनकी सैर किया चाहिये यह अपने मन में ठान राजगद्दी अपने छोटे भाई भर्तृहर को सौंप आप

योगी बन मुल्क २ की ओर बन बन की सैर करने लगा एक ब्राह्मण उस नगर में तपस्या करता था एकदिन देवता ने प्रसन्न हो उसे अमृत फल ला दिया तब उसने उस फल को अपने घरमें लाकर ब्राह्मणी से कहा कि जो कोई इसे खायगा सो अमर होगा देवताने फल देते समय यह मुझसे कहा है यह सुनके ब्राह्मणी बहुत रोई और कहने लगी कि यह हमें बड़ा पाप भुगतना पड़ा क्योंकि अमर होके कबतक भीख मांगेंगी इस्से तो मरना अच्छा है जो मरजावें तो संसार के दुःख से छूटजांय तब ब्राह्मण बोला कि लेते तो मैं ले आया पर तेरी बात सुनके मेरी बुद्धि जाती रही अब जो तू बतावे सो मैं करूं फिर उस्से ब्राह्मणी ने कहा यह फल राजा को दो और इसके पलटे द्रव्य लो जिससे लोक और परलोक का काम हो यह बात सुन ब्राह्मण राजा के पासगया और अशीस दे फल का अहवाल बर्णन करके कहा कि महाराज यह फल आप लीजिये और मुझे कुछ द्रव्य दीजिये आपके चिरंजीवि रहने से मुझे सुख है फिर राजा ने ब्राह्मण को लाखरुपये दे बिदाकर महल में आ जिस रानी को बहुतसा चाहता था उसे वह फल देकर कहा ऐ रानी ! तू इसे खा कि अमर होवेगी और सर्बदा जवान रहेगी रानी ने इस बातको सुन राजा से फल लेलिया राजा बाहर आ सभा में आया और उस रानी का मित्र एक कोतवाल था उसने वह फल उसे दिया संयोगबश एक वेश्या कोतवाल की मित्र थी उसने उसे वह फल देकर उसका गुण बर्णन किया उस वेश्या ने अपने मनमें बिचारा कि यह फल राजाके देने योग्य है यह बात अपने मनमें बिचार वह फल राजा को जाकर दिया राजा ने

फल लेलिया और उसे बहुतसा धन दे बिदा किया और फल को देख अपने जी में चिन्ताकर संसार से उदास हो कहने लगा कि इस संसार की माया किसी काम की नहीं है क्योंकि इससे अन्त को नरक में पड़ना होता है इसकारण उत्तम यह है कि तपस्या कीजिये और भगवान् के स्मरण में रहिये कि जिससे आगे को भला होवे यह बात मनमें ठान महल में जा रानी से पूछा कि तूने वह फल क्या किया उसने कहा मैं उसे खागई तब तो वह फल रानी को दिखाया वह देखतेही भौचकसी रहगई और कुछ उत्तर न बन आया फिर राजा ने बाहर आ उस फलको धुलवाकर खाया और राज पाट छोड़ योगी बन अकेला बिनकहे सुने बनको सिधारा बिक्रम का राज्य खाली रहा जब यह समाचार राजा इन्द्र को पहुंचे तो उन्होंने एक देव धारानगर की रखवारी को भेजा वह दिन-रात उस नगरकी चौकी दिया करता और इस बात का शोर प्रत्येक देश में होगया कि राजा भर्तृहर राज छोड़ निकलगया यह खबर राजा बिक्रम सुनतेही अपने देश में आया उस वक्त आधीरात का समय था कि राजा नगरी में जाता था तो उस देवने पुकारा तू कौन है और कहां जाता है खड़ारह अपना नाम बता तब राजा ने कहा मैं हूं राजा बिक्रम अपने नगर में जाता हूं तू कौन है जो मुझे रोकता है तब देव बोला कि मुझे देवताओं ने इस नगरी की रखवारी को भेजाहै जो तुम सच राजा बिक्रमहो तो पहले मुझ से लड़ो पीछे शहर में जाओ इस बात के सुनतेही राजा ने खड्ग काढ़कर उस देवको ललकारा फिर वह देव भी राजा के सम्मुख हुआ लड़ाई होने लगी निदान राजा ने देवको पछाड़ उसकी

छाती पर चढ़ बैठा तब उसने कहा ऐ राजा! तूने मुझे पछाड़ा परन्तु मैं तुझे जीदान देताहूं तब तो राजा ने हँसकर कहा तू दीवाना हुआ है किसको जी दान देता है मैं चाहूं तो तुझे मारडालूं तू मुझे जी दान क्या देगा तब वह राक्षस बोला कि ऐ राजा! मैं तुझे कालसे बचाताहूं पहले मेरी एक बात सुन फिर निर्भय हो सम्पूर्ण दुनियांका राज्यकर अन्त को राजाने उसे छोड़ दिया और उसकी बात मन देके सुनने लगा फिर देवने यह उससे कहा कि इस नगर में चन्द्रभाग नाम एक राजा बड़ा दाता था संयोगबश एक दिन वह जंगल को निकल गया तो देखताक्या है कि एक तपस्वी वृक्ष में उलटा लटका हुआ है और धुआं पीपी कर रहता है न किसीसे कुछ लेता है न बात करता है उसकी यहदशा देख राजा ने अपने घर आ सभा में बैठ कर यह कहा जो कोई उस तपस्वी को लावै वह लाख रुपये पावै इस बात को सुनकर एक वेश्याने राजा के पास आ यह विनयकी कि यदि महाराज की आज्ञा पाऊं तो उसी तपस्वी से एक लड़का उत्पन्न करा उसी के कन्धे पर चढ़ाकर लेआऊं इस बात के सुनने से राजा को आश्चर्य्य हुआ और उस वेश्याको तपस्वी के लाने के लिये बीड़ा देकर बिदा किया वह उस बन में गई और योगी की कुटी पर पहुंच कर देखती क्या है कि वह योगी सचही उलटा लटक रहा है न कुछ खाता है न पीता है और सूखरहा है तो उस वेश्याने हलवा पका उस तपस्वी के मुँह में दिया उसे मीठा मीठा जो लगा तो वह उसे चाटगया फिर उस वेश्या ने और लगा दिया इसी तरह से दो दिन तक हलवा चटाया कि उसके खाने से योगी के शरीर में कुछ बलहुवा तब उसने आंखे खोल वृक्ष से नीचे उतर उससे पूंछा तू यहां

किस काम को आई है वेश्या ने कहा मैं देव कन्या हूं स्वर्गलोक में तपस्या करती थी अब इसबन में आई हूं फिर उस तपस्वीने कहा तुम्हारी मढ़ी कहां है हमें दिखावो तब वह वेश्या उस तपस्वी को अपनी मढ़ी में लाकर षट्रस भोजन करवाने लगी तो तपस्वी ने धुआं पीना छोड़ दिया और प्रतिदिन खाना खाने पानी पीने लगा निदान बल पाकर कामदेवने उसे सताया फिर तपस्वीने उससे भोग किया योग खोया और वेश्या को गर्भरहा समय पर पुत्र उत्पन्न हुवा जब कई महीने का हुवा तब उस वेश्या ने तपस्वी से कहा कि गुसाईंजी अब चलकर तीर्थयात्रा कीजिये जिससे शरीर के सब पाप कटें ऐसी बातें कर उसे भुला लड़का उसके कन्धे पर चढ़ा राजा की मजलिस को चली कि जहांसे वह उस बात का बीरा उठा आईथी जिससमय राजा के सम्मुख पहुंची राजा उसको दूरसे पहिंचान और लड़के को उस तपस्वी के कंधे पर देख सभासदों से कहने लगा देखो तो यह वही वेश्या है जो योगी के लेनेको गईथी उन्हों ने बिनयकी कि महाराज सचकहतेहैं देखिये कि जो २ बातें हजूर से बिनय करगई थी वे सब देखने में आईं ये बातें राजाकी और मजलिसियों की सब योगी ने सुनी तो समझा कि राजा ने मेरी तपस्या डिगाने को यह यत्नकिया था योगी यह अपने जीमें बिचार कर वहां से उलटा फिर शहर के बाहर निकल उस लड़के को मारडाला और जंगलमें जाय योग करनेलगा थोड़े दिनोंमें वह राजा मृत्युबशहुआ और योगीने योगपूरा किया इसका ब्योरा इसप्रकार से है कि तुम तीन आदमी एकनगर और एक नक्षत्र योग मुहूर्त में पैदाहुयेहो तुमने राजा के घर में जन्म लिया दूसरा तेली के हुआ तीसरा योगी कुम्हार के

घरमें पैदा हुवा तुमतो यहां का राज्य करतेहो और तेली का बेटा पाताल के राज्य का मालिक था सो उस कुम्हारने अच्छी तरह से अपना योग साधा और तेली को मार मरघट में पिशाच बना सिरसे के बृक्ष में उलटा लटका रक्खा है और तेरे मारने के विचार में है यदि तू उससे बचेगा तो राज्य करेगा इस अह्-वाल से मैंने तुझे सचेत किया तू उससे गाफिल मतरहना इतनी बात कहकर देव तो चलागया राजा अपने महलमें बिराज-मानहुवा जब सबेरहुवा तो राजा बाहर निकल बैठा और दरबार आम को हुक्मदिया जितने छोटे बड़े नौकरचाकर थे सबने आ आकर हजूर में नज़रेंदीं और बाजन बजने लगे सम्पूर्ण शहर में बड़ी आनन्द और प्रसन्नता हुई प्रत्येक जगह और घर घर नाच राग मच गया फिरराजा धर्म्म राज करने लगा एक दिनका बृत्तान्त है कि शान्तिशील नामक योगी एक फल हाथमें लिये राजा की सभा में आया और वह फल राजा के हाथ में दे आसन उस जगह बिछाकर बैठा फिर एक घड़ी पीछे चलागया राजा ने उसके जाने के बाद अपने मनमें बिचारा कि जिसे देवने कहा था वही तो नहीं है फिर गुमान कर फल न खाया भण्डारी को बुलाकर दिया कि इसे अच्छी तरह से रखना योगी प्रति दिन इसी तरह से आता और एक फल देजाता संयोग वश एक दिन राजा अपने अस्तबल के देखने को गया था और मुसा-हब भी कुछ साथ थे इतने में योगी भी वहीं पहुंचा और उसी तरह से फल राजा के हाथ में दिया वह उसे उछालने लगा तो एकबारगी हाथ से पृथ्वी पर गिरपड़ा और बन्दर ने उठाकर तोड़डाला तो ऐसा एक लाल उसमें से निकला

कि राजा और मुसाहब उसकी ज्योति देख विस्मित हुये तब राजा ने योगी से कहा कि तूने मुझे यह लाल किस वास्ते दिया तब उसने कहा ऐ महाराज! शास्त्र में लिखा है कि खाली हाथ इतनी जगह न जावे राजा, गुरु, ज्योतिषी, वैद्य, बेटी के इस वास्ते कि यहां फल से फल मिलता है। ऐ राजा तुम एक लाल को क्या कहते हो मैंने जितने फल दिये हैं उन सब में रत्न हैं यहबात सुनराजा ने भंडारीसे कहा जितने फल तुझे दिये हैं वो सबलेआ। भण्डारी राजा की आज्ञापा तुरंत ले आया। उन फलों को जो तुड़वाया तो सबमें से एक एक लालपाया जब इतने लाल देखे तो राजा बहुत प्रसन्न हुवा और रत्न पारखी को बुलवा लालोंको परखाने लगा और इसप्रकार से कहा कि साथ कुछ नहीं जायगा संसार में धर्म्म बड़ी बस्तु है जो कुछ हरएक पर्बका मोल हो सो धर्म्मसे कहदो। यह बात सुन जौहरी बोला कि महाराज! तुमने सच कहा जिसका धर्म्म रहैगा उसका सब कुछ रहैगा धर्महो साथ जाताहै और वही दोनों जहान में कामआता है सुनो महाराज एक पर्ब अपने रंग संग ढंगमें दुरुस्तहै तो हरएकका मोल किरोड़२ रुपये कहूं तौभी होनहीं सक्ता अर्थात् एक२ राज्य एक२ लालका मोल है यहसुन राजा बहुत प्रसन्नहो जौहरी को खिलत दे बिदा किया और योगी का हाथ पकड़ गद्दी पर ले आया और कहनेलगा कि मेरा तो सम्पूर्ण मुल्क भी एक लालके मोलका नहीं है तुमने दिगम्बर होकर जो इतने रत्नमेरे तईं दिये हैं इसका बिचार क्या है सो तुम मुझसे कहो योगी बोला राजा इतनी बातें प्रकट करनी योग्य नहीं हैं यंत्रमंत्र औषधि धर्म्मघर का अहवाल हराम का खाना बुरीबात सुनीहुई ये

सबबातें सभामें कही नहीं जातीं एकान्त में कहूंगा। सुनो राजा यहरीति है जो बात छः कान में पड़ती है वह छिपी नहीं रहती चारकान की बात कोई नहीं सुनता और दोकान की बात ब्रह्मा भी नहीं जानता आदमी का तो क्या कहना यह बात सुन राजा योगी को एकान्त में लेजाकर पूछने लगा कि गुसाईं जी तुमने मुझे इतने लालदिये और एक दिन भोजन भी न किया मैं तुमसे बहुत लज्जित हूं अपना मतलब हो सो कहो। योगी बोला राजा गोदावरी नदी के तीर महा श्मशान में मैं मंत्र सिद्ध करूंगा उसमें अष्टसिद्धि मुझे मिलेंगी सोमैं तुमसे भिक्षा मांगताहूं कि एक दिन तुममेरे पास रातभर रहना तुम्हारे रहने से मेरा मंत्र सिद्ध होजावेगा तब राजाने कहा बहुत अच्छा मैं आऊंगा तुम वहदिन हमें बतायेजाओ योगीबोला भादों बदीचौदशि मंगलवार की सांझको हथियार बांध अकेले तुम मेरे पास आना। राजाने कहा तुम जाओ मैं नियत समय पर अकेले आऊंगा। इस तरह राजासे बचनले योगी बिदाहो मठमेंजा तैयार हो सब सामान ले मरघट में जा बैठा और यहां राजा अपने जी में बिचार करनेलगा इतने में वह समय भी आनपहुंचा तब राजा वहां तलवार बांध लँगोटकस अकेला रात को योगी के पास जापहुंचा और उसको आदेश सुनाया योगी ने कहा आओ बैठो फिर राजा वहां बैठगया तो देखता क्या है कि चारों तरफ़ भूत प्रेत डायन तरह तरह की भयानक सूरतें बनाये नाचते हैं और योगी बीच में बैठा दो कपाल बजाता है राजा ने यह देख कुछ डरभय न किया और योगीसे कहा मुझे क्या आज्ञाहै उसने कहा राजा तुम आयेहो तो एक काम करो यहां से दक्षिण ओर दो कोशपर एक मरघट है उसमें एक सिरस का

बृक्ष है तिसमें एक मुर्दा लटका है उसे मेरे पास तुर्त लाओ कि मैं यहां पूजा करता हूं राजा को उधर भेज आप आसन मार जप करने लगा एक तो अन्धेरी रात डरातीथी दूसरे मेहकी ऐसी झड़ी लगी हुईथी मानो आज बरस कर फिर कभी न बरसैगा और भूत प्रेत ऐसा शोरगुल करते थे कि शूरबीर भी हो तो देखके घबड़ाजावे परन्तु राजा अपनीराह चला जाताथा सांप जो आन आन कर पांव में लपटते तो उनको मंत्रपढ़ छुड़ा देता निदान ज्यों त्यों कठिन बाटकाट कर राजा उस श्मशान में पहुंचा तो देखा कि भूत प्रेत हाथ पकड़ पकड़ आदमियों को दे दे मारते हैं डायन लड़कों के कलेजे चबाती हैं शेर दहाड़ते हैं हाथी चिघाड़े मारते हैं निदान उस बृक्ष को जो ध्यानकर देखा तो जड़ से फुनगी तलक हरएक डालपात उसका दहड़ २ जल रहा है और चारों ओर शोर गुल होरहा है कि मार २ ले २ खबरदार जाने न पावै राजा ने उस अहवाल को देख कुछ भय न किया और अपने जीमें कहता था हो न हो यह वही योगी है जिसकी बात मुझसे देव ने कही थी फिर उस बृक्ष के पास जाकर जो देखा तो एक मुर्दा रस्सी से बँधा उलटा लटकता है मुर्दे को देख प्रसन्न हुआ कि मेरा परिश्रम सुफल हुआ फिर खांड़ा फरी ले उस बृक्ष पर निर्भय चढ़ एक हाथ तलवार का ऐसा मारा कि रस्सी कट मुर्दा नीचे गिरपड़ा और गिरतेही धाढ़ें मारमार रोनेलगा फिर राजा उसकी आवाज सुन प्रसन्न हो अपने मनमें कहनेलगा भलायह आदमीजीता तो है फिर उतरकर उससे पुछा तू कौनहै वह सुनतेही खिलखिला के हँसा राजाको इस बातका बड़ा अचम्भाहुआ फिर वह मुर्दा उसी बृक्षपर चढ़कर लटकगया राजा भी वहीं चढ़कर उसे बगल

में दबा नीचे लेआया और कहा ऐ चाराडाल तू कौनहै मुझसे कह उसने कुछ जवाब न दिया राजा ने शोचकर जीमें कहा शायद यह वही तेली है जो देवने कहा कि योगीने श्मशान बनाकर रक्खा है यह विचार उसे चादरमें बांध योगीके पासले चला जो नर ऐसा साहस करैगा वह सिद्ध होगा तब वह बैताल बोला तू कौन है और मुझे कहां लिये जाता है राजा ने जवाब दिया कि मैं राजा बिक्रम हूं तुझे योगी के पास लिये जाता हूं उसने कहा एक शर्त से चलता हूं जो रास्ते में बोलेगा तो मैं उलटा फिर जाऊँगा राजा ने उसकी शर्तमानी और ले चला फिर बैताल बोला ऐ राजा पण्डित चतुर बुद्धिमान् लोग जो हैं तिनके दिन गीत और शास्त्र के आनन्द में कटते हैं और क्रूर मूर्खों के दिन कलह और नींद में, इससे भला यह है कि इतनी राह अच्छी बातों के चर्चे में कटजाय ऐ राजा ! जो मैं कथा कहता हूं उसे सुन । इत्यारम्भ कहानी ॥

पहिली कहानी ॥

एक राजा प्रताप मुकुट नाम बनारस का था और उसके बेटे का नाम बज्रमुकुट जिसकी रानी का नाम महादेवी था एकदिन वह अपने दीवान के बेटे को साथले शिकार को गया और बहुत दूर जंगल में जा निकला और उसके बीच एक सुन्दर तालाब देखा कि उसके किनारे हंस चकवा चकई बगले मुर्गाबियां सबके सब कलोल में थे और चारों तरफ भांति २ के पक्के घाट बनेहुये थे कमल तालाब में फूले हुये किनारों पर के बृक्ष लगे हुये कि जिनकी घनी २ छांह में ठंढी २ हवायें आती थीं और पक्षी पखेरू बृक्षोंपर चहचहों में थे और रंगबरंग के

फूल बनमें फूलरहेथे उनपर भौंरेके झुण्डके झुंड गूंजरहेथे ये दोनों उस तालाबके किनारे पहुंचे और मुंह हाथ धोकर ऊपर आये वहां एक महादेवका मन्दिरथा घोड़ों को बांध मन्दिरके भीतर जा महादेवका दर्शनकर बाहर निकले कितनी देर उनको दर्शन में लगी उतने अर्से में किसी राजा की बेटी सहेलियों का झुण्ड साथ लिये हुई उसी तालाब के दूसरे किनारे पर स्नान करने आई सो स्नान ध्यान पूजा कर सहेलियों को साथलिये वृक्षोंकी छांह में टहलने लगी इधर दीवान का बेटा बैठाथा और राजा का बेटा फिरता था कि अचानक उसकी और राजाकी बेटी की चारआंखें हुई देख तेही उसके रूप को राजा का बेटा मोहित हुआ और अपने दिलमें कहने लगा कि ऐ चाण्डाल काम मुझको क्यों सताया है और उस राजपुत्री ने कुँवर को देख शिरमें जो कमल का फूल पूजाकरके रक्खाथा वह फूल हाथ में ले कानसे लगा दांत से कतर पांव तले दिया फिर उसे छाती से लगा लिया और सखियों को साथ ले सवार हो अपने मकान को गई और वह राजपुत्र निराश हो बिरह में डूबा हुआ दीवान के लड़के के पास आया और लज्जाके साथ उसके आगे सब हाल कहने लगा कि ऐ मित्र मैंने एक सुन्दर नायका देखी है न उसका नाम जानता हूं न ठांवजो वह मुझे न मिलैगी तो मैं अपनी जान न रक्खूंगा यह मैंने जी में निश्चय बिचाराहै यह अहवाल दीवान का बेटा सुन उसे सवार करवा घर को तो ले आया पर राजा का बेटा बिरह की पीरसे ऐसा बिकल था कि लिखना पढ़ना खाना पीना सोना राज्यकार्य्य सब कुछ तजबैठा नक्शा उसकी सूरत का लिखर देखता और रोता न अपनी

कहता न औरकी सुनता दीवान के बेटे ने यह दशा उसकी जो बिरह से हुई थी जब देखी तो उस्से कहा कि जिसने इश्क की राहमें पैर रक्खा है फिर वह जिया नहींहै और जो जिया तो उसने बहुत दुःख पाया इस वास्ते ज्ञानीलोग इस राहमें पांव नहीं रखते फिर उसकी बात सुन राजकुमार बोला मैंने तो इस पन्थ में पांव दिया इसमें सुखहो या दुःख जब ऐसी दृढ़ बात उसकी सुनी तब वह बोला कि महाराज तुमसे चलते समय कुछ उसने कहा था या तुमने कुछ उस्से कहा शाहज़ादे ने जवाब दिया कि न मैंने कुछ कहा न उस्से कुछ सुना तब दीवान का बेटा बोला उसका मिलना बहुत कठिन है शाहज़ादे ने कहा जो वहमिली तो हमारी जान रही नहीं तो गई फिर उसने पूंछा कुछ इशारा भी किया था या नहीं कुवँर ने कहा जो उसने हरकतें की थीं सो ये हैं कि एकाएक मुझको देख शिरपर से कमल का फूल उतार कानसे लगा दांतसे कतर पांव तले देकर छाती से लगा लिया यह सुन दीवानके बेटे ने कहा कि उसके इशारों को हम समझे और नाम ठाम सब उसका जाना वह बोला जो समझे हो सो बयान करो यह कहनेलगा सुनो राजा कमलका फूल शिर से उतार कान से जो लगाया तो मानो उसने तुमको बताया कि मैं करनाटक की रहनेवाली हूँ और दांतसे जो कतरा सो कहा कि दन्तबाट राजाकी बेटी हूँ और पांवसे जो दबाया सो कहा कि पद्मावती मेरा नामहै और छातीसे जो लगाया सो कहा तुमतो मेरे हृदय में बसेहो जब इतनी बातें कुवँर ने सुनी तो उस्से कहा बेहतर यह है कि मुझे उसके शहरमें लेचलो यह कहतेही कपड़े पहन हथियार बांध कुछ जवाहिर ले घोड़ों पर सवार हो दोनों ने उस तरफ़की राहली कई दिनके बाद

करनाटक देशमें पहुंचे शहर की शैर करते हुये राजाके महलों के नीचेआये तो वहां देखते क्याहैं कि एक बुढ़िया अपने दरवाजे पर बैठीहुई चरखा कातती है ये दोनों घोड़ों से उतर उसके पास जा कहने लगे माई हम मुसाफिर सौदागर हैं माल हमारा पीछे आताहै और हम जगह ढूंढ़ने वास्ते आगे बढ़ आये हैं जो हमें जगह दो तो हमरहैं बुढ़िया उनकी सूरतों को देख और बातों को सुन रहम करके बोली यह घर तुम्हारा है जबतक जी चाहै रहो यह सुन वे मकानमें उतरे तो कितनी एकदेर पीछे बुढ़िया उनके पास आ बैठकर बातें करने लगी इसमें दीवान के बेटने उससे पूछा तेरी आल औलाद और कुनबेमें कौन २ हैं और क्योंकर निर्बाह होती है बुढ़िया ने कहा बेटा मेरा राजा की सेवामें आनन्दपूर्व्वक अच्छी तरहसे रहता है और पद्मावती जो राजकन्या है बन्दी उसकी दुग्ध पिलाईहै इस बुढ़ापे के आनेसे घर में रहतीहूं पर राजा मेरे खानेपीनेकी खबर लेता है परन्तु उस लड़की के देखने को नित्य एक वक्त जातीहूं वहां से आनकर घरमें अपना दुखड़ा कियाकरतीहूं यहबात राजपुत्र ने सुन दिलमें प्रसन्नहो बुढ़िया से कहा कल जिसवक्त जाने-लगे तो एक सँदेशा हमारा भी लेतीजाइयो उसने कहा बेटा कलपर क्याहै अभी मुझसे जोकुछ कहे तो मैं तेरा सँदेशा पहुंचादूं तब उसने कहा तू इतना जाकर कहदे कि ज्येष्ठ सुदी पंचमी को तालावके किनारे जिस राजपुत्रको तुमने देखाथा सो आनपहुँचा है इतनी बातके सुनतेही बुढ़िया लाठी हाथ में लिये राज-मन्दिर को गई वहां जाकरदेखा कि राजकन्या अकेली बैठीहै जब यह सामने पहुँची तो उसने सलाम किया यह आशीषदेकर बोली कि धिया बालकपन में तेरी सेवाकी और दूध पिलाया

अब भगवान्‌ने तुझे बड़ी किया यह जी चाहता है कि तेरी जवानी का सुख देखूं तो मुझेभी चैन होवे। इसी तरहकी बातें प्रीतिसे भरीहुई कर कहने लगी कि ज्येष्ठसुदी पंचमी को तालाब किनारे जिस कुँवरका तूने मनहरलियाहै सो मेरेघरआन कर उतराहै उसने तुझे यह संदेशा दिया है कि जो हमसे बचन कियाथा वह पूरा करो हम आन पहुँचे हैं औरमैं भी यहकहतीहूं कि वह कुंवर तेरेही योग्य है जैसी तू रूपवती है तैसाही वह गुणवन्त है। ये सब बातें सुन वह ख़फ़ाहो हाथों में चन्दन लगाय बुढ़िया के गालों में तमाचा मारा और कहने लगी कम्बख़्त मेरे घरसे निकल यह अप्रसन्नहो उसी तरह से उठती बैठती कुँवर के पास आई और सब वृत्तान्त कहा राजकुमार सुनकर हक्‌बक्कहोगया तब दीवान का बेटा बोला महाराज कुछ शोच न कीजिये यह बात आपके ध्यानमें नहीं आई फिर उसने कहा सच्च है पर तू मुझे समझा कि मेरे जीको चैन होवे उसने कहा जो दशों अंगुलियां चन्दनकी भरकर मुँहपर मारीं तो उसने यह बताया कि दशरोज चांदनी के बीतने पर अँधेरी रातमें मिलूंगी निदान दशरोज़ के बाद बुढ़ियाने उसकी ख़बर फिरजाकही तब उसने केशरसे तीन अँगुलियांभर उसके गालपर मारीं और कहा निकल मेरे घरसे अन्तको बुढ़िया लाचार होकर वहां से चली और जो कुछ ब्योरा था सो सब राजपुत्र से आकर कहा यह सुनतेही राजपुत्र शोचसागर में डूबगया उसकी यह दशा देखकर फिर दीवान के बेटेने कहा अँदेशा न करो इसबात का मुद्दा कुछ और है वह बोला मेरा जी बेचैन है मुझसे जल्दकहो तब उसने कहा वह उसहालमेंहै जो महीने २ औरतों को होता है इस लिये और तीन दिनका

वादा कियाहै चौथे दिन वह तुम्हें बुलावेगी निदान जब तीन दिन होचुके तब बुढ़िया ने जाकर उसकी ओरसे कुशल क्षेम पूछी तब उसने बुढ़िया को अप्रसन्नहो पश्चिम ओर की खिड़की के पास लाकर निकाल दिया फिर यह अहवाल बुढ़िया ने राज-कुँवर से आकर कहा वह सुनकर उदास हुआ इतने में दीवान का पुत्र बोला कि इस बातका ब्योरा यह है कि आजरात के समय तुमको उसी खिड़की की राह बुलाया है यह सुनतेही राजपुत्र अति प्रसन्न हुआ जब वह समय आया तो ऊदे रंग के जोड़े निकाल चुन बना पगड़ी बांध कपड़े पहन हथियार सज राजपुत्र तैयार हुआ इस अरसे में दोपहर रात बीत गई उस समय एक सन्नाकाल था वे भी वहां से सूनमारे चुप-चाप चले आते थे जब खिड़की के पास पहुंचे दीवानका बेटा बाहर खड़ारहा और यह खिड़की के भीतर गया तो देखता क्या है कि राजकन्या भी वहीं खड़ी राह देखती है इतने में इन दोनों की चार आंखें हुईं तब राजकन्या हँसी और खिड़की बन्दकर राजकुमार को साथ ले रंगमहल में गई वहां जाकर कुँवर देखता क्या है कि जगह २ लखलखे रोशन और सहे-लियां रंग रंग की पोशाकें पहने हाथ बांधे अदब से अपने २ रुतबे से खड़ी हैं एकतरफ़ सेज फूलों की बिछी है अपने २ क़रीने से अतरदान पानदान गुलाबपाशें चँगेरे चौघरे सजे हुये धरे हैं और एकतरफ़ चोवा चन्दन अरगजा कस्तूरी केशर कटोरियों में भराहुआ धरा है कहीं अच्छी २ माजूनों की रंगीन डिबियां चुनी हैं कहीं भांति २ के पकवान धरे हैं सम्पूर्ण दर और दीवार चित्रों से सँवारा है और उनपर ऐसीसूरतें बनी हुई हैं कि हर एक देखतेही मोहित होजावे निदान सारे ऐश व आराम के

साज व सामान वहांपर वर्त्तमान थे अजब समय का आलाम है कि जिसका कुछ बयान नहीं होसक्ता उसी मकान में रानी पद्मावती ने राजकुँवर को लेजा बिठलाया और पांव धुलवा चन्दन बदन में लगा फूलों के हार पहना गुलाब छिड़क पंखा अपने हाथ से झलने लगी इसमें कुँवर बोला हम तुम्हारे देखने सेही ठंढे हुये इतनी मेहनत क्यों करती हो तुम्हारे ये कोमल २ हाथ पंखे के लायक़ नहीं पंखा हमैं दो तुम बैठो पद्मावती बोली कि महाराज आप बड़ी मेहनत करके हमारे वास्ते आये हैं हमैं आपकी सेवा करनी उचित है तब एक सहेली ने रानीके हाथ से पंखा लेकर कहा यह हमारा काम है हम सेवा करैं और तुम आपस में आनन्द करो फिर वे वहां पान खाने और प्यार की बातें करने लगे इतने में भोर हुआ राजकन्या ने उसे छिपारक्खा जब रातहुई तो फिर आपस में आनन्द होने लगा इसी तरह से कितने एकदिन बीतगये राजकुँवर जब जाने का इरादा करे तब राजकन्या जाने न दे इसी तरह से एकमहीना बीतगया तब तो राजा बहुत घबराया और चिंता-युक्त हुआ एकदिन की बात यह है कि रातके समय अकेला बैठाहुआ यह जीमें चिंता करता था कि देशराज्यपाट घर सब तो छुटाही था पर एक ऐसा मित्र हमारा कि जिसके कारण से यह सुख पाया उससे भी महीने भर से मुलाक़ात नहीं हुई वह अपने जीमें क्या कहता होगा और क्या जानिये उस पर कैसी बीतती होगी इसी शोच में बैठा हुआ था कि इतने में राजकन्या भी आन पहुंची और उसकी यह दशा देखकर पूछने लगी महाराज तुम्हें क्यादुःख है जोतुम ऐसे उदास बैठेहो मुझसे कहो तब वह बोला कि एक मित्र हमारा बहुत

प्यारा दीवान का बेटा है उसका कुछ अहवाल महीने भरसे मालूम नहीं हुआ वह ऐसाचतुर पण्डित मित्रहै कि उसीके गुणों से मैंने तुझेपाया और उसीने तेरा सब भेद बताया यह सुन राजकन्या बोली महाराज तुम्हारा चित्ततो वहां है तुम यहां सुख क्या करोगे इससे बेहतर यहहै कि मैं पकवान मिठाई सब कुछ तैयार करके भिजवातीहूं आपभी सिधारिये उसको खिला पिला बहुत ढाढ़सकर फिर आइये यह सुनतेही राजकुँवर वहां से उठकर बाहर आया और रानीने बिष मिलवा तरह तरहकी मिठाई बनवाकर भिजवाई कुवँर मंत्रीके पास जाकर बैठाहीथा कि इतने में वह मिठाई आन पहुंची प्रधानके बेटेने पूंछा महाराज यह मिठाई किस तरह से आई राजपुत्र बोला मैं वहां तेरी चिन्ता में उदास बैठा था कि रानी ने आकर मेरी तरफ़ देखकर पूछा उदास क्यों बैठोहो कुछ सबब उसका बताओ तो मैंने तेरे भेद चतुराई के सब उससे बयान किये तब यह अहवाल सुनके उसने मुझे तेरे पास आने की आज्ञादी और यह तेरे वास्ते मिठाई भिजवाई है जो तू इसे खायगा तो मेराभी जी प्रसन्न होगा तब प्रधान का बेटा बोला तुम मेरे वास्ते ज़हर लाये इसीमें कुशल हुई कि आपने नहीं खाई महाराज एक बात मेरी सुनिये कि रण्डी अपने दोस्त के दोस्तको नहीं चाहती आपने यह अच्छा न किया जो मेरा नाम वहां लिया यह बात सुन कुवँर बोला ऐसी बात तुम कहते हो जो कभी किसीसे न हो यदि आदमी आदमी से न डरे पर भगवान्‌से डरेगा इतनाकह उसने उसमें से एक लड्डू कुत्तेके आगे डाल दिया ज्योंहीं कुत्तेने खाया त्योंहीं चटपटाके मरगया यह दशा देख राजपुत्र अपने जीमें क्रोधितहो कहने लगा ऐसी रंडीसे मिलना उचित

नहीं आज तक तो मेरे दिलमें उसकी प्रीति थी पर अब मालूम हुआ यह सुन दीवान का बेटा बोला महाराज जो हुआ सो हुआ अब वह बात किया चाहिये जिससे उसको अपने घर ले चलिये राजपुत्र बोला भाई यह भी तुम्हीं से होगा दीवान के बेटेने कहा कि आज एक काम कीजिये फिर पद्मावतीके पास जाइये और जोमैं कहूं सो कीजिये पहिले तो जाकर उसे बहुतसा प्यार करो जब वह सोजावे तब उसका गहना उतार यह त्रिशूल उसकी बाईं जांघमें मार वहांसे तुरंत चले आवो यह सुन राजकुँवर रातको पद्मावती के पास गया और बहुतसी मित्रता की बातें कर दोनों मिलकर सो रहे परन्तु मनसे यहविचार कर रहाथा जब राजकन्या सो गई तो उसने सारा गहना उतार लिया और बाईं जांघ में त्रिशूल मार अपने मकान को चलाअया और सारा अहवाल प्रधान के बेटे से बयान कर सब गहना उसके आगे रख दिया फिर वह ज़ेवर उठा राजकुमार को साथले योगी का बेषबना एक श्मशान में जा बैठा आपतो गुरूबना और उसे चेला ठहरा कर उस्से कहा तू बाज़ार में जाकर इस गहने को बेंच यदि कोई इसमें तुझे पकड़ेतो उसे मेरेपास ले आना उस की बातसुन राजपुत्र ज़ेवर को ले शहर में जा राजाकी ड्योढ़ी के निकट एकसुनार को दिखाया उसने देखतेही पहिचानकर कहा राजकन्याका गहना है सचकह तूने कहां पाया यह उस्से कहरहाथा कि दशबीस आदमी और भी इकट्ठे होगये निदान कोतवाल ने यह ख़बरसुन आदमी भेज राजकुमार और सुनार को ज़ेवर समेत पकड़वा मँगाया और उस ज़ेवर को देख उससे पूंछा कि सचकह यह तूने कहां से पाया जब उसने कहा मुझको गुरूने बेंचनेको दियाहै पर मुझे मालूमनहीं कि वे कहां

से लाये तब कोतवाल ने उसके गुरूको भी पकड़वा मँगाया और दोनों को ज़ेवर समेत राजाके निकटलाकर तमाम अहवाल अर्ज़किया यहमाजरा सुनके राजा योगीसे पूछने लगा कि नाथजी यह गहना तुमने कहां से पाया योगी बोला महाराज काली चौदश की रातको मैं मरघट में डाकिनी मंत्र सिद्ध करने को गया था जब वह डाकिनी आई तो मैंने उसका ज़ेवर उतार लिया और उसकी बाईं जांघमें त्रिशूलका निशान करदिया इसतरह से यहगहना मेरे हाथ आया है यहबात राजा योगी से सुन महलमें गया और योगी आसन पर बैठा राजाने रानी से कहा कि तू पद्मावती की बाईं जांघ में देख तो निशान है कि नहीं और कैसा निशानहै रानीने जाकर देखा तो त्रिशूल का दाग़ है राजासे आकर कहा महाराज तीन निशान बराबर हैं पर ऐसा मालूम होताहै कि मानों किसीने त्रिशूल मारा है यह बात सुन राजा बाहरआ कोतवाल को बुलाकर कहा जावो योगी को लेआवो कोतवाल आज्ञापातेही योगी के लेनेको गया और राजा अपनेजी में चिंताकर कहने लगा कि अहवाल घरका व दिलका इरादा और जो कुछ नुक्सान हो सो किसीके आगे प्रकट करना मुनासिब नहीं कि इतने में कोतवाल ने योगी को ला हाजिर किया फिर योगीको राजा ने किनारेलेजा पूछा गुसाईंजी धर्मशास्त्रमें स्त्रीकेवास्ते क्या दंड लिखाहै तब योगी बोला महाराज ब्राह्मण गौ स्त्री लड़का और जो कोई अपने आसरे में हो यदि उसमें जिस किसीसे कुछ खोटा कामहो तो उनके वास्ते यह दंड लिखाहै कि देश निकालादीजिये यह सुनके राजाने पद्मावती को डोली में सवारकरवा एक जंगलमें छुड़वादिया फिर अपने

मुक़ाम से राजकुमार और दीवान का बेटा दोनों घोड़ों पर सवार हो उसबनमें जा रानी पद्मावतीको साथले अपने शहर को चले थोड़े दिनों के बाद अपने बापके पासजा पहुंचे सब छोटे बड़ों की बड़ी प्रसन्नता हुई और ये आपसमें आनन्द भोगने लगे इतनी बात कह बैताल ने राजा बीर बिक्रमादित्य से पूछा कि उन चारों में पाप किसको हुआ जो तुम इसबातका न्याय न करोगे तो नरक में पड़ो गे राजा बिक्रम बोला कि राजा को पाप हुआ बैताल ने कहा राजाको किसतरह पापहुआ बिक्रम ने यह उसे जवाबदिया कि दीवानके बेटेने तो अपने स्वामीका कामकिया और कोतवालने राजाका हुक्म माना और राजकुमारने अपना मनोर्थ हासिल किया इससे यह पाप राजाको हुवा कि बिना बिचारे उसे देशनिकाला दिया इतनी बात राजा के मुखसे सुन बैताल उसी बृक्षपर जा लटका ॥ १ ॥

दूसरी कहानी ॥

राजा ने जो देखा कि बैताल नहीं है तो फिर उलटा फिरा और उस जगह पहुँच बृक्ष पर चढ़ उस मुर्दे को बांध कन्धे पर रखके लेचला तब बैताल बोला कि राजा दूसरी कथा यों है कि यमुना के तीर धर्म्मस्थान नाम एक नगर है कि जहां का गुणाधिप नाम राजा और वहां केशव नाम ब्राह्मण था वह यमुनाके किनारे जप तप किया करता था और उसकी बेटी का नाम मधुमालती था वह बड़ी सुन्दर थी जब ब्याह योग्य हुई तब उसके माता पिता भाई तीनों उसके ब्याहके बिचार में थे संयोगबश एक दिन उसका बाप किसी एक यजमानके साथ ब्याहमें कहीं गयाथा और भाई उसका एकदिन गांव में गुरू के यहां पढ़नेगया पीछेसे उसके घर एक ब्राह्मणका लड़का आया

उसकी माताने उस लड़के का गुण रूप देखकर कहा मैं अपनी लड़की का ब्याह तुझसे करूंगी और उस ब्राह्मणने एक ब्राह्मण के बेटेको बेटी देनी अङ्गीकार की और उसके बेटे ने जहां पढ़ने गयाथा वहां एक ब्राह्मणसे बचन हारा कि अपनी बहिन तुझे दूंगा कितने दिनोंके पीछे वे दोनों उन दोनों लड़कों को साथ लेआये और यहां तीसरा लड़का आगेसे बैठा था एक का नाम त्रिबिक्रम दूसरे का नाम बामन तीसरे का नाम मधुसूदन था तीनों रूप गुण विद्या बयस में बराबरथे उनको देख ब्राह्मण चिंता करनेलगा कि एक कन्या तीन बर किसे दूं और हम तीनों ने तीनोंसे वचन हारे हैं अजब तरहकी बात आनपड़ी क्या कीजिये इस शोचमें बैठा था कि इतनेमें उस लड़की को सांप ने डसा वह मरगई यह खबर सुनके उसका बाप भाई वो तीनों लड़के पांचों मिलकर बड़ी दौड़ धूपकर गुणी गारुड़ जितने मंत्र विषके झाड़नेवाले थे उन सबको लाये उन सबों ने उस लड़की को देखकर कहा यह जीने की नहीं यह सुन पहिला यों बोला कि पञ्चमी छठ अष्टमी नवमी चौदश इन तिथियों में सांपका काटा आदमी जीता नहीं दूसरा बोला शनीचर मङ्गलबारका डसाहुआ भी जीता नहीं तीसरा बोला रोहिणी मघा श्लेषा बिशाखा मूल कृत्तिका इन नक्षत्रों का बिष चढ़ाहुआ उतरता नहीं चौथा बोला इन्द्री अधर कपोल गला कोख नाभी इन अङ्गोंका काटाहुआ बचता नहीं पांचवां बोला इसको ब्रह्मा भी जिला नहीं सक्ता हम किस गिन्तीमें हैं अब आप इसकी गति कीजिये हम बिदा होतेहैं यह कहकर गुणीतो चलेगये और ब्राह्मण उस मुर्देको लेजा मशान में फूंक आपतो चलागया फिर उसके पीछे उन तीनों लड़कों ने यह किया कि एकतो उनमेंसे उसकी

जलीहुई हड्डियों को चुन बांधकर फ़क़ीर हो बन बन की ओर को गया दूसरे ने उसकी राख की गठरी बांध वहीं झोंपड़ी बना रहने लगा तीसरा योगी हो झोरी कंथा ले देश २ फिरने लगा एक दिन किसी देश में एक ब्राह्मण के घर भोजन के लिये गया वह गृहस्थ ब्राह्मण उसे देखकर कहने लगा अच्छा आज यहां भोजन कीजिये यह सुनके वहां बैठगया जिस समय रसोई तैयारहुई वह ब्राह्मण उसके हाथ पांव धुला के चौकेमें बिठा आप भी उसके पास बैठगया और उसकी ब्राह्मणी परोसने को गई कुछपरोस हुई कुछ परोसना बाक़ी था कि इतने में उसके छोटे लड़के ने रोकर अपनी माका आंचल पकड़ा वह छुटाती थी और लकड़ा न छोड़ता था और ज्यों ज्यों यह भुलाती थी वह दूना दूना रोता और हठ करता था इसमें उस ब्राह्मणी ने अप्रसन्न हो लड़के को जलते चूल्हे में उठाकर फेंक दिया वह लड़का जलकर राख होगया यह अहवाल जब उस ब्राह्मण ने देखातो बिना खाये उठखड़ा हुआ तब वह घर वाला बोला कि तू किस वास्ते भोजन नहीं करता वह बोला कि जिसके घरमें ऐसा राक्षसी काम हो उसके घरमें किस तरह से कोई भोजन करे यह सुन वहगृहस्थ उठकर एक ओर अपने घरमें गया और संजीवनी विद्या की पोथी ला उसमें से एक मंत्र निकाल जप-कर लड़के को जिला दिया तब वह ब्राह्मण यह अद्भुत चरित्र देख अपने जीमें चिन्ता करने लगा जो यह पोथी मेरे हाथ लगे तो मैं भी अपनी प्यारी को जिलाऊं यह अपने मननें ठान रसोई खा वहीं रहा जब रात हुई तो कितनी एक देरके पीछे सबने ब्यालू की और अपनी २ जगह जा लेटे इधर उधर की आपस में बातें करते थे यह ब्राह्मण भी एकतरफ़ जाकर पड़रही

परन्तु पड़ा पड़ा जागता था जब उसने जाना कि बड़ीरात गई और सब सोगये तब चुपका उठ धीरे २ उसके घरमें पैठ वह पोथी ले चलदिया और कितने दिनों में जिस मशान में कि उस ब्राह्मण की बेटी को जलाया था वहां आन पहुंचा और उन दोनों ब्राह्मणों को वहीं पाया कि आपस में बैठे हुये बातें करते हैं उन दोनों ने भी उसे पहिंचान उसके पास आय मुलाकात की और पूंछा कि भाई तुम देश बिदेश तो फिरे पर यह कहो कोई बिद्या भी सीखी वह बोला मैंने मृत्यु संजीवनी बिद्या सीखी है यह सुनतेही वे बोले जो सीखी हो तौ हमारी प्यारी को जिलाओ उसने कहा राख हाड़ का ढेर करो तौ जिलादूं उन्होंने राख हड्डियां इकट्ठी करदीं तब उसने पोथी में से एक मंत्र निकाल जपा वह कन्या जी उठी फिर उन तीनों को कामदेवने ऐसा अन्धा किया कि आपस में झगड़ने लगे इतनी बात कहकर बैताल बोला ऐ राजा! यह बता कि वह स्त्री किसकी हुई राजा बिक्रम बोला कि जो मढ़ी बांधकर रहा था वह स्त्री उसी की हुई बैताल बोला जो वह हाड़ न रखता तो वह किसतरह जीती और दूसरा बिद्या न सीख आता तो वह क्योंकर उसे जिलाता राजा ने जबाब दिया कि जिसने उसकी हड्डियां रक्खी थीं वह तो उसके बेटे की जगह हुआ और जिसने जी दान दिया वह मानों उसका बाप हुआ इससे वह जोरू उसी की हुई कि जो राख समेत झोपड़ी बांध वहां रहा यह जबाब सुनके बैताल फिर उसी बृक्ष में जालटका राजा भी उसीके पीछे जापहुंचा और उसे बांध कांधे पर रख फिर ले चला ॥ २ ॥

तीसरी कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा! बर्द्धमान नाम एक नगर है उसमें

रूपसेन नाम एक राजा था एक दिन का संयोग है कि वह राजा अपनी ड्योढ़ी के निकट किसी मकानमें बैठा था कि दरवाजे के बाहर से कुछ ऊपरी लोगों की आवाज आने लगी राजा बोला कि दरवाजे पर कौन है और क्या होरहा है इसमें दरवान ने जवाब दिया महाराज आपने यह भली बात पूंछी दौलतमन्द की ड्योढ़ी जान धनके लिये बहुतेरे आदमी आन बैठते हैं और भांति२ की बातें करते हैं उन्हीं लोगों का यह शोर है यह सुन राजा चुप होरहा इतने में एक मुसाफिर दक्षिण दिशासे बीरबरनाम राजपूत चाकरी करने की आश किये राजा की ड्योढ़ी पर आया दरवानने उसका बृत्तान्त मालूम करके राजा से कहा महाराज एक मनुष्य हथियार बन्द चाकरी करने के आसरे पर आया है सो दरवाजे पर खड़ाहै महाराज की आज्ञा पाये तो वह सम्मुख आये यह सुन राजा ने आज्ञा दी कि ले आ यह उसे जाकर ले आया तब राजाने पूछा ऐराजपूत तेरेतईं रोज खर्च को क्या करदूं यह सुनके बीरबर बोला हजार तोले सोना मुझे रोज दो तोमेरी गुजरहो राजा ने पूंछा तुम्हारे साथ लोग कितने हैं उसने कहा एक स्त्री दूसरा बेटा तीसरीबेटी चौथा मैं पांचवां हमारे साथ कोई नहीं उसकी यहबात सुन राजा करि सभाके लोग सब मुंह फेर फेर हँसने लगे पर राजा अपने जीमें शोच करने लगा कि बहुत धन इसने किस वास्ते मांगा फिर आपही अपने मनमें समझा कि बहुत धन दिया हुआ किसी दिन सुफल होगा यह बिचार करके राजा ने भंडारी को बुलाकर कहा हमारे खजाने से हजार तोले सोना इसबीरबर के तईं रोज दियाकरो यह परवानगी सुन बीरबरने हजार तोले सोना उस दिनका ले अपनी जगहला दोहिस्साकर आधा तो ब्राह्मणों को बांटा और

आधेके फिर दो भागकर एकभाग उसमेंसे अतिथि बैरागी वैष्णव सन्यासियों को बांटदिया और बाकी जो एक हिस्सारहा उसका खाना पकवा गरीबों को खिला दिया बाकी जो कुछ रहा वह आप खाया इसी तरहसे नित्य स्त्री पुत्रों समेत अपनी गुजरान करता था परन्तु संध्या के समय रोज ढाल तलवार ले राजा के पलँग की चौकी में जा हाजिर रहता और राजा जब सोते से चौंककर पुकारता कि कोई हाज़िर है तो यही जबाब देता कि बीरबर हाज़िर है जो हुक्म इसी तरह राजा जब पुकारता तो यही जबाब देता और जो आज्ञा राजा की होती सो यही बजा लाता इसी तरह धन के लालच से रातभर सचेत रहता बल्कि खाते पीते सोते जागते उठते बैठते चलते फिरते आठपहर अपने मालिक की याद में रहता रीति यह है कि कोई किसी को बेचता है तो बिकता है पर चकरिया चाकरी करके अपने तईं आप बेचता है और जब बिका तो ताबेदार हुआ जो परबश हुआ तो उसे सुख कहां मशहूर है कि कैसाही चतुर बुद्धिमान् पण्डित हो परन्तु जिस समय अपने मालिक के सामने होता है तो डरके मारे गूंगे के बराबर चुप हो रहता है जबतक स्वतंत्रहै चैनमें है इसीवास्ते पण्डितलोग कहते हैं कि सेवा धर्म करना योगधर्मसे भी कठिनहै एक दिनका वृत्तान्त है कि संयोगवश रातके समय मरघट से स्त्री के रोनेका शब्द आया राजा सुनके पुकारा कोई हाज़िर है बीरबर सुनतेही बोला हाज़िर जो आज्ञा फिर राजा ने यों हुक्म किया कि जहांसे स्त्री के रोने की आवाज़ आती है वहां जाओ और उससे रोनेका कारण पूछकर जल्द आवो राजा यह उसे आज्ञादे मनमें कहने लगा कि जिस किसी को चाकर अपना अंजमाना हो तो बेवक्त उसे

कामको कहे यदि वह हुक्म उसका बजा लावै तो जानिये काम का है और जो तकरार करै तो जानिये नकारा है और इसीतरह से भाइयों को मित्रोंको बुरे समयमें परखिये और स्त्री को निर्धनता में जांचिये निदान बीरबर यह हुक्म पाकर उसके रोने के आवाज़ की धुनिपर चला और राजा भी उसका साहस देखने के लिये कालेक्कपड़े पहनकर पीछे पीछे छिपा हुआ चला इतने में बीरबर जा पहुंचा उस मरघट में जहां स्त्री रोती थी तो देखता क्या है कि एक स्त्री अति सुंदर शिर से पांव तक गहने से लदी हुई ढाढ़ें मार मार रोरही है कभी नाचती है कभी कूदती कभी दौड़तीहै आंखोंमें आंशू एकनहीं परंतु शिर पीट पीट हाय२ कर पृथ्वीपर पटकनियां खाती है उसका यह अहवाल देख बीरबरने पूछा तू क्यों इतना रोती पीटती है तू कौन है और तुझ पर क्या दुःखहै तब वह बोली कि मैं राजलक्ष्मी हूं बीरबर ने कहा तू किस कारण रोती है फिर उस ने अपनी व्यवस्था बीरबर से कहनी प्रारम्भकी कि राजा के घर में शूद्रकर्म होता है तिससे उसके घरमें अलक्ष्मी आवैगी और मैं उसके घरसे जाऊंगी एक महीने के पीछे राजा निपट दुःख पाके मरजावैगा इसदुःखसे रोती हूं और मैंने उसके घरमें बहुत सुख किया है इसवास्ते पछताती हूं और यह बात किसी तरह से न झूंठ होवैगी फिर बीरबर ने पूछा उसका कुछ ऐसा भी उपाय है कि जिस से राजा बचे और सौ बर्ष जीवे वह बोली यहां से पूर्व ओर एक योजन पर देवी का मन्दिरहै जो तू उस देवी को अपने बेटे का शिर हाथसे काटकर दे तो राजा सौ बर्ष इसी तरह से राज्य करे और किसी तरह का दुःख राजाको न होय यह बात सुनतेही बीरबर अपने घरको चला और राजा भी उसके पीछे हो लिया जब वह

घरमें आया तो अपनी स्त्री को जगा कर सब वृत्तान्त कहा उसने यह अहवाल सुन जगाया तो बेटेको पर बेटी भी जागी तब उस स्त्रीने लड़के से कहा कि बेटातुम्हारे शिरदेने से राजाका जी बचता है और राज्य भी स्थित रहता है यह सुन वह बालक बोला माता एकतो आपकी आज्ञा दूसरे स्वामी का कार्य तीसरे यहदेह देवता के काम आवै तो इस से अच्छी कोई बात दुनियां में नहींहै मेरे निकट अब इस काममें देर करनी उचित नहीं है मसल है कि पुत्रहोवै तौ अपने बशका और काया नीरोग विद्यासे लाभ मित्र चतुर नारी आज्ञाकारी जो ये पांच बातें आदमी को मवस्सर हों तौ सुख की देनेवाली और दुःखकी दूरकरने वाली हैं यदि चाकर बेमन का और राजा कृपण मित्र कपटी और स्त्री जो आज्ञा न मानती हो तो ये चारबातें आराम की दूरकरने वाली और दुःखकी देनेवाली हैं फिर बीरबर अपनी स्त्रीसे कहने लगा जो तू प्रसन्नता से अपने लड़के को दे तो मैं लेजाऊं राजा के लिये देवी के आगे बलिदूं वह बोली कि मुझे बेटा बेटी भाई बन्धु मा बाप किसी से कुछ काम नहीं मेरी गति तुम्हीं से है और धर्म शास्त्रमें भी यही लिखा है कि स्त्री न दान न व्रतसे शुद्ध होती है लँगड़ा लूला गूँगा बहिरा अंधा काना कोढ़ी कुबड़ा कैसाही उसका स्वामी हो उसको उसी की सेवा करने से धर्महै यदि किसी तरहका दुनियां में धर्म कर्म करै और पतिकी आज्ञा न माने तो नरक में पड़े फिर उसका बेटा बोला पिता जिस आदमी से स्वामी का काम होवे जगमें उसी का जीना सुफल है और इसमें दोनों जहान में भला है फिर उसकी बेटी बोली जो माता बिष देवे लड़की को, बाप बेंचे पूत को और राजा ले सर्वस्व छिनाय तो पनाह किसकी लेवे निदान चारों

आपस में बिचार करके देवी के मन्दिर को गये राजा भी छिपकर उनके पीछे चला जब बीरबर वहां पहुँचा तो मन्दिर में जा देवी की पूजाकर हाथ जोड़ कहने लगा हे देवी! मेरे पुत्र के बलिदेने से राजा की सौ वर्ष की उमर होवे इतना कह खांड़ा ऐसा मारा कि लड़के का शिर पृथ्वी पर गिरपड़ा भाई का मरना देख उस लड़की ने अपने गले में एक खड्गमारा तो रुंडमुंड जुदे होकर गिरपड़े बेटा बेटी को मरादेख बीरबर की स्त्री ने तलवार अपनी गर्दनपर मारी कि धड़से शिर जुदा होगया फिर उन तीनोंका मरना देख बीरबर अपने मनमें चिन्ता कर कहने लगा कि जब लड़केही मरगये तो नौकरी किसके वास्ते करूंगा और सोना राजा से ले किसेदूंगा यह शोचकर एकखड्ग ऐसा अपनी गर्दनपर मारा कि तनसे शिर जुदा होगया फिर उनचारों का मरना देख राजाने अपने मनमें कहा कि मेरेवास्ते इसके कुटुंबकी जान गई अब ऐसा राज्य करने को धिक्कार है कि जिस राज्यके लिये एकका सर्वनाश होवे और एक राज्य करै ऐसा करना धर्म नहीं है यह बिचारकर राजाने चाहा कि खांड़ा मारमरूं इतने में देवीने आन के हाथ पकड़ा और कहा कि पुत्र मैं तेरे साहस पर प्रसन्न हुई जो तू मुझसे बर मांगे सो मैं दूं राजाने कहा माता जो तू प्रसन्न हुई है तो इन चारों को जिलादे देवीने कहा यही होवेगा और यह कहतेही भवानी ने पाताल से अमृत ला चारोंको जिलादिया उसके पीछे राजा ने आधा राज्य अपना बीरबर को बांट दिया इतनी बात कह बैताल बोला धन्यहै उस सेवक को कि जिसने स्वामी के लिये अपने जीव और कुटुम्ब का मोह न किया और धन्य है उस राजा को कि जिसने राज्य और अपने जीवका कुछ लालच न

किया ऐ राजा ! मैं तुझसे यह पूछता हूं उनचारों में किसका सत सरस हुआ तब राजा बिक्रमादित्य बोला कि राजा का सत अधिक हुआ बैताल बोला किस कारण तब राजाने जवाब दिया कि स्वामी के वास्ते चाकर को जी देना उचित है क्यों कि उसका यही धर्म है लेकिन राजाने जो चाकर के लिये राजपाट छोड़ जानको तिनुके के बराबर जाना इस कारण से राजा का सत सिवाय हुआ इतनीबात सुन बैताल फिर उसी श्मशान के वृक्ष में जा लटका ॥ ३ ॥

चौथीकहानी ॥

राजा वहां जा फिर बैताल को बांधकर लेचला तब बैताल बोला कि ऐ राजा ! भोगवती नाम एक नगरी है वहां का राजा रूपसेन और चूड़ामणि नाम एक तोता उसके पास है एकदिन उस तोते से राजा ने पूछा तू क्या२ जानता है तब सुवा बोला कि महाराज ! मैं सब कुछ जानता हूं राजा ने कहा जो तू जानता है तो बतला कि मेरे समान नायका कहां है तब उस तोते ने कहा महाराज मगध देशमें मगधेश्वर नाम राजा है और उस की बेटीका नाम चन्द्रावती है तुम्हारा ब्याह उसके साथ होवेगा वह अतिसुन्दरी है और बड़ी पंडिता है राजा ने उस तोते से यह बात सुनकर एक चंद्रकांति नाम ज्योतिषी को बुलाकर पूछाकि हमारा ब्याह किस कन्यासे होवेगा उसने भी अपने ज्योतिष की विद्यासे मालूम करके कहा चन्द्रावती नाम एक कन्या है उसके साथ तुम्हारा ब्याह होवेगा यहबात राजा ने सुन एक ब्राह्मण को बुलवा सबकुछ समझा राजा मगधेश्वर के पास भेजने को कहा और यहकहा यदि हमारे ब्याहकी बात

पक्षीकर आओगे तो हम तुम्हें प्रसन्नकरैंगे यह बात सुन ब्राह्मण बिदाहो चला और वहां मगधेश्वर राजाकी बेटीके पास एक मैना थी उस का नाम मदनमंजरी था इसी तरह से उसराज कन्या ने भी एक दिन मदन मंजरी से पूछा कि मेरेसमान पति कहां है तब शारिका बोली भोगवती नगरीका राजा रूप- सेन है सो तेरा पतिहोगा निदान अनदेखे एक पर एक मोहित हुआथा थोड़े दिनों पीछे वह ब्राह्मण भी वहां जापहुंचा और उस राजा से अपने राजा का सँदेशा कहा उसनेभी उसकी बात मानी और अपना एक ब्राह्मण बुलवा उसे टीका और रसूम की चीजें सौंप उसीब्राह्मण के साथ भेजा और यह कह दिया कि तुम हमारी ओर से जाकर बिनती राजा को तिलक देके जल्दी चले आओ जब तुम आओगे तब हम ब्याह की तैयारी करैंगे निदान ये दोनों ब्राह्मण वहांसे चले कितने एक दिनों में राजा रूपसेन के पास आन पहुंचे और सब वृत्तांत वहां का कहा यह सुन राजा प्रसन्नहो सब तैयारी कर ब्याह करने को चला थोड़े दिनोंके पीछे उसदेशमें पहुंच ब्याहकर दान दहेज ले राजा से बिदा हो अपने देशको चला राज कन्या ने भी चलते समय मदनमंजरी का पिंजरा साथ लेलिया कितने एक दिनों के पीछे अपने देशमें आन पहुंचे और सुखसे अपने मंदिर में रहने लगे एक दिन की बात है कि दोनों पिंजरे तोते मैना के गद्दी के पास धरे हुये थे तो राजा रानी आपस में कहने लगे कि अकेले रहने से किसीका दिन नहीं कटता इससे उचित है कि तोते मैनाका आपस में ब्याहकर दोनों को एक पिंजरे में रखिये तो ये भी सुखसे रहैं आपस में इसतौर की बातें कर एक बड़ा सा पिंजरा मँगवा दोनो को उसमें रक्खा थोड़े दिनों

के बाद राजा रानी आपस में बैठ कुछ बातें करते थे कि तोता मैना से कहने लगा कि दुनियांमें भोग करना मुख्य है और जिस ने जगत् में पैदा होके भोग नहीं किया उसका जन्म बृथा गया इससे तू मुझे भोग करने दे यह सुनके शारिका बोली मुझे पुरुष की इच्छा नहीं तब उसने पूछा किस लिये मैना बोली पुरुष पापी अधर्मी दगाबाज स्त्रीहत्या करने वाले होते हैं यह सुनके तोतेने कहा कि नारी भी दगाबाज झूंठी मूर्ख लालची हत्यारी होती हैं जब इसतरह से दोनों झगड़ने लगे तो राजाने पूछा तुम किसवास्ते आपसमें झगड़ते हो मैना बोली महाराज पुरुष पापी स्त्रीघातक होते हैं इस वास्ते मुझे पुरुष की चाह नहीं महाराज मैं एकबात कहती हूं आप सुनिये कि मर्द ऐसे होते हैं इलापुर नाम एक नगर था वहां महाधन नाम एक सेठ रहता था उसके संतान न होती थी वह इस वास्ते हमेशः तीर्थव्रत करता और नित्य पुराण सुनता ब्राह्मणों को बहुतसा दान दिया करता था कितने एक दिनों में भगवान् की इच्छा से उस शाह के एक लड़का पैदा हुआ उसने बड़ी धूम से उसका ब्याह किया और ब्राह्मणों और भाटों को बहुतसा दान दिया और भूखे प्यासे कंगालों को भी बहुत कुछदिया जब वह बालक पांचबर्ष का हुआ तो उसे पढ़नेको बिठाया वह यहांसे तो पढ़नेको जाता और वहां जाकर लड़कों में जुआ खेला करता थोड़े दिनों के बाद वह शाह मरगया और यह स्वतंत्रहो दिन को तो जुआ खेला करता और रातको बेश्यागमन इसी तरह से कई वर्ष में अपना साराधन खो लाचार हो देशसे निकल खराब होता हुआ चन्द्रपुर नगर में जा पहुँचा वहां हेमगुप्त नाम साहूकारथा उसके बहुत दौलत

थी यह उसके पासगया और अपने बापका नाम निशान बताया वह सुनतेही प्रसन्नहुआ उससे उठकर मिला और पूछा तुम्हारा आना क्योंकर हुआ तब यह बोला कि मैं जहाज़ ले एक द्वीप में सौदागरी को गयाथा और वहां जा उस मालको बेच और मालकी भरतीकर जहाज़ ले अपने देशको चला अचानक एक ऐसा तूफ़ान आया कि जहाज़ तबाह होगया और मैं एकतख्तेपर बैठा रहगया सो बहता २ यहां तक आन पहुंचाहूं परन्तु लज्जा आती है कि माल द्रव्य तो सब जातारहा अबमैं इसदशासे अपने शहरके लोगोंको क्यामुँह जाकर दिखाऊँ निदान जब इसी तरहकी बातैं इसने उसके आगेकीं तब वहभी मनमें बिचारने लगा कि मेरा फिक्र भगवान् ने घरबैठेही मिटा दिया और ऐसा संयोग भगवान्हीकी कृपासे बनपड़ताहै अब देर करनी मुनासिब नहीं सब से उचित यह है कि कन्याके हाथ पीले कर दीजिये जो कुछ इस समयहो सो उत्तम है और कल्ह की किसे खबर है ऐसा कुछ अपने जीमें मनसूबा बांध सिठानी के पास आ कहनेलगा कि एक सेठका लड़का आया है जो तुम कहो तो रत्नावतीका ब्याह उससे करदें वहभी सुन प्रसन्न हो बोली कि शाहजी ऐसा संयोग जब भगवान बनाता है तब बनताहै क्योंकि घर बैठे मनकी कामना पूरी हुई इससे उचित यह है कि देर मत करो और जल्द पुरोहित को बुलवा लग्न सुधवाय ब्याह करदो तब उस सेठने ब्राह्मणको बुलवा शुभ लग्न मुहूर्त ठहराय कन्यादानकर बहुतसा दहेज दिया जब ब्याह होचुका तो वहां आनन्दसे रहने लगे फिर कितनें एक दिनोंके पीछे शाहकी बेटी से उसने कहा हमैं तुम्हारे देश में आये हुये बहुत दिनहुये और अपने घरबारकी कुछ खबरनहीं पाई इसमें

चित हमारा बहुत उदास रहताहै हमने सब वृत्तान्तअपना तुझसे कहा अब तुम्हें यह चाहिये कि अपनी मासे इस तरह समझा कर कहो कि वे राजीहो हमें बिदा करें तो हम अपने शहर को जावें तुम्हारी इच्छा हो तुम भी चलो तब उसने अपनी मासे कहा कि बालम अपने देश को बिदाहुआ चाहते हैं अब तुम भी वह करो कि जिसमें उनके जीको दुःख न होवे सिठानी ने अपने स्वामी के पास जाकर कहा तुम्हारा दामाद अपने घर जाने की बिदा मांगता है यह सुनकर शाह बोला अच्छा बिदा कर देंगे क्योंकि बिराने पूत पर कुछ अपना बश नहीं चलता जिसमें उसकी प्रसन्नता होगी वही हम करेंगे यह कह अपनी बेटी को बुलाकर पूछा तुम अपनी बात कहो सुसराल जाओगी या नैहरमें रहोगी इसमें लड़की ने लज्जा करके जवाब न दिया उलटी फिर आई और अपने पतिसे आनके कहा हमारे माता पिता कहचुके हैं कि जिसमें उनकी प्रसन्नताहोगी वह हम करेंगे तुम हमें मत छोड़ जाइयो निदान उस सेठने अपने दामाद को बुलाकर बहुत सी दौलत देकर बिदा किया और लड़की का भी डोला एक दासी समेत साथ कर दिया तब यह वहां से चला जब एक जंगल में पहुंचा तो उस ने शाहकी बेटी से कहा यहां बहुत डर है जो तुम अपना सब गहना उतार दो तो हम अपनी कमर में बांध लें फिर जब आगे शहर आवेगा तो तुम पहिन लेना उसने सुनते ही सब जेवर उतार दिया और उसने जेवर ले कहारों को बिदा कर दासी को मार कुवेंमें डालदिया और उसको भी कुवें में ढकेल सब गहना ले अपने देशको चलागया इतने में एक मुसाफिर उस राहमें आया और रोने की आवाज़ सुनकर खड़ा हो अपने जी में कहने लगा कि इस जंगलमें

आदमी के रोने की आवाज़ कहां से आई यह बिचार उस रोनेकी तरफ को चला कि एक कुवां दृष्टि पड़ा उस में झांका तो देखता क्याहै कि स्त्री रोती है तब उसको निकाल वृत्तान्त पूछने लगा कि तू कौनहै और किस तरह से इस में गिरी यह सुनके उसने कहा मैं हेमगुप्त सेठ की बेटी हूं और अपने पतिके साथ उसके देशको जातीथी इतने में चोरों ने आ घेरा और मेरी दासी को मार मुझे कुवें में डाल दिया और गहना समेत मेरे पति को बांधकर ले गये न उनकी मुझे खबर है न मेरी उन्हें यह सुन वह बटोही उसे साथ ले आया और उस सेठके द्वारे पर पहुंचा गया यह अपने मा बापके पास गई वे उसे देखकर पूछने लगे कि तेरी क्या गति हुई उसने कहा हमैं राहमें आनके चोरों ने लूटा और दासी को मार कुवें में डाल मुझे एक अंधे कुवें में ढकेल दिया और मेरे पति को गहने समेत बांध के ले चले जब और धन मांगने लगे तब उसने कहा जो कुछ था सो तुम ने लिया अब मेरे पास क्या है आगे यह मुझे खबर नहीं उसे मारा था छोड़ा तब उसका बाप बोला तू फ़िक्र मतकर तेरा स्वामी जीताहै भगवान् चाहै तो थोड़े दिनों में आन मिलै क्योंकि चोर धन के गाहक होते हैं जीव के गाहक नहीं निदान उस शाह ने जो जो गहना उसका गया था उसके बदले और आभूषण देकर बहुत सा दिलासा दिया और वह शाह का लड़का भी अपने घर पहुंच सब जेवर को बेच दिन रात वेश्या रमण करने लगा और जुआ खेलने लगा यहांतक कि सब रुपये तमाम हुये तब रोटी को मुहताज हुआ अंतको जब बहुत दुःख पाने लगा तो अपने दिलमें एक दिन बिचारा कि सुसराल जाके यह बहाना कीजिये कि तुम्हारे नवासा पैदा हुआ है

उसकी बधाई देने को मैं आयाहूं यह बात जी में ठानकर चला कई दिन में वहां जा पहुंचा जब उसने चाहा कि घर में पैठूं सामने से उसकी स्त्री ने देखा कि मेरा पति आता है ऐसा नहो कि अपने जीमें डरकर फिरजावे इसमें उन्ने निकट आकर कहा स्वामी तुम अपने जीमें किसी बातकी परवाह मत करो मैंने अपने बापसे कहा है कि चोरोंने आनके दासी को मारा और मेरा जेवर उतरवा मुझे कुवें में डाल मेरे पतिको बांध लेगये यही बात तुमभी कहियो कुछ चिन्ता मत करो घर तुम्हारा है और मैं दासीहूं यह कहकर वह घरमें चलीगई यह उस सेठके पासगया उसने उठकर गले लगा सब अहवाल पूछा जिसतरह उसकी स्त्री समझागई थी इसने उसी तरह से कहा सारे घरमें प्रसन्नता हुई फिर सेठने उसे स्नान करवा रसोईं जिवां बहुतसा निहोरा कर कहा कि यह घर तुम्हारा है आनन्द से रहो यह वहां रहने लगा निदान कितने एक दिनों के बाद रातके समय शाहकी बेटी गहना पहने हुये उसके पास सोनेको आई और सोगई जब दोपहर रात गई उसने देखा कि यह गाफ़िल सोगई है तब एकछुरी ऐसी उसके गलेमें मारी कि वह मरगई और सारा गहना उसका उतार अपने देशकी राहली इतनी बात कह मैना बोली महाराज! यह मैंने अपनी आंखोंसे देखा इसवास्ते मुझे पुरुषसे कुछकाम नहीं महाराज! देखो तो पुरुषकी जात ऐसी बटपार होती है कौन ऐसेसे मित्रताकर अपने घरमें सांप पाले महाराज़! आप इसे बिचारें कि उस स्त्रीने क्या अपराध किया था यह सुनकर राजा ने कहा ऐ तोते! स्त्रीमें ऐब क्याहै तू मुझसे कह तब वह कीर बोला महाराज! सुनिये कंचनपुर एक नगर है वहांका सागरदत्त नाम एक सेठ था उसके बेटेका नाम

श्रीदत्तथा और एक नगरका नाम श्रीविजयपुर वहांका सोम-
दत्तनाम एक सेठथा और उसकी बेटीका नाम जयश्री था वह
उस सेठके बेटेको ब्याही थी वह लड़का किसी मुल्कमें सौदा-
गरी के वास्ते गया था वह अपने माता पिताके यहां रहती
थी जब उसे सौदागरी में बारहबर्ष व्यतीत होगये और वह यहां
युवाहुई तो एकदिन सखीसे कहने लगी ऐ बहिन ! मेरा यौवन
योंहीं जाता है संसारका सुख मैंने अबतलक कुछ नहीं देखा यह
बात सुनके सखी ने उस्से कहा तू अपने जीमें धीरजधर भग-
वान् चाहै तो तेरा भर्त्तार जल्दआ मिलताहै इसबात को सुनकर
जयश्री अटारीपर चढ़ झरोखे से झांकी तो देखती क्याहै कि एक
जवान चलाआताहै जब निकट आया तो इसकी और उसकी
एकाएकी चार नज़रें हुईं दोनों का दिल मिलगया तब उसने
अपनी सखी से कहा कि उस पुरुष को मेरे पास ले आ यह सुन
सखीने उस्से जाकर कहा कि सोमदत्तकी कन्याने तुझे
एकान्तमें बुलाया है पर तुम मेरे घर आइयो फिर अपने
घरका पता उसे बतादिया उसने कहा कि रातको मैं आऊंगा
सखीने यह सेठकी लड़की से आकर कहा कि उसने रातके समय
आनेको कहाहै यह सुनके जयश्रीने सखी से कहा कि तू
अपने घरमें जा जब वह आवै मुझे खबर करना तो मैंभी घरसे
सुचित्तहो चलूंगी सखी उसकी बात सुनके अपने घरगई द्वारे
पर बैठके उसकी राह ताकने लगी इतनेमें वह आया इसने उसे
अपने घरमें बिठाकर कहा तुम यहां बैठो मैं जाकर तुम्हारी खबर
करती हूं और आकर जयश्री से कहा तुम्हारा प्रीतम आन
पहुंचा है यह सुनके उसने कहा किंचित् ठहरजा घरके लोग
होजावैं तो मैं चलूं फिर कितनी एक देरके बाद जब आधी

रातका अमलहुआ और सब सोगये तबयह चुपके से उठकर उसके साथचली और एकक्षणमें वहां आन पहुंची और दोनोंने उसके घर में प्रसन्नता पूर्वक मुलाक़ात की जब चारघड़ी रात बाकी रही यह उठकर अपने घरमें आनकर चुपचाप सोरही और वहभी सबेरे अपने घरको गया इसीतरहसे कितने एकदिन बीतगये निदान उसकापतिभी विदेशसे अपनी सुसराल में आया जब इसने अपने पतिको देख जीमें चिंताकरके सखी से कहा इस शोच मे मेराजी है क्या करूं किधर जाऊं मेरी नींद भूख प्यास सब बिसरगई न ठंढेसे रुचिहै न गर्मसे और जो कुछ अहवाल अपने चित्तका था सो सब कहा निदान ज्योंत्यों करके दिन तो कटा पर संध्याके समय जब उसका पति ब्याल्हकरचुका तब उसकी सासने एक जुदे चौबारेमें सेज बिछवाकर कहलाभेजा कि तुम वहां जाकर आराम करो और अपनी बेटीसे कहा कि तू जाकर अपने पतिकी सेवाकर वह इसबातको सुन नाक भौंह चढ़ा चुपकी हो-रही फिर उसकी माने डाटसे उसके पास भेजा तो बेबश होके वहां गई और मुँह फेर पलंगपर लेट रही वह ज्यों २ उस्से नेह की बातें करता था त्यों २ उसे अधिक दुःख होता था फिर तरह तरह के वस्त्र आभूषण जो २ हरएक मुकाम से उसके वास्ते वह लाया था सो दिये और कहा कि इसे पहन तब तो उसने और खफा हो भवें तान मुँह फेर लिया और यह भी लाचारहो सोरहा क्योंकि हारा मांदा राहका था पर उस स्त्री को अपने यारकी याद में नींद न आई जब वह समझी कि यह नींद से अचेत हुवा तब वह हौले २ उठ उसे सोता छोड़ अन्धेरी रात में निडर अपने दोस्त के मकान को चली राह में एक चोरने उसको देखकर अपने मनमें चिन्ता की कि

यह स्त्री गहना पहिने हुये आधीरात के समय अकेली कहां जाती है यह बात अपने जी में कह उसके पीछे होलिया निदान ज्यों त्यों यह अपने यारके मकान में पहुँची और उसे वहां सांप काटगया था वह मरा पड़ा था इसने जाना कि सोता है उसके बिरह की आग की जली हुई जो थी उससे लपटकर प्यार करनेलगी और चोर दूरसे तमाशा देखने लगा वहां एक पीपल के वृक्षपर एक पिशाच भी बैठा हुआ यह तमाशा देखता था अचानक उसके मनमें आया कि उसके बदन में पैठ इससे भोग कीजिये यह बिचार उसके बदन में आ भोगकिया अन्त को दांतों से उस स्त्री की नाक काट उसी वृक्ष पर जा बैठा चोर ने यह सब अहवाल देखा और वह बेबशहो उसी भांति लहूसे चुचहाती हुई अपनी सखी के पास गई और सब माजरा कहा तब सखी बोली कि तू अपने पति के पास जल्द जा कि जिस में सूर्य उदय होने न पाये और वहां जाकर ढाढ़मार के रोइयो जो कोई तुझसे पूंछे तो कहना कि इन्ने मेरी नाक काट ली है यह सखीकी बात सुनते ही वह तुरन्त जा ढाढ़े मार२ रोनेलगी इसके रोने की आवाज सुन सारे कुटुम्ब के लोग आये देखते क्याहैं कि उसके नाक नहीं नकटी बैठी है तब वे बोले ऐनिलज्ज ! पापी निर्दयी क्रूरमति बिना अपराध किये इस की नांक क्यों काटी वह भी यह स्वांग देख चिन्ता कर अपने जी में कहने लगा कि चंचलका, काले सांपका, शस्त्रधारी का दुश्मन का बिश्वास न कीजिये और त्रिया चरित्र से डरिये कवीश्वर क्या बर्णन नहीं करसक्ता और योगी क्या कुछ नहीं जानता मतवाला क्या कुछ नहीं बक्ता स्त्री क्या नहीं करसक्ती सच्चहै घोड़े का ऐब बादल का गरजना त्रिया का चरित्र पुरुष की भाग्य देवता भी नहीं जानते

आदमी का तो क्या मक़दूर है इतने में उसके बाप ने कोत-वाल को यह खबरदी वहां से प्यादे चबूतरे के आये और इसे बांध कोतवाल के पास लाये कोतवाल ने राजा को खबर की राजा ने उस्से यह अहवाल बुलवा के पूछा तो उसने कहा मैं कुछ नहीं जानता और सेठकी लड़कीसे बुला कर पूछा तो उसने कहा महा-राज! प्रत्यक्ष देखके मुझसे पूछते क्या हो फिर राजा ने उस्से कहा तुझे क्या दण्ड दें यह सुनके वह बोला आपके न्याय में जो ठहरै सो कीजिये राजा ने कहा इसे लेजाके शूली दो बधिक राजा की आज्ञा पाके उसे शूली देने लेचले यह संयोग देख वह चोर भी वहां खड़ा तमाशा देखता था जब उसे विश्वास हुआ कि यह नाहक मारा जाताहै तो उसने दुहाई दी तब राजाने उसे बुला कर पूछा कि तू कौन है उसने कहा महाराज! मैं चोर हूं और यह बेगुनाह है नाहक इसका खून होताहै आपने कुछ न्याय न किया तब राजाने उसे भी बुलाया और चोर से पूछा तू अपने धर्म्म से सच कह कि यह मुक़द्दमा किस तरहसे है तब चोरने ब्योरेवार अहवाल कहा और राजा अच्छी तरहसे समझा निदान हरकारे भेज उस स्त्री का यार जो मराहुआ पड़ा था उसके मुँहमें से नाक मँगवाके देखी तब जाना कि यह बेतक-सीर है और चोर सच्चाहै फिर चोर बोला कि महाराज! नेकों को पालना और दुष्टोंको दण्ड देना राजों का सनातन धर्म्म चला आताहै इतनी बात कहकर चूड़ामणि तोता बोला महा-राज! ऐसे गुणोंकी पूरी स्त्रियां होतीहैं राजाने उस स्त्रिका मुँह काला करवा शिर मुँड़वा गधेपर चढ़वा नगरीकी फेरी दिलवा छुड़वा दिया और उस चोर को साहूकारबच्चे को बीड़े दे बिदा किया इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा ! इन दोनोंमें किसे

ज़ियादह पाप हुआ तब राजा बीर बिक्रमादित्य बोला कि स्त्री को, फिर बैताल बोला कि किस तरह से यह सुन के राजा ने कहा मर्द कैसाही दुष्ट हो पर उसे धर्म्म अधर्म्म का बिचार रहता है और स्त्री को कुछ धर्म्म अधर्म्म का ज्ञान नहीं रहता इस्से स्त्री को बहुत पाप हुआ यह बात सुनके बैताल फिर चलागया और इसी वृक्षपर जा लटका फिर राजा जा उसको पेड़से उतार गठरी बांध कांधेपर रख लेचला ॥ ४ ॥

पांचवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा! उज्जैन नाम एक नगरी है और वहां का राजा महाबल था और उसका हरिदास नाम एक दूत था उस दूतकी बेटीका नाम महादेवी था वह अति सुन्दरी थी जब वह वरयोग्य हुई तो उसके पिताको चिन्ता हुई कि इसका वर ढूंढ़ बिवाह करदेना चाहिये निदान एक दिन उस लड़की ने अपने बापसे कहा पिता जो सब गुण जानता हो मुझे उसे दीजो तब उसने कहा कि जो सब विद्या जानता होगा तेरा ब्याह मैं उसके साथ करूंगा फिर एक दिन उस राजाने हरिदासको बुलाकर कहा कि दक्षिण दिशामें हरिचन्द नाम राजा है उसके पास तुम जाकर मेरी तरफ़ से क्षेमकुशल पूछो और उनकी क्षेमकुशल के समाचार लाओ यह राजा की आज्ञा पा हरिदास बिदा हो उस राजाके पास कितने एक दिनों में जा पहुँचा और उस्से अपने राजा का सब सन्देशा कहा और हमेशा उस राजा के निकट रहनेलगा एक दिन की बातहै कि उस राजाने इस्से पूछा ऐ हरिदास! अभी कलियुग का आरंभ हुआ कि नहीं तब उन्ने हाथ जोड़कर कहा महाराजा कलिकाल वर्त्तमान है क्योंकि संसार में झूठ बढ़ा है और सत घट गया

लोग मुँह पर बात मीठी करते हैं और पेट में कपट रखते हैं धर्म जाता रहा पाप बढ़ा पृथ्वी फल कम देने लगी राजा डांड़ लेने लगे ब्राह्मण लालची हुये स्त्रियों ने लाज छोड़ दी बेटा बाप की आज्ञा नहीं करता भाई भाई का विश्वास नहीं करता मित्रों से मित्रताई जाती रही पति से स्नेह घटगया सेवकों ने सेवा छोड़दी और जितनी खराब बातें थीं वे सब दृष्टि आती हैं जब राजा से यह सब कहचुका तब राजा उठकर महल में गया और यह अपने स्थान पर आन बैठा इतने में एक ब्राह्मण उसके पास आ कहने लगा कि मैं तुझसे कुछ मांगने आया हूं यह सुनके उसने कहा मांग तब उसने कहा अपनी बेटी मुझको दे हरिदास बोला कि जिसमें सब गुण होंगे मैं उसको दूंगा यह सुन के वह बोला कि मैं सब विद्या जानता हूं उसने कहा कुछ अपनी विद्या मुझे दिखलादो मैं जानूं कि तुझे विद्या आती है तब उस ब्राह्मणने कहा मैंने एकरथ बनवाया है उसमें यह सामर्थ्य है कि जहां जाने की इच्छाकरो वहां वह एक क्षण में ले पहुंचावे तब हरिदास ने कहा उस रथको प्रभात समय मेरे पास लेआइयो वह भोर को रथ ले हरिदास के पास आया फिर ये दोनों रथपर सवार हो उज्जैन नगरी में आनपहुंचे पर यहां उसके आनेके पहिले किसी और ब्राह्मणके लड़केने उसके बड़े बेटेसे आकर कहा था कि तू अपनी बाहिन मुझे दे और उस ने भी यही कहा था कि जो सब विद्या जानता होगा उसको दूंगा और उस ब्राह्मणके पुत्रने भी कहाथा कि मैं सब ज्ञान विद्या जानता हूं यह सुनके उसने कहा था कि तुझेही देंगे और एक और ब्राह्मणके पुत्र ने उस लड़की की मांसे कहाथा कि तू अपनी बेटी हमैं दे उसने भी जबाब दियाथा कि जो सब विद्या जानता

होगा उसी को अपनी लड़की दूंगी उस ब्राह्मण के लड़के ने भी कहा था कि मैं सम्पूर्ण शस्त्रविद्या जानता हूं और शब्द वेधी तीर मारताहूं यह सुनके उसने भी कहा था कि मैंने अंगीकार किया तुझे ही दूंगी निदान इसी तरह से तीनों बर आन के इकट्ठे हुये हरिदास आकर अपने मनमें चिन्ता करने लगा कि एक कन्या और तीन बर किसे दूं किसे न दूं इसी शोच में था कि रातको एक राक्षस आन के उस कन्या को उठाय विंध्याचल पर्वत के ऊपर लेगया कहा है कि बहुतायत किसी वस्तु की अच्छी नहीं अति रूपवती सीताथी रावण ने हरी, राजा बलिने अतिदान किया सो दरिद्री हुआ रावण ने अतिगर्व करके अपने कुलकी क्षयकी निदान जब भोर हुआ और सब घरके लोगों ने कन्या को न देखा तब अनेक प्रकार की चिन्ता करने लगे और यह बात वे तीनों बर भी सुनके वहां आये उनमें एकज्ञानी था उस्से हरिदास ने पूछा ऐज्ञानी ! तू बता कि वह कन्या कहांगई उसने घड़ी एक में बिचार करके कहा तुम्हारी लड़की को राक्षसने पर्वतमें लेजाके रक्खाहै इस्में दूसरा बोला कि राक्षस को मारकर मैं अभी ले आऊंगा फिर तीसरा बोला हमारे रथ पर सवार होजाओ और उसे ले आओ यह सुनतेही वह झटसे उसके रथपर सवारहो वहां पहुंचा और उस देवको मार तुरन्त उसे लेंआया और तीनों आपस में झगड़ने लगे तब उसके बापने मन में चिन्ता करके कहा कि सबों ने यह साहस किया है किसे दूं इतनी कथा कह बैताल बोला अय राजा विक्रम! उन तीनों में से वह कन्या किसकी स्त्री हुई राजा बोला कि वह स्त्री उसकी हुई जो राक्षस को मारकर लाया बैतालने कहा सबका गुण बराबरहै किस तरह से वह स्त्री उसकी हुई राजा ने कहा उन दोनों ने

एहसान किया इससे उनको सवाब हुआ और वह लड़कर उसे मारकर लाया है इसवास्ते वह उस की स्त्री हुई यह बात सुन बैताल फिर उसी वृक्ष में जा लटका और राजा भी वहीं जा बैताल को बांध कांधे पर रख ले चला ॥ ५ ॥

छठी कहानी ॥

फिर बैताल बोला अय राजा! धर्मपुर नाम एक नगर है वहां का राजा धर्मशील था और उसके मंत्री का नाम अन्धक था उस ने एक दिन राजा से कहा महाराज! एक मंदिर बनवा उसमें देवी को बिठा नित पूजा कीजिये कि इसका शास्त्र में बड़ा पुण्य मिलता है तब राजा एक मंदिर बनवा देवी पधरा शास्त्र की विधिसे पूजा करने लगा और बिना पूजा किये जल भी न पीता था इसतरह से जब कितनी एक मुद्दत बीती तो एक दिन दीवान ने कहा महाराज! दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि निपूते का घर सूना मूर्खका हृदय सूना और दरिद्रीका सब कुछ सूना है यह बात सुन राजा देवी के मंदिर में जा हाथ जोड़ स्तुतिकरने लगा "कि हे देवी! तुझे ब्रह्मा विष्णु रुद्र इन्द्र आठ पहर सेवते हैं और तूने महीषासुर चण्ड मुण्ड रक्तबीज आदि दैत्योंको मार पृथ्वीका भार उतारा और जहां २ तेरे भक्त को विपत्ति पड़ी तहां२ जा तू सहाय हुई और यही आशतक मैं तेरे द्वारपर आया हूं अब मेरे भी मनकी इच्छा पूरीकर इतनी स्तुति जब राजा करचुका तब देवीके मन्दिरसे आवाज़ आई कि राजा! मैं तुझ पर प्रसन्न हुई बर मांग जो तेरे मनमें है राजा बोला हे माता! जो तू मुझसे प्रसन्न हुई तो मुझको पुत्र दे देवी ने कहा राजा तेरे महाबली और बड़ा प्रतापी पुत्र होगा तबतो राजा ने चन्दन अक्षत फूल धूप दीप नैवेद्य देकर पूजाकी और इसीतरह

से नित्य पूजा करता था निदान कितने दिनों के पीछे राजा के एक लड़का पैदा हुआ राजाने बाजे गाजेसे कुटुम्ब समेत जाकर देवीकी पूजा की इस अरसे में संयोगवश एक दिन किसी नगरसे एक धोबी अपने मित्रको साथ लिये इस शहर की तरफ़ आता था कि देवी का मन्दिर उसे दृष्टि आया उसने दण्डवत् करनेका इरादा किया इसमें एक धोबीकी लड़की अति सुन्दरी आतीहुई सामने इसने देखी उसे देख मोहित हुआ और देवीके दर्शनको गया दण्डवत् कर हाथ जोड़ उसने अपने मनमें कहा देवीजी ! इस सुन्दरीसे मेरा विवाह तेरी कृपा से हो तो मैं अपना शिर तुझे चढ़ाऊं यह मान्ता मान दण्डवत् कर मित्रको साथ ले अपने नगरको गया जब वहां पहुँचा तो उसको विरह ने ऐसा सताया कि नींद भूख प्यास सब बिसर गई आठ पहर उसीके ध्यानमें रहनेलगा यह बुरी हालत उसके मित्रने देख उसके बापसे सब ब्योरेवार कहा उसका पिता भी यह सुनकर भौचक होरहा और अपने जीमें चिन्ता करने लगा कि इसकी दशा देख ऐसा मालूम होता है जो उस कन्यासे इसकी सगाई न होगी तो यह अपना प्राण त्याग करेगा इससे उचित है कि उस लड़की से इसका ब्याह कर दीजिये कि जिससे यह बचे इतना बिचार कर पुत्रके मित्र को साथले उस गांवमें पहुंच उस लड़की के पितासे जाकर कहा मैं तेरे पास कुछ यांचने आया हूं जो तू देवे तो मैं कहूं उसने कहा मेरे पास वह पदार्थ होगा तो मैं दूंगा तुम कहो इस तरह से वचन बन्दकर कहा तू अपनी लड़की मेरे पुत्रको दे यह सुनके उसने भी उसकी बात मानकर ब्राह्मण को बुलवा दिन लग्न मुहूर्त ठहराकर कहा तुम लड़के को ले आओ मैं भी अपनी लड़की के हाथ पीले करदूंगा यह सुन वह वहां से उठ

अपने घर आ सब सामान ब्याह का तैयार कर ब्याहनेको गया और वहां जा बिवाह कर बेटे बहू को ले फिर अपने घर आया और दुलहा दुलहिन आपस में आनन्द से रहने लगे फिर कितने दिनोंके बाद उस लड़की के पिताके यहां कुछ शुभकर्म था वहां से न्योता इनको आया ये स्त्री पुरुष तैयार हो अपने मित्र को साथले उस नगरको चले जब नगरके निकट पहुँचे तो देवी का मन्दिर नज़र आया तो उसे यह बात याद आई तब उसने अपने जी में विचारकर कहा कि मैं बड़ा असत्यवादी अधर्म्मी हूं कि देवीसे मिथ्या बोला इतनी बात अपने मन में कह उस मित्र से कहा तुम यहां खड़े हो मैं देवी का दर्शन कर आऊं और स्त्री को भी कहा तू यहां ठहर यह कह मन्दिर के पास पहुंच कुण्ड में स्नानकर देवी के सन्मुख जा हाथ जोड़ नमस्कार कर खड्ग उठा गर्दन पर मारा कि शिर तनसे जुदा हो भुईं में गिरा निदान कितनी देर पीछे उसके मित्र ने बिचारा कि इसे गये बड़ी देर भई है अबतक फिरा नहीं चलकर देखा चाहिये और उसकी स्त्री को कहा तूं यहां खड़ी रह मैं उसे शीघ्रही ढूंढ़ ले आता हूं यह कहकर देवी के मन्दिर में गया तो देखता क्या है कि धड़से उसका शिर जुदा पड़ा है यह हालत वहां की देख अपने मनमें कहनेलगा कि संसार बहुत कठिन जगह है कोई यह न समझेगा कि इसने अपने हाथ से शीश देवी को चढ़ाया है बल्कि यह कहैंगे कि इसकी स्त्री जो अति सुन्दरी थी उसके लेने के लिये मारकर यह मकर करता है इससे यहां मरना उचित है पर संसार में बदनामी लेनी अच्छा नहीं यह कह तालाब में नहा के सामने आ हाथजोड़ प्रणाम कर खांड़ा उठा गले में मारा कि रुण्ड से मुण्ड जुदा

होगया यह स्त्री यहां अकेली खड़ी २ उकताकर राह देख २ निराश हो ढूंढ़ती हुई देवी के मन्दिरमें गई वहां जा देखती क्या है कि दोनों मरे पड़े हैं फिर इन दोनों को मुआ देख उसने अपने जीमें विचारा लोग तो यह न जानेंगे कि आप से देवीको ये बलि चढ़े हैं सब कहैंगे कि रांड़ व्यभिचारिणी थी बदकारी करनेकेलिये दोनों को मारआई है इस बदनामी से मरना उचित है यह शोचकर सरोवर में गोता मार देवीके सन्मुख आ शिर नवा दण्डवत कर तलवार उठा चाहती थी कि गर्दन में मारे कि देवीने सिंहासन से उतर उसका हाथ आन पकड़लिया और कहा पुत्री! वर मांग मैं तुझसे प्रसन्नहुई तब उसने कहा माता जो तू मुझसे प्रसन्नहुई है तो इन दोनों को जीदान दे देवी ने कहा इनके धड़ों से शिर लगादे इसने मारे हर्षके घबरा धड़से शिर बदलके लगादिया और देवीने अमृत ला छिड़कदिया ये दोनों जीकर उठ खड़ेहुये और आपस में झगडने लगे यह कहे स्त्री मेरी और वह कहे स्त्री मेरी इतनी कथा कह बैताल बोला कि अय राजा वीरविक्रमादित्य ! इन दोनों में वह स्त्री किसकीहुई राजा ने कहा सुन शास्त्र में इसका प्रमाण लिखाहै कि नदियों में गंगा उत्तमहै और पर्वतों में सुमेरु पर्वत श्रेष्ठ है और वृक्षोंमें कल्पवृक्ष अंगों में मस्तक उत्तमहै इस न्यायसे जिसका उत्तम अंगहै उसी की स्त्री हुई इतनीबात सुन बैताल फिर उसी वृक्षमें जालटका और राजा भी जा उसे बांध कंधेपर रख लेचला ६ ॥

सातवीं कहानी ॥

फिर बैताल बोला कि ऐराजा! चंपापुरनाम एकनगर है वहां का राजा चंपकेश्वर और रानी का नाम सुलोचना और बेटीका

नाम त्रिभुवनसुन्दरी है सो अति सुन्दरी है जिसकामुख चन्द्रमा
सा बालघटासे आंखें मृगकी सी भवें धनुषसी नाक कीर कीसी
गला कपोतकासा दांत अनारकेसे दाने होठों की लाली कुंदरू
कीसी कमर चीतेकी सी हाथपांव कोमल कमल से रंग चंपेका
सा निदान उसके यौवन की ज्योति प्रतिदिन बढ़ती थी जब
वह युवा हुई तो राजारानी अपने चित्तमें चिन्ता करनेलगे और
देश २ के राजों को खबर गई कि राजा चम्पकेश्वरके घर में ऐसी
कन्या पैदा हुई है जिसके रूपको देखतेही सुर नर मुनि मोहित
होरहते हैं फिर मुल्क २ के राजोंने अपनी २ सूरतें लिखवा २
ब्राह्मणोंके हाथ राजा चम्पकेश्वरके यहां भेज दीं राजाने अपानी
बेटीको सब राजोंकी तसबीरें दिखलाई पर उसके मननें कोई न
आई तबतो राजाने कहा तू स्वयम्बर कर वह बात भी उसने न
मानी और अपने बापसे कहा कि रूप बल ज्ञान जिसमें ये तीनों
गुणहों पिता उसे मुझे देना निदान जब कितने एक दिन बीते
तो चारों दिशासे चार बर आए फिर उनसे राजाने कहा अपना
अपना गुण विद्या मेरे आगे प्रकट कर कहो उनमेंसे एक बोला
मुझमें यह विद्या है कि एक कपड़ा मैं बनाकर पांच लाल को
बेंचता हूं जब उसका मोल मेरे हाथ आताहै तब उसमें से एक
लाल ब्राह्मणको देताहूं दूसरा देवताको चढ़ाता हूं तीसरा अपने
अङ्ग लगाता हूं चौथा स्त्री के वास्ते रखता हूं पांचवें को बेंच कर
रुपए ले नित्य भोजन करता हूं यह विद्या दूसरा कोई नहीं जा-
नता और मेरा जो रूपहै सो प्रकट है दूसरा बोला मैं जल थलके
पक्षी की भाषा जानता हूं मेरे बलका दूसरा नहीं और सुन्दर-
ताई मेरी आपके आगे है तीसरे ने कहा मैं ऐसा शास्त्र समझता
हूं कि मेरे समान दूसरा नहीं और सुन्दरता मेरी तुम्हारे रूबरू

है चौथे ने कहा मैं शस्त्रविद्या में एकही हूं दूसरा मुझ सा नहीं शब्दवेधी तीर मारता हूं और मेरा रूप जगत् में प्रकट है आपभी देखतेही हैं यह चारोंकी बातें सुन राजा अपने जी में चिन्ता करनेलगा कि चारों गुणमें बराबर हैं किसे कन्या दूं यह शोचकर उसने बेटीके पास जा चारोंका गुण वर्णन किया और कहा मैं तुझे किसे दूं यह सुन वह लाज की मारी नीची गर्दनकर चुप होरही और कुछ जवाब न दिया इतनी बात कह बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम ! वह स्त्री किसके योग्य है राजा ने कहा जो कपड़ा बनाकर वेंचता है सो जातिका शूद्र है और जो भाषा जानता है वह जातिका वैश्य है जो शास्त्र पढ़ा है सो ब्राह्मण है और शब्दवेधी उसका सजाती है यह स्त्री उसके लायकहै इतनी बात सुन बैताल फिर उसी पेड़ में जा लटका और राजाभी वहां उसे बांध कन्धेपर रखके लेचला ॥ ७ ॥

आंठवीं कहानी ॥

तब बैताल ने कहा ऐ राजा ! मिथिलावती नाम एक नगरी है वहां का राजा गुणाधिप है उसकी सेवा करनेको दूरदेश से एक चिरमदेव नाम राजपुत्र आया नित्य उस राजा के दर्शन को जाया करता परन्तु मुलाक़ात न होती थी और जितना धन यह लाया था सो वर्ष रोज़के अर्से में सब बैठकर यहां खाया और वहां घर उसका सब तबाह होगया एक दिनकी बातहै कि राजा शिकार को सवार हुआ और चिरमदेव भी उसकी सवारी के साथ होलिया संयोगवश राजा एक बनमें जाकर फौज से जुदा होगया और लोग सवारी के एक ओर जङ्गल में भटक गये लेकिन एक चिरमदेव ही राजाके पीछे था निदान उसनेही पुकार कर कहा महाराज लोग सवारी के पीछे रहगये हैं और मैं

आपके घोड़ेके साथ घोड़ा मारे चला आताहूं राजाने यह सुन के घोड़ा रोका इतने में यह बराबर आया राजाने उसे देख के पूछा कि तू किस वास्ते इतना दुर्बल होरहा है तब यह बोला जिस स्वामीके पास रहिये और वह ऐसाहो कि हज़ारों को पालता हो और अपनी खबर न ले तो इसमें उसका कुछ दोषनहीं परन्तु अपने कर्मका दोषहै जैसे दिनको सारा जहान देखताहै परन्तु उल्लूको नज़र नहीं आता इसमें सूर्य्यका क्या गुनाह है मुझको पश्चात्ताप है कि जिसने मा के पेटमें रोजी पहुँचाई थी और जब हम पैदाहुए और दुनियां की बस्तुओं का सुख करने के लायक हुए अब वह खबर नहीं लेता नहीं मालूम कि सोता है या मरगया और अपने नज़दीक माल और दौलत बड़े आदमी से चाहनी यदि देतेवक्त वह मुँह बनावे और नाक भौं चढ़ावे तो इस्से ज़हर हलाहल खाकर मरजाना बिहतर है और ये छः बातें आदमीको हलका करतीहैं एकतो खोटे नरकी प्रतीति दूसरे बिना कारणकी हँसी तीसरे स्त्री से विवाद करना चौथे असज्जन स्वामीकी सेवा पांचवें गधे की सवारी छठे बिना संस्कृत की भाषा और ये पांच चीज़ें विधाता मनुष्यके कर्म में पैदाहोते ही लिख देताहै एकतो आयुर्बल दूसरे कर्म तीसरे धन चौथे विद्या पांचवें यश ऐ महाराज ! जबतक आदमीका पुण्य उदय होताहै सब उसके दास बने रहते और जब पुण्य घटजाताहै तो बन्धु बैरी होजातेहैं पर एकबात मुक़द्दम है स्वामीकी सेवाकरने से कभी न कभी फल मिल रहताहै निष्फल नहीं रहता यहसुन राजाने उन सब बातोंको शोचकर उस समय कुछ उत्तर न दिया पर उससे यह कहा कि मुझे भूख लगीहै कहींसे कुछ खाने को ला चिरमदेव ने कहा यहां अन्न भोजन न मिलेगा यह कह

जङ्गलमें जा एक हिरन मार खीसे से चकमक निकाल आग सुलगा मांसके तिक्के भून राजाको खूबसा खिला आप भी खाए जब राजाका पेट भरचुका तब उसने कहा ऐ राजपुत्र ! अब हमें नगरको लेचलो कि राह मुझे मालूम नहीं उसने राजाको नगरमें ला उसके मन्दिर में पहुँचा दिया तब राजा ने उसकी चाकरी नियत करदी और बहुत उसे वस्त्र आभूषण दिए फिर वह राजाकी सेवामें हाजिर रहनेलगा एकदिन राजा ने किसी कामके लिए समुद्र किनारे उस राजपुत्रको भेजा वह जब किनारे पहुँचा तो उसने एक देवीका मन्दिर देखा उसमें जा देवी की पूजा की लेकिन जब यह वहांसे बाहर निकला तो वहीं उसके पीछेसे एक सुन्दरी नायका आ उससे पूछनेलगी ऐ पुरुष ! तू किसलिए यहां आयाहै वह बोला ऐशके लिए आयाहूं और तेरे रूपको देख मैं मोहित हुआ हूं उसने कहा जो मुझसे कुछ इरादा रखता है तो पहिले तू इस कुण्डमें जाकर स्नान कर फिर उसके पीछे जो तू मुझसे कहेगा सो मैं सुनूंगी यह सुनतेही वह कपड़े उतारकर तालाब में पैठ गोता मार निकल कर देखे तो अपने नगरमें खड़ाहै इस अचम्भेको देख अचम्भित हो अपने घरजा और कपड़े पहन राजा के पास आ सब वृत्तान्त कहा राजाने सुनतेही कहा मुझे भी यह अचम्भा दिखा यह कहते ही सवारी मँगा दोनों सवार होकर चले कितने दिनों के अरसे में सागरके किनारे आए और उसी देवी के मन्दिर में जाकर पूजा की फिर राजा जब बाहर निकला तो वही नायका एक सखी साथ लिए राजाके पास आन खड़ीहुई औ राजा का रूप देख मोहित हो बोली ऐ राजा ! जो मुझे आज्ञा दे सो करूं राजा ने उसे उत्तर दिया जो तू मेरा कहना करे तो मेरे सेवक

की स्त्रीहो वह बोली मैं तेरे रूप के आधीन हुई हूं इसकी जोरू किसतरह से होऊं राजा ने कहा अभी तो तूने मुझ से कहा जो तू हुक्म करेगा सो करूंगी और सज्जन जिस बात को कहते हैं उसका निर्बाह करते हैं अपने बचन को पाल मेरे सेवक की जोरू हो यह सुनके वह बोली जो आपने कहा सो मुझे अंगीकार है तब राजा सेवक का गांधर्व बिवाह कर दोनों को साथ ले अपने राजधाम में आया इतनी बात कह बैताल बोला राजा बतलाओ स्वामी और सेवक में किस का सत अधिक हुआ राजा बोला सेवक का फिर बैताल बोला कि जिस राजा ने ऐसी सुन्दर स्त्री पा सेवक को दी तिस राजा का सत अधिक न हुआ तब राजा बीरविक्रमादित्य ने कहा जिनको धर्म उपकार करना है तिनको उपकार करने में अधिक क्या है और जो आप सेवक हो परकाज करै सोई अधिकहै इस कारण सेवकका सत अधिकहुआ यहबातसुन बैताल उसीवृक्षपर जा लटका और राजा फिर उसे वहांसे उतार कंधेपर रख लेचला ८

नवीं कहानी ॥

बैतालबोला ऐ राजा! मदनपुर नाम एकनगरहै वहां बीरबर नाम राजा था और उसी देशमें हिरण्यदत्तनाम एक बनियांथा उसकी बेटी का नाम मदनसेना था वह एक दिन बसन्तऋतु में सखियों को साथ लिये अपने बागमें सैर और तमाशे के वास्ते गई संयोगवश उसके आने के पहिलेही धर्मदत्त सेठका बेटा सोमदत्तनाम अपने मित्रको लिये बनविहारको आयाथा वहां से फिरता हुआ उस बाड़ी में आनपहुंचा और इसे देख मोहित होगया और अपने मित्रसे कहने लगा भाई यह मुझसे मिले तो मेरा जीवन सुफल हो और जो न मिलै तो इस दुनियां में

जीना व्यर्थ है यह अपने मित्रसे बातैंकर बिरह में व्याकुलहो बेवश हो उसके पास जा उसका हाथ पकड़के कहने लगा जो तू मुझसे प्रीति न करेगी तो मैं तेरे ऊपर अपना प्राण दूंगा वह बोली ऐसामत कीजो इसमें पापहोगा तब उसने कहातेरी प्रीतिने मेरे दिलको बींधा है और तेरे बिरहकी आगने मेरे शरीर को जलादिया इस पीरसे मेरी सुधिबुधि सब जातीरही है और मुझे इससमय प्रीतिके गलबेसे धर्म अधर्मका लिहाज नहीं है पर जो तूमुझे बचन दे तो मेरे जीमें जी आवे वह बोली आजके पांचवें दिन मेराब्याह होगा तो पहिले मैं तुझसे मिलजाऊंगी पीछे अपने पतिके यहां रहूंगी यह बचन दे सौगन्ध खा वह अपने घरकोगई और यह अपने घरआया निदान पांचवें दिन उसका ब्याहहुआ उसका पति ब्याहकर उसे अपने घर लेआया कितने एक दिनों के पीछे रातके समय उसकी दिवरानी जिठानीने जबरदस्ती उसे उसके पतिकेपास भेजा वह रंगमहल में जा चुपचाप एक कोने में बैठी रही इस अरसेमें उसके पतिने जो देखा तो उसका हाथ पकड़ सेजपर बिठालिया और जब चाहा कि गले लगाऊं तो उसने हाथ से झिटक दिया और जो २ उस साहूकारबच्चे से कौलकरार हुआथा सो सब बयान किया यह सुनके उसके पति ने कहा जो तू सचउसके पास जायाचाहती है तो जा वह अपने स्वामीकी आज्ञापा उससेठ के स्थानको चली राहमें चोर ने उसे देख प्रसन्नहो इसके पास आकर कहा कि तू दोपहर रात के समय इस अंधेरे में ऐसे वस्त्र आभूषण पहिनके अकेली कहां जातीहै वह बोली जिस जगह मेरा प्रीतमप्यारा बसताहै यह सुन चोरने कहा यहां तेरा सहायक कौन है वह कहने लगी धनुषबाण लिये मदनमेरी सहायता करनेवाला स थहै यह कह फिर चोर

के आगे आद्योपांत अपनी कथा वर्णन करके कहा कि मेराशृंगार भंग मतकर मैं तुझे बचनदिये जातीहूं वहांसे जब फिरूंगी तब गहना तेरे हवाले करूंगी यह सुनके चोरने अपने दिलमें कहा गहना देनेका तो मुझे बचन दिये जाती है फिर क्यों इसका शृंगार भंग करूं यह समझकर उसे छोड़दिया और आप वहां बैठारहा और यह वहां गई जहां सोमदत्त पड़ा सोताथा जातेही जो इसने उसे अचानक जगाया तो वह घबराकर उठा और कहने लगा तू देवकन्या है कि ऋषिकन्या या नागकन्या है सचकह तू कौन है और मेरे पास कहांसे आई है वह बोली कि मैं नरकन्या हूं और हिरण्यदत्त सेठ की बेटी हूं मदनसेना मेरा नामहै और तुझे स्मरण नहीं जो उस उपबन में तू जबरदस्ती मेरा हाथ पकड़ के भोगकरने पर उद्यत हुआ था और मैंने तेरे कहने के अनुसार यह सौगन्द कीथी कि विवाहित पुरुष को त्याग करके तेरेपास आऊंगी सो मैं आई हूं जो तेरी इच्छा में आवे सो कर फिर उसने कहा यह तूने वृत्तान्त अपने पतिके आगे कहा या नहीं इसने उत्तर दिया कि मैंने सम्पूर्ण अहवाल कहा और उसने सब दरियाफ्त करके मुझे तेरे पास बिदा किया सोमदत्त बोला यह बात ऐसे है जैसे बिना वस्त्र का गहना या बिना घी के भोजन या बिना स्वर के गान यह सब एक से हैं इसी तरह मैले बसन तेज को हरें और कुभोजन बलको कुभार्य्या प्राण को कुपुत्र कुल को हरें और राक्षस ख़फ़ा होता है तो प्राण को लेता है पर स्त्री हित और अनहित दोनों में दुःख देने-वाली है स्त्री जो न करे सो थोड़ा क्योंकि जो बात उसके मन में रहती है सो जबान पर नहीं लाती और जो जबान में है उसे प्रकट नहीं करती और जो करती है तो कहती नहीं स्त्री

को संसार में भगवान् ने अजब कोई पैदा किया है इतनी बातें कह उस सेठके बेटेने इसे जवाब दिया कि मैं पराई स्त्रीसे वास्ता नहीं रखता यह सुन वह फिर उलटी अपने घर को चली राह में उस चोर से भेंट हुई उस के आगे सब वृत्तान्त कहा चोर ने सुनके श्याबासीदे छोड़ दिया यह अपने पति के निकट आई और उससे सब वृत्तान्त वर्णन किया पर उस के पति ने उसे प्यार न किया और कहा कोयलका स्वरही रूप है और नारी का रूप पतिव्रत है और कुरूप मनुष्यका रूप विद्या, तपस्वीका रूप क्षमाहै इतनी कथा कह बैताल ने कहा किस तरह राजा ने कहा और पुरुष पर उसकी इच्छा देख स्वामी ने छोड़ा राजा का डरमान सोमदत्त ने छोड़ा और चोर के छोड़ने का कुछ कारण न था इस्से चोरही प्रधान है यह सुन बैताल फिर वृक्ष में जा लटका और राजा भी वहीं जा उसे वृक्षसे उतार बांध कांधेपर रख फिर लेचला॥९॥

दशवी कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा! गौड़ देश में बरदवान नाम एक नगर है और गुणशेखरनाम वहां का राजा था उसका मंत्री एक सरावगी अभयचन्द्र नाम था उसी के समझाने से राजा भी सरावग धर्म में आया शिव की पूजा विष्णु की पूजा और गोदान भूमिदान पिण्डादान जुआ और मदिरा इन सबको मनाकिया नगर में कोई करने न पावे और हाड़ कोई गंगा में न लेजाने पावे और इन बातों की दीवान ने भी राजा से आज्ञा ले डौंड़ी नगर में फिरवादी कि जो कोई ये कर्म करेगा उसका सर्वस्व राजा छीनकर दण्ड दे शहर से निकाल देगा फिर एक दिन दीवान राजा से कहने लगा कि महाराज धर्म का विचार सुनिये जो कोई किसी का जी लेता है वह और

ज़न्म में उसका भी जी लेता है इसी पाप से संसार में अनेक मनुष्यों का जीवन मरण नहीं छूटता फिर २ जन्म लेता है और मरता है इससे जगत् में जन्मपाके धर्म बटोरना मनुष्य को उचित है देखिये काम क्रोध लोभ मोहवश हो ब्रह्मा विष्णु महादेव किसी न किसी तौर से संसार में अवतार ले २ आते हैं बल्कि उनसे गाय अच्छी हैं जो राग द्वेष मद लोभ मोहसे रहित हैं और प्रजा की रक्षा करती हैं और उनके जो पुत्र होते हैं वे भी जगत् के जीवों को बहुत तरह से सुख दे पालते हैं इससे देवता और मुनि सब गौ को मानते हैं इसलिये देवताओं को मानना अच्छा नहीं इस जगमें गायको मानिये और हाथी से लगा चिऊँटी और पशु पक्षी नर तक हरएक जीवकी रक्षा करना धर्म है जहान में इसके समान कोई धर्म नहीं है जो नर बिराने मांस को खा अपना मांस बढ़ाते हैं सो अन्तकाल में नरक भोगकरते हैं इससे मनुष्य को उचित यह है कि जीव की रक्षा करै जो लोग कि बिराना दुःख नहीं समझते और औरोंके जीव मार मार खातेहैं उनकी इस पृथ्वी में उमर कम होती है और लूले लंगड़े काने अन्धे बौने कुबड़े ऐसे अंगहीन हो २ जन्म लेते हैं जैसे पशु और पक्षीके अंग खाते हैं वैसेही अन्त अपने अङ्ग खवातेहैं और मद्यपान करने से महापाप होता है इससे मद्यमांस का खाना उचित नहीं इसतरह से दीवान राजाको अपने मतका ज्ञान समझा ऐसा जैनधर्म में लाया कि जो यह कहता था वही राजा करता था और ब्राह्मण योगी जंगम सेवड़ा संन्यासी फ़कीर किसी को न मानता था और इसी धर्मसे राज्य करता था एकदिन काल के वश हो मरगया फिर उसका बेटा धर्मध्वज नाम गद्दी पर

बैठा और राज्य करने लगा एक दिन उसने अभयचन्द्र दीवान को पकड़वा शिर पर सात चोटियां रखवा मुंह काला करवा गधे पर चढ़ा डौंड़ी बजवा नगर के फेरे दिलवा देश निकाला दिया और अपना राज्य निःकण्टक किया एक दिन वह राजा बसन्त ऋतुमें रानियों को साथ ले एक बाग की सैर को गया उसबाग में एकबड़ा तालाब था और उसमें कमल फूलरहे थे राजा उस सरोवर की शोभा देख कपड़े उतार स्नान करने को उतरा और एक फूल तोड़ तीरपरआ रानीके हाथमें देने लगा कि फूल हाथसे छूटकर रानीके पांव पर गिरा और उसकी चोटसे रानीका पांव टूटगया तब राजा घबराकर एकबारगी बाहर निकल उसकी औषधि करनेलगा कि इसमें रातहुई और चन्द्रमाने प्रकाश किया चांद की ज्योति के पड़तेही दूसरी रानी के शरीर में फफोले पड़ गये फिर अचा-नक दूरसे किसी गृहस्थके घरसे मूसल की आवाज आई वोहीं तीसरी रानी के शिर में ऐसा दर्द हुआ कि मूर्च्छा आगई इतनी बात कह बैताल बोला अय राजा! इनतीनों में अतिसुकुमार कौनहै राजा ने कहा जिसके मूँड़में पीरहो मूर्च्छा आई सोई बहुत सुकुमार है यह बात सुन बैताल फिर उसी वृक्षमें जा लटका और राजा वहां जा उसे उतार गठरी बांध कांधे पर रख लेचला ॥ १० ॥

ग्यारहवीं कहानी ॥

बैताल बोला कि ऐ राजा! पुण्यपुर नाम एक नगरहै वहां का बल्लभ नाम राजा था और उसके मंत्री का नाम सत्यप्रकाश था उस मंत्री की स्त्री का नाम लक्ष्मीथा उस राजा ने एकदिन अपने दीवान से कहा जो राजा होके सुन्दर स्त्री से भोगविलास

न करे तो राज्य करना उसका निष्फल है यहबात कह दीवानको राज्यकाजका भार दे आप सुखसे ऐश करनेलगा राज्यकी चिंता सब छोड़दी और दिनरात आनन्दमें रहनेलगा संयोगवश एक दिन वह मंत्री अपने घरमें उदास बैठाथा कि इसमें उसकी भार्य्या ने पूछा स्वामी इन दिनों आपको बहुत दुर्बल देखती हूं वह बोला निशि दिन मुझे राज्यकी चिन्ता रहतीहै इससे शरीर दुर्बल हुआहै और राजा आठ पहर अपने ऐश आराम में रहता है वह मंत्रीकी जोरू बोली कि हे पति ! बहुत दिन तुमने राजकाज किया अब थोड़े दिनों के लिए राजासे बिदा हो तीर्थयात्रा करो यह बात उसकी सुन मंत्री चुपका होरहा फिर जब वहां से उठा तो दरबारके समय राजाके पास जा रुखसतले तीर्थयात्रा करने निकला जाते२ समुद्रके तीर सेतुबन्ध रामेश्वरमें जा पहुँचा वहां जातेही महादेवका दर्शनकर बाहर निकला था कि दृष्टि उसकी समुद्रकी तरफ जा पड़ी तो क्या देखता है कि एक ऐसा कंचन का पेड़ उसमें से निकला कि जिसके जमुर्रदके पत्ते पुखराज के फूल मूंगेके फलहैं वह अतिही सुन्दर दृष्टि आया और उस वृक्ष पर अति सुन्दर नायका बीन हाथमें लिए मधुर२ कोमल सुरोंसे बैठी गातीहै एक घड़ीके बाद वह तरुवर समुद्र में लोप होगया यह तमाशा मंत्री वहां देख उलटा फिर अपने नगरमें आया और राजाके पास जा दण्डवत् कर हाथ जोड़ बोला महाराज मैं एक अचरज देख आया हूं राजाने कहा बयान कर दीवान ने कहा महाराज!अगले मनुष्य कहगए हैं जो बात किसी की समझ में न आवे और कोई निश्चय न करे वैसी बात न कहिए पर यह मैंने आंखोंसे प्रत्यक्ष देखा इससे मैं कहता हूं महाराज! जहां रघु-नाथ जी ने समुद्र पर पुल बांधा है वहां जा देखता क्या हूं कि

सागरमें से एक सोनेका तरुवर निकला वह जमुर्रदके पात पुखराजके फूल मूंगेके फलों से ऐसा लदाहुआ था जिसका वर्णन नहीं होसक्ता और उसपर महासुन्दरी स्त्री बीन हाथ में लिए मीठे२ सुरोंसे गाती थी एक घड़ी के बाद वह पेड़ समुद्र में छिप गया यह बात राजा सुन दीवानको राज्य सौंप अकेला समुद्रके किनारेको चला कितने एक दिनोंमें वहां जा पहुँचा और महादेवके दर्शन को मन्दिर में गया ज्यों पूजाकर बाहर आया कि समुद्र से वही वृक्ष नायका समेत निकला राजा उसको देखतेही सागरमें कूद उसी वृक्षपर जाबैठा वह राजासमेत पातालको चला गया तो इसको देख वह सुन्दरी बोली ऐ बीरपुरुष ! किसवास्ते तू यहां आया है राजा ने कहा मैं तेरे रूपके लालच से आया हूं उसने कहा जो तू काली चौदश के दिन मुझसे न मिले तो मैं तेरे साथ विवाह करूं राजा ने यह बात मानी उस सुन्दरी ने राजा से यह बचन लेकर राजा के साथ ब्याह किया जब अन्धेरी चतुर्द्दशी आई तो उसने कहा ऐ राजा! तू आज मेरे निकट मत रह यह सुन के राजा खड्ग हाथमें ले वहांसे उठा और एक किनारे जा छिपकर देखता रहा जब आधी रात हुई उस समय एक देव आया और उसने आतेही इसे गले से लगाया यह देखतेही राजा खांड़ा ले के धाया और कहा राक्षस पापी मेरे सामने तू स्त्रीको हाथ न लगा पहिले मुझसे संग्रामकर मुझे तभीतक भयथा जबतक तुझे न देखा था अब मैं निडर हूं इतनी बात कह खांड़ा निकाल एक ऐसा हाथ मारा कि उसका रुण्डसे मुण्ड जुदाहो ज़मीन में तड़फने लगा यह देख वह बोली कि ऐ बीर पुरुष ! तूने बड़ा उपकार किया यह कह कर फिर कहा कि न सब पहाड़ों में लाल होतेहैं न शहरोंमें सतवंते आदमी न हरएक बनमें चन्दन उपजता है न हर एक हाथी के

मस्तक में मोती होताहै फिर राजाने पूछा यह राक्षस किसवास्ते कृष्णचतुर्दशी को तेरे पास आया था वह बोली मेरे पिता का नाम विद्याधर है उसकी मैं पुत्री हूं सुन्दरी मेरा नामहै और यह नियत था कि मुझ विन मेरा बाप भोजन न करता एक दिन भोजनकी विरियां मैं घरमें न थी तब पिता ने मुझपर क्रोध कर मुझे शापदिया कि तुझे काली चौदश के दिन राक्षस गले से आनके लगाया करे यह सुनके मैं बोली पिता! शाप तो तुमने दिया अब मेरे ऊपर कृपा कीजिए उसने कहा महा बीरपुरुष जब उस राक्षसको मारेगा तब तू इस शापसे छूटेगी सो मैं उस शाप से छूटी और अब मैं अपने पिता को नमस्कार करने जाऊंगी राजा बोला जो तू मेरे उपकार को माने तो एकबार मेरे राज्य को चलके देख पीछे अपने पिताके दर्शनको जाइयो वह बोली कि अच्छा जो आपने कहा सो मुझे अङ्गीकार है फिर उसे साथ ले अपनी राजधानीमें आया ब्याहके बाजन बजनेलगे सारे नगरमें खबरहुई कि राजा आया तब घर२ बधाई मंगलाचार होनेलगे फिर तो सम्पूर्ण नगरके मङ्गलामुखी आनके दरबारमें मुबारकबादियां देनेलगे राजाने बहुतसा दान पुण्यकिया फिर कई एकदिन पीछे,वह सुन्दरीबोली महाराज!अबमैं अपने बापके यहां जाऊंगी राजाने उदास होकर कहा अच्छा सिधारो जब इसने राजाको उदास देखा तो कहा महाराज!मैं न जाऊंगी राजाने कहा किस वास्ते तूने अपने बापके यहां का जाना बन्दकिया वह बोली अब मैं मनुष्य की होचुकी और पिता मेरा गंधर्वहै अबमैं जाऊंतो मेरा अनादर करैगा इस लिये मैं नहीं जाती यह सुन राजा बहुत प्रसन्न हुआ और लाखों रुपये का दान पुण्य किया राजाके इस अहवाल के सुननेसे दीवान की छाती फटी और मरगया इसनी

बात कह बैताल बोला ऐ राजा ! किसलिये वह मंत्री मरगाया तब राजा बीरबिक्रमादित्यने कहा कि मंत्रीने देखा कि राजा तो ऐश करनेलगा और राज्य काजकी चिन्ता सब भुलादी प्रजा अनाथ हुई अब मेरा कहा कोई न मानेगा इसी चिन्ता से वह मरगया यह सुन बैताल फिर उसी बृक्ष पर जा लटका राजा फिर उसी तरहसे कांधे पर रख ले चला ॥ ११ ॥

बारहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा ! बीरबिक्रमादित्य ! चूड़ापुर नाम एक नगरहै वहां का चूड़ामणि नाम राजाथा जिस के गुरूका नाम देवस्वामी और उसके बेटेका नाम हरस्वामी था वह कामदेव के समान सुन्दरथा और शास्त्रमें बृहस्पति की बराबर और धन उसके कुबेर का सा था वह ब्राह्मण की बेटीको जिसका नाम लावण्यवती था ब्याह लाया उन दोनों में बहुत प्रीति हुई एक दिन गरमी के मोसममें रातके समय चौबारेकी छतपर दोनों अचेतपड़े सोते थे संयोगवश स्त्री के मुँहपरसे ओढ़नी सरकगई और एक गन्धर्व बिमानपर बैठा हवामें उड़ाहुवा कहीं जाता था अचानक उसकी दृष्टि इसपरपड़ी वह विमान को नीचे लाया और उस सोतीको बिमानपर रखकर ले उड़ा कितनेदेर के पीछे ब्राह्मणभी सोतेसे उठा तो देखता क्याहै कि स्त्री नहीं तब घबराया और वहां से उतरकर संपूर्ण घरको ढूंढ़ा जब वह वहांभी न मिली तो सारी नगरी की गली कूचा कूचा ढूंढ़ता फिरा परंतु कहीं उसे न पाया फिर अपने जीमें कहने लगा कौन उसे ले गया और कहां निदान जबकुछ बशनचलसका तो अन्तको लाचार हो पश्चात्ताप करताहुआ घर को आया और वहां उसे फिर दुबारा भी ढूंढा और न पाया जब उस बिन घरसूना दृष्टि आया तब

बहुत व्याकुल और बेकलीसे बेवशहो हायप्राणप्यारी हायप्राण-प्यारी कहके पुकारने लगा फिर उसके बियोगसे अतिव्याकुल हो गृहस्थी छोड़ बैरागले लँगोटी बांध बिभूति मल मालापहन नगरतज तीर्थयात्राको निकला नगर२ गांव गांव तीर्थ करता हुआ एक नगरमें दोपहर के समय जा पहुंचा जब भूखसे निपट लाचारहुआ तो ढांख के पत्तोंका दोना बना हाथमें ले एकब्राह्मण के घर जा उससे कहा कि मुझे भोजन भिक्षा दो जब प्रीति के बश आदमी होताहै तब उसे धर्मजाति और खाने पीनेका कुछ बिचार नहीं रहता और निरादर हो जहां पाता है तहां खाता है जब ब्राह्मणसे इसने भीख मांगी तब उसने इससे दोना ले घर में जा खीर से भर लादिया वहां एक बड़हरका वृक्ष था उसी जड़पर दोना रख सरोवर में मुंहहाथ धोनेगया और उस वृक्ष की जड़से कालानाग निकल उसदोने में मुंहसे गरलडाल चबागया तो वह दोना सम्पूर्ण विषसे भर-गया फिर यहभी हाथ मुंह धोकर आया पर उसे यह वृत्तान्त मालूम न था और भूखभी बहुत लगीथी आतेही खीरखाई और वोहीं उसे विषचढ़ा फिर इससे उस ब्राह्मण से जाकर कहा कि तैंनेमुझको विषदिया और मैं अब इसने मरूंगा इतना कह घूमकर गिरा और मरगया फिर उस ब्राह्मण ने इसे मुआ देख अपनी स्वकीया स्त्रीको घरसे निकाल दिया और कहा ब्रह्मह-त्यारी तू यहांसे जा इतनी कथा सुनबैताल बोला कि ऐ राजा! इनमेंसे ब्रह्महत्याका पापकिसे हुआ राजाने कहा सांपके मुंहमें तो विषहोताहीहै इससे उसे पापनहीं और उस स्त्री ने भी भूखाजानके भिक्षादी थी उसे भी पापनहीं और ब्राह्मणने भी अनजाने खीर खाई तिस्से उसे भी पापनहीं निदान इनमें से

जिसको कोई पाप लगावै वही पापीहै यह सुन बैताल फिर उसी तरुवर पर जा लटका राजा भी जा उसे उतार बांध कांधेपर रख वहांसे चला ॥ १२ ॥

तेरहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा! चन्द्रहृदयनाम नगरी है और उस जगहका रणधीरनाम राजा था उसकी नगरी में धर्मध्वज नाम एक सेठ था और उसकी बेटीका नाम शोभनीथा वह अतिसुन्दरी थी युवा उसकी दिन२ बढ़ती थी और रूप उसका पल२ अधिक होताथा संयोगवश उस नगरी में रातोंको चोरी होने लगी जब चोरों के हाथ से महाजनों ने बहुत दुःख पाया तब इकट्ठे हो राजाके निकट जाकर सबने कहा महाराज! चोरों ने नगर में बहुत उपाधि की है हम इस शहर में अब रह नहीं सक्के राजाने कहा जो हुआ सो हुआ परन्तु अब आगे दुःख न पावोगे मैं उनका यत्न करता हूं यह कह राजाने बहुतसे लोग बुलवा चौकी को भेज दिए और चौकी पहरे का ढब उनको बता दिया और हुक्म किया कि जहां चोरों को पावो बिना पूछे मार डालो लोग रातको नगर की रखवारी करने लगे इसपर भी चोरी होती थी तबफिर सम्पूर्ण साहूकारइकट्ठे होकर राजाके पासआये और विनयकी महाराज! आपने पहरुये भेजे तोभी चोरकम न हुये और नित्य चोरी होती है राजाने कहा इससमय तुम बिदाहो आजकी रातिसे नगरकी चौकी देने मैं निकलूंगा यह सुन के राजासे बिदाहो वे अपने २ घरगये और जब रातहुई तब राजा अकेला ढाल तलवारले प्यादे नगरी की रक्षा करनेलगा इतने में आगे जाके देखे तो एकचोर सामने से चलाआता है राजाने उसे देखकर पुकारा तू कौन है वह बोला कि मैं

चोरहूं फिर चोर ने कहा तू कौन है राजा ने कहा मैं भी चोरहूं यह सुन वह प्रसन्नहोके बोला आओ मिलकर चोरी करने चलें यह बात आपस में ठहरा राजा और चोर बातें करते हुये एक महल्ले में पैठे और कितने एक घरोंमें चोरी कर माल मताले नगर के बाहर निकल एक कुयें पर आये और उसमें उतर पाताल पुरीमें जापहुँचे वह चोर राजा को दरवाजे पर खड़ाकर धन दौलत अपने मंदिर में लेगया इतनेमें उसके घरमें से एक दासी निकली वह राजा को देखके कहने लगी महाराज ! तुम कहां इस दुष्टके साथ यहां आये अब भला इसी में है कि वह आने नहीं पावे और तुमसे जहां तक भागा जावे वहां तक भागो नहीं तो वह आते ही तुम्हें मारडालैगा राजा ने कहा मैं तो राह नहीं जानता किधर जाऊं तो उस चेरी ने बाट दिखादी और राजा अपने मंदिर को आया दूसरे दिन राजाने सब अपनी सेना साथले उस कुयेंकी राह पातालपुरी में जाकर चोरका संपूर्ण घरबार घेरलिया परंतु वह चोर किसी और राह से निकल उस नगरका मालिक जो देव था उसके पास गया और विनयकी कि एक राजा मेरे मारने को घरपर चढ़ आया है सो तुम मेरी इस समय सहायता करो नहीं तो तुम्हारी पुरीका बास छोड़ और नगर में जा बसता हूं यह सुन राक्षसने प्रसन्न होकर कहा तू मेरेलिये खाने को लाया है मैं तुझ से बहुत प्रसन्न हुआ यह कहकर जहां राजा कटक लिये हवेली घेरे हुये था वहां वह देव आ आदमियों को और घोड़ों को खाने लगा राजा उसदेव की सूरत देखकर भागा और जिन लोगों से भागागया वे तो बचे और बाकियों को देवने खा लिया निदान राजा अकेला भागा आता था कि चोरने आकर

ललकारा तू राजपूत होकर लड़ाईसे भागता है यह सुनते ही राजा फिर खड़ाहुआ और दोनों सम्मुख हो युद्ध करने लगे निदान राजा उसे बशकर मुशकें बांध नगर में लेआया फिर उसको नहलवा धुलवा अच्छे२ वस्त्र पहिना एक ऊंटपर बिठला ढँढोरिया साथकर सारे नगर में फेरने को भेजा और शूली उसके वास्ते खड़ी करने का हुक्म दिया इसमें शहर के लोगोंमें से जो उसे देखता था सो कहता था कि इसी चोरने सम्पूर्ण नगर लूटा है और अबराजा इसे शूली देदेगा जब धर्मध्वज सेठ की हवेली के नीचे वह चोर गया तब उस सेठकी बेटी ने ढँढोरा की आवाज सुन अपनी दासी से पूछा यह काहेकी डौंडी बजती है वह बोली जो चोर इसनगर में चोरी करताथा उसे राजा पकड़ लाया है अब शूली देगा यह सुन के देखने को वहभी दौड़ आई और चोरका रूप यौवन देखते ही मोहित होगई और अपने बापसे आकर कहा तुम इस समय राजाके पास जाओ और उस चोरको छुड़ा लाओ सेठ बोला जिस चोरने राजाका सम्पूर्ण नगर मूसा है और जिसके लिये सारा कटक कटा उसे मेरे कहेसे क्योंकर छोड़ेगा फिर उसने कहा जो तुम्हारे सर्वस्व दियेसे राजा उसे छोड़े तो तुरन्त तुम उसे छुड़ाय लाओ और जो वह न आवेगा तो मैं भी अपनी जान दूंगी यह सुन सेठ ने राजासे जाकर कहा महाराज! पांचलाख रुपये मुझसे लीजिये और इस चोर को छोड़ दीजिये राजाने कहा इस चोरने सारा नगर मूसा और सम्पूर्ण लशकर इसी के कारणसे नष्टहुआ इसे मैं किसी तरह से न छोडूंगा जब राजाने उसकी बात न मानी तो वह लाचार फिरकर अपने घरको आया और अपनी बेटीसे कहा जितना कहनेका धर्मथा मैंनेकहा परन्तु राजाने न माना

इतने अरसे में चोरको नगरी के फेरे दिलवाकर शूली पास ला खड़ा किया और चोरने उस बनिये की बेटीका अहवाल जो सुना तो पहिले खिलखिलाकर हँसा फिर डकरा डकरा रोनेलगा इतनेमें लोगोंने उसे शूली खैंच लिया और बनिये की बेटी उसके मरने की खबर पाकर सती होनेके लिये उसी जगहपर आई और चिता बनवा उस में बैठ उस चोरको शूली से उतार उसका शिर गोदमें रख जलनेको बैठी चाहे कि उसमें आग दिलवावे संयोग बश वहां एकदेवीका मन्दिरथा उसमें से तुरन्त देवी निकलकर बोली ऐ पुत्री! मैं तुष्टहुई तेरे साहस पर तू बर मांग वह बोली माता जो तू मुझसे तुष्टहुई है तो इस चोरको जीदानदे फिर देवी बोली इसी तरहसेहोवेगा यह कहकर पाताल से अमृतला चोरको जिलादिया इतनी कथा कह बैताल ने पूछा ऐ राजा! बतलाओ कि चोर पहिले किसकारण हँसा और पीछे किसलिये रोया राजाने कहा जिसवास्ते हँसा वहबाइसमैं जानताहूं और जिसवास्ते रोया वहभी मुझे मालूम है बैताल! यह सुन चोरने जीमें बिचारा कि मरनेके समय उसने मुझसे प्रीतिकी भगवान्की गति कुछ जानी नहींजाती कुलक्षनेकोदे लक्ष्मी, कुलहीनकोदे विद्या, मूर्खकोदे सुन्दरस्त्री पहाडपरबर्षावे बर्षा, ऐसी ऐसी बातें शोचकर हँसा फिर अपने मनमें बिचारा कि यह जो मेरे वास्ते अपना सर्वस्व देतीहै अब इसका मैं क्या उपकार करूंगा यह समझकर वह रोया यह सुन बैताल फिर उसी पेड़पर जालटका राजा फिर वहां गया और उसे खोल गठरी बांध कांधेपर रख लेचला॥ १३ ॥

चौदहवीं कहानी॥

बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! कुसुमावती नाम एक

नगरी है वहांका सुबिचार नाम राजाथा जिसकी बेटी का नाम चन्द्रप्रभाथा जब वह बरयोग्यहुई तब एकदिन बसन्तऋतुमें सखियों को साथले बागकी सैरको चली वहां जनानेके बन्दोबस्तके पहिले एक ब्राह्मणका लड़का बर्षबीस एकका अतिसुन्दर मनस्वी नाम कहीं से फिरताहुआ उस बागमें आ एक वृक्षके नीचे ठंढी छांह पाकरसोरहा था राजाके लोगोंने आ उसबाड़ीमें बन्दोबस्त किया पर उस ब्राह्मणके बेटेको किसीने न देखा और वह उस वृक्षके नीचे सोतारहा और राजकन्या अपने लोगोंसमेत बागमें आई और सहेलियोंके साथ सैर वो तमाशा देखती हुई वहां आई जहांवह ब्राह्मण का बेटा सोताथा इसका वहां पहुंचना कि वहभी लोगों के पाँव के आहट से उठबैठा दोनोंकी चार नज़रें हुईं और कामदेव के ऐसे बश हुये कि उधर ब्राह्मण का लड़का मूर्च्छा सा भूमिपर गिरा और इधर बेसुध हो राजकन्या के पांव कांपने लगे पर वोहीं उसे सखियोंने हाथों हाथ थांभलिया निदान चंडोलमें लिटा घरको लेआईं और यहां ब्राह्मणका लड़का ऐसा बेसुध पड़ा था कि अपने तनमनकी कुछ खबर न रखता था इस अरसेमें दो ब्राह्मण शशी और मूलदेव नाम कामरू देशसे बिद्या पढ़ेहुये वहां आनिकले मूलदेव ने उस ब्राह्मण के लड़केको पड़ा देख कहा ऐ शशी! ऐसा बेसुध यहां क्यों पड़ाहै वह बोला नायकाने भौंहकी कमानसे नयनके तीर मारे हैं इससे यह बेसुध पड़ा है मूलदेवने कहा इसे उठाना चाहिये उसने कहा तुझे उठानेसे क्या प्रयोजन है उसने शशी का कहना न माना और उसे पानी छिड़ककर उठाया और पूछा कि तेरी क्या दशा हुई है वह ब्राह्मण बोला दुःख उससे कहिये जो दुःख को दूरकरे और जो सुनके दूर न करसके उससे

कहने से क्या लाभहै वह बोला अच्छा तू अपनी पीर हमारे आगेकह हम दूरकरेंगे यह सुनके वह बोला कि अभी राज कन्या सखियों को साथ लिये आई थी सो उसके देखने से मेरी यह गति हुई है जो वह मिलेगी तो मैं अपना जीव रखूंगा नहीं तो प्राण तजूंगा तब वह बोला हमारे स्थान पर चल उसके मिलने का हम यत्न करदेंगे नहीं तो तुझे बहुतसा धन देंगे तब मन-स्वी बोला कि संसारमें भगवान् ने बहुतरत्न पैदाकिये हैं पर स्त्री रत्न सबसे उत्तम है और उसीके लिये मनुष्य धन की इच्छा करते हैं जब नारीको त्यागा तब धन लेके क्या करेंगे जिनको स्वरूप-वान् स्त्री न मिले उनसे संसारमें पशु भले हैं धर्मका फलहै धन, धनका फलहै सुख,और सुखका फलहै नारी और जहां नारी नहीं तहां सुखकहां यह सुनके मूलदेव बोला जो तू मांगेगा सो दूंगा तब उसने कहा ऐ ब्राह्मण! मुझे वही कन्या दिलादे फिर मूलदेव ने कहा अच्छा तू हमारे साथ चल तुझे वही कन्या दिलादेंगे निदान मूलदेव बहुतसी धीर्य्य देकर उसे अपने घर लेगया और वहां जाकर दोगुटके बनाये एक गुटका उस ब्राह्मणको देकर कहा जब इसे मुँहमें रक्खेगा तब तू बारह बर्ष की कन्या होजायगा और जिससमय तू इसे मुंहसे निकालेगा तो पुरुष ज्यों का त्यों होजायगा फिर कहा तू अपने मुंह में रख उसने जो अपने मुह में रक्खा तो बारह बर्षकी कन्या होगया और दूसरे गुटके को जो इसने मुंहमें रक्खा तो आप अस्सी बर्षका डोकरा होगया और उस कन्या को लिये हुये राजाके यहां गया राजाने ब्राह्मण को देख दण्डवत्कर आसन बैठने को दिया और एक आसन उस लड़की को भी दिया तब ब्राह्मणने एक श्लोक पढ़ अशीश दी कि जिसकी शोभा तीनों लोकमें फैलरही है और जिनने

बामनहो बलिको छला और बानर साथले समुद्रका पुलबांधा और जिनने पर्वत हाथपर रख इन्द्रसे ब्रजके ग्वालबाल बचाये सोई वासुदेव तुम्हारी रक्षाकरैं यह सुनकर राजाने पूछा महाराज ! आप कहांसे पधारे मूलदेव ब्राह्मण बोला कि गङ्गा पारसे मैं आयाहूं और वहीं मेरा घर है मैं अपने बेटेकी बहू लेने गया था पीछे मेरे गांवमें भागड़ पड़ी सो मैं नहीं जानता कि ब्राह्मणी और मेरापुत्र भागके कहांगये और अबमैं इसको साथ लियेहुये किसतरह ढूंढूंगा इससे उचित यहहै कि आप के पास इसे छोड़जाताहूं जबतक कि मैं न आऊं तबतक इसे यत्नसे रखना यहबात ब्राह्मणकी सुन राजा अपने चित्तमें चिंता करनेलगा कि अतिसुंदरी तरुण स्त्री को मैं किसतरह रक्खूं और जो नहीं रखता तो यह ब्राह्मण शापदेगा तो मेरा राजभंग होगा यह अपने जीमें राजा बिचारकर बोला महाराज ! जो आपने आज्ञा की सो मुझे अंगीकार है फिर राजाने अपनी पुत्री को बुलाकर कहा बेटी ! इस ब्राह्मण की बहूको लेजा के बहुत यत्नसे रक्खो और सोते जागते खाते पीते चलते फिरते क्षणभर अपने पाससे इसे जुदा मत कीजिये यह सुन राजकन्या उस ब्राह्मण की बहू का करधर अपने मंदिर में लेगई और रातके समय दोनों एक सेज पर सोकर आपसमें बातें करनेलगीं बातें करते२ ब्राह्मण की बहू बोली हे राजकन्या ! तू किस दुःखके मारे अति दुर्बल होरहीहै सो मुझसे कह राजपुत्री बोली एकदिन बसन्तऋतु में सखियों को साथले मैं बागकी सैरको गईथी वहांपर एक ब्राह्मण अतिसुन्दर कामदेव के समान मैंने देखा और उसकी मेरी चार नज़रें हुईं उधर वह बेहोश हुआ इधर मैं बेसुध हुई तब सखियां मेरी अवस्था देख घरको ले आईं और उसका नाम ठांव मैं

कुछ नहीं जानती मेरी आंखों में उसकी सूरत समारहीहै और मुझे खाने पीने की भी कुछ रुचि नहीं इसी पीर से मेरे शरीर की यह दशा हुईहै यह सुनके वह ब्राह्मण की बहूबोली जो तेरे प्रीतमको तुझसे मिलादूं तो तू मुझे क्यादे राजकन्या बोली कि सदा तेरी दासी रहूंगी यह सुनके वह गुटका अपने मुंहसे निकाल फिर पुरुष होगया और यह उसे देखकर शरमाई फिर उस ब्राह्मणके लड़के ने गंधर्व बिवाह की रीति से उसके साथ अपना ब्याह किया और नित्य प्रति उसी तरह रातको पुरुष होता दिन को स्त्री बन रहता निदान छःमहीने पीछे राजकन्या के गर्भरहा एक दिनका वृत्तान्त है कि राजा सारे कुटुम्ब को साथ लेकर दीवान के घर ब्याह में गया वहां मंत्री के बेटे ने उसे स्त्री वेषधारी ब्राह्मण के लड़के को देखतेही मोहित होगया और अपने एक मंत्री के आगे कहने लगा जो यह नारी मुझे न मिलेगी तो मैं अपना प्राण तजूंगा इस अरसे में राजा न्योता खा कुनबे समेत अपने मंदिर को आया पर मंत्री के बेटे की उस के बिरहकी डाहसे निपट कठिन दशाहुई अन्न पानी छोड़ दिया यह गति देख उस के मित्र ने जाकर मंत्री से कहा और दीवान ने यह अहवाल सुन जाकर राजासे कहा महाराज ! उस ब्राह्मण की स्त्री की प्रीति में मेरे बेटे की बुरी दशाहै खाना पीना छोड़ दिया है जो आप कृपाकरके ब्राह्मणी देवें तो उसकी जान बचे यह सुन राजा क्रोधकरके बोला अरे मूर्ख ! ऐसी अनीति करना राजाओंका धर्म नहीं है एक मनुष्य की थाली हो और बिना आज्ञा उसकी दूसरे को देना उचितहै जो तू मुझसे यह बात कहता है यह सुनके प्रधान निराशहो अपनेघरको आया पर उस लड़के का दुःख देखकर उनने भी अन्नजल छोडदिया जबकि तीन

दिन दीवान को बिना अन्नजलके बीते तब कारबारियों ने इकट्ठे हो कर राजासे जाकर बिनयकी महाराज ! मंत्रीका पुत्र अब तब हो रहा है और उस के मरनेसे दीवान भी न बचेगा और दीवान के मरने से राज्य काज न चलेगा भलाई यह है कि जो हम बिनय करें सो अंगीकार हो यह सुनके राजाने आज्ञादी कि कहो तब उनमें से एकमनुष्य बोला महाराज ! उस बूढ़े ब्राह्मण को गये बहुत दिन हुये कि फिरा नहीं भगवान् जानै मरगया या जीता है इस से उचित यह है कि ब्राह्मणकी बहूको मंत्री के बेटेको दे अपना राज्य स्थिर रखिये और कदाचित् आवै तो गांव धन दीजिये यदि इस पर राजी न होगा तो उसके लड़के का ब्याह कर बिदा कीजियेगा यह बात सुन राजाने उस ब्राह्मण की बहूसे बुलाकर कहा तू मेरे मंत्रीके पुत्र के घर जा वह बोली कि स्त्रीका धर्म्म नष्ट होता है अन्यपति पाके और ब्राह्मणका धर्म जाता है राजा की सेवा करनेसे और गाय दूरकी चराई से खराब हो जाती है और धन जाता है अधर्म करने से इतना कह फिर बोली जो महाराज ! तुम मुझे मंत्री के बेटेको देते हो तो उससे यह बात ठहरा लीजिये कि जो कुछ उससे मैं कहूँ सो वह करे तब मैं उसके घरजाऊँगी राजाबोला कहो कि वह क्याकरे उसनेकहा महाराज ! मैं ब्राह्मणी वह क्षत्री इससे उचित यह है कि वह पहले सब तीर्थ यात्रा कर आवे तब मैं उसके साथ घर करूं यह बात सुनके राजाने मंत्रीके बेटेको बुलाकर कहा पहले तू तीर्थयात्रा कर आ तब उस ब्राह्मणी को तुझे देवेंगे राजा की बात सुन दीवान के बेटेने कहा महाराज ! वह मेरे घर जाबैठे तो मैं तीर्थ को जाऊँ यहबात सुनराजा ने ब्राह्मणीसे कहा जो तुम पहले उसके घरमें जाके रहो तो वह

तीर्थयात्रा को जावे वह सुन लाचारहो राजाके कहने से ब्राह्मणी उसके घरमें जा रही तब प्रधानके पुत्रने अपनी स्त्री से कहा तुम दोनों प्रसन्नता पूर्वक सम्मत कर रहना और आपस में किसी तरहका झगड़ा लड़ाई न करना और बिराने घर कभी न जाना इतनी सीखदे वहतो तीर्थयात्राको गया और इधर उसकी बहू सौभाग्यसुन्दरी नाम ब्राह्मणकी बहूको अपने साथले एक बिछौनेपर रातको लेटीहुई बातें इधर उधरकी करनेलगी कितनी एक देरके बाद उस दीवानके पुत्रकी बहूने यह बातकही कि अयसखी! इस समय तो मैं बिरहसे जली जातीहूं पर मतलब मेरा किस तौर हासिल हो दूसरी बोली यदि तेरे मतलब को मैं करलाऊँ तो तू मुझे क्या दे उसने कहा सदा तेरे आगे हाथ जोड़े आज्ञाकारी रहूं तब यह अपने मुंहसे गुटके को निकाल पुरुष बनगया औइ नित्य प्रति इसी तरह से रातको पुरुष बनता दिनको स्त्री फिरतो इन दोनोंमें बड़ी प्रीतिहुई निदान इसी तरहसे छः महीने बीते और मंत्री का पुत्र आ पहुँचा उधर उसके आने की खबर सुन मंगलाचार करने लगे और इधर ब्राह्मण की बहूने गुटका मुंहमें से निकाल पुरुषबन खिड़की की राह महल से निकल अपनी राहली फिर कितनी एक देर में उस मूलदेव ब्राह्मण के पास पहुँचा कि जिसने इसे गुटका दिया था और उससे सब अपनी आदि अन्त की व्यवस्था कही तब मूलदेव ने सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनकर गुटका इससे ले अपने साथी शशीनाम ब्राह्मण को दिया और दोनों ने गुटके अपने २ मुँहमें रखलिए एक बूढ़ा बनगया और एक बीस बरसका फिर ये दोनों राजाके यहां गए राजाने देखतेही दण्डवत कर उनके बैठनेको आसन दिए और इन्होंने भी अशीश दी राजाने इनकी कुशलक्षेम पूछ मूलदेवसे कहा कि इतने दिन

तुम्हें कहां लगे ब्राह्मण बोला महाराज इसी पुत्र के ढूंढने को गया था सो इसे खोजकर आपके पास लेआया हूं अब इसकी बहूको दो तो मैं बहू बेटेको अपने घर लेजाऊं तब राजाने ब्राह्मण के आगे वह वृत्तान्त कह सुनाया ब्राह्मणने सुनतेही अतिकोप कर राजासे कहा यह कौनसा व्यवहार है जो तुमने मेरे बेटे की बहू औरको दी अच्छा जो तुमने चाहा सो किया पर अब मेरा शापलो तब राजा बोला कि देवता तुम क्रोध मत करो जो तुम कहो सो मैं करूं ब्राह्मण बोला अच्छा जो मेरे शाप से डरकर मेरा कहा करते हो तो तू अपनी पुत्री मेरे लड़के को व्याह दे यह सुन राजा ने एक ज्योतिषी को बुलाकर शुभ लग्न मुहूर्त्त ठहरा अपनी पुत्री उस ब्राह्मण के लड़के से व्याह दी फिर यह वहांसे राजकन्या को दान दहेज समेत ले राजा से बिदा हो अपने गांवमें आया यह खबर सुन वह मनस्वी ब्राह्मण भी वहां आ उससे झगड़नेलगा कि मेरी स्त्री मुझे दे शशीनाम ब्राह्मण बोला मैं दश पञ्चों में व्याह करलाया हूं यह स्त्री मेरी है उसने कहा इसे तो मेरा गर्भ रहा तेरी किस तरहसे यह स्त्री होगी और आपसमें बिवाद करनेलगे मूलदेवने इन दोनों को बहुत सम-झाया परन्तु किसीने उसका कहा न माना इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा बीर बिक्रमादित्य कहो वह भार्य्या किस की हुई राजाने कहा वह स्त्री शशी ब्राह्मणकी हुई बैताल बोला गर्भ उस ब्राह्मणका स्त्री इसकी किसतरह हुई राजा ने कहा कि उस ब्राह्मणका पेट रखवायाहुआ किसीको मालूम न हुआ और उसने दश पञ्चोंमें बैठके व्याह किया इसलिये इसकी स्त्री ठहरी और वह लड़का भी इसीकी क्रियाकर्मका अधिकारी होगा यह बात सुन बैताल उसी रूखमें जा लटका फिर राजा गया और बैतालको बांध कांधेपर रख लेचला ॥ १४ ॥

पंद्रहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा ! हिमाचल नाम एक पर्वत है तहां गन्धर्वोंका नगरहै और वहांका राज्य जीमूतकेतु करताथा एक समय उसने पुत्रके हेतु कल्पवृक्ष की बहुत सी पूजा की तब कल्पवृक्ष प्रसन्नहो बोला ऐ राजा ! तेरी सेवा देख मैं सन्तुष्टहुआ जो तू चाहे सो वर मांग राजाने कहा कि एक पुत्र मुझे दो जो मेरा राज्य और नाम रहै उसनें कहा ऐसाही होगा कितनेदिनों के बाद राजाके बेटा हुआ उसे बड़ी खुशीहुई और बहुतसा पुण्य कर ब्राह्मणों को बुला उसका नामकरण किया ब्राह्मणों ने उसका नाम जीमूतबाहन धरा जब वह बारह वर्षकाहुआ तब उसके पिताने बड़ी धूमसे उसका ब्याह किया जीमूतबाहन शिवकी पूजा करनेलगा और शस्त्र सब पढ़के बड़ाही ज्ञानीध्यानी साहसी शूरवीर धर्मात्मा पण्डित हुआ उससमय उसकी बराबर कोई न था और जितने उसके राज्यमें लोगथे वे सब अपने २ धर्म में सावधान थे जब वह जवान हुआ तो उसने भी कल्पवृक्षकी बहुत सेवा की तब कल्पवृक्ष ने प्रसन्नहो उससे कहा जिस बात की तुझे इच्छाहो सो मांग मैं तुझे दूं जीमूतबाहन बोला जो तुम मुझसे प्रसन्न हुये हो तो मेरी सब प्रजाका दरिद्र दूर करो और जितने लोग मेरे राज्यमें हैं सब माल दौलत से बराबर होजावें तब कल्पवृक्षने बरदिया तो सब लोगों के पास इतना धन होगया कि कोई किसीका हुक्म न मानताथा और किसी का काम न करता जब उस राजा के लोग ऐसे होगये तब जो भाई बंधु उसराजा के थे वे आपस में बिचार करने लगे कि बाप बेटे तो दोनों धर्मके बशहुये और लोग इनका हुक्म नहीं मानते इससे उत्तम यह है कि इन दोनों को पकड़ करके

क़ैद कीजिये और राज्य इनका छीन लीजिये निदान राजा तो उन्हीं की तरफ़से ग़ाफ़िल था और उन्होंने आपस में मनसूबा बांध फ़ौजले राजाका मन्दिर जा घेरा जब वह ख़बर राजा को पहुंची तब राजा ने अपने बेटेसे कहा अब क्या करें राजकुमार बोला महाराज आप यहां बिराजिये आपके धर्मसे अभी जाके मारलेता हूं राजाने कहा ऐ पुत्र ! यहशरीर अनित्य है और धन भी स्थिर नहीं है मनुष्य जन्मा तो मृत्यु भी उसके साथही है इससे अब राज्य छोड़ धर्मका कार्य्य किया चाहिये ऐसेशरीर के कारण और इस राज्यके वास्तेमहापाप करना उचित नहीं क्योंकि राजायुधिष्ठिर भी महाभारत करके पीछे पछताये थे यह सुनके उसके बेटेने कहा अच्छा राज्य अपना गोतियों को दीजिये और आप चलके तपस्या कीजिये यहबात ठहराय भाई भतीजों को बुलवा राज्य दे दोनों बाप बेटे मलयाचल पर्वतके ऊपरगये और वहांजा कुटी बना रहने लगे जीमूतबाहनसे और एक ऋषिके बेटेसे मित्रता हुई एकदिन उस पर्वतके ऊपर राजा का बेटा औ ऋषिका पुत्र दोनों सैरके वास्ते गये वहां भवानी का मन्दिर दृष्टि आया उस मन्दिर में एक राज्यकन्या बीन लिये हुये देवी के आगे गारही थी उस कन्याकी और जीमूतबाहन की चार नज़रें हुईं और दोनों की लगन लगगई पर राजकन्या मनमार लाज की मारी अपने घरको पधारी और इधर यह भी उस ऋषिके बेटेकी शर्मके मारे अपने स्थान पर आया वह रात उन दोनों की बड़ी बेकलीसे कटी प्रभातके होतेही उधर से राजकन्या देवी के मन्दिरको गई औ इधर से राजकुमारने भी जाते देखा कि राजकन्या जाती है तब इसने उसकी सखी से पूछा यह किसकी कन्या है सखी ने कहा मलयकेतु राजा की पुत्री है मलयावती

इसका नाम है और अभी कुमारी है यह कह फिर सखीने इस राजपुत्र से पूछा कहो सुन्दरपुरुष तुम कहां से आये हो तुम्हारा क्या नाम है यह बोला विद्याधरों का राजा जीमूतकेतु नाम है तिसका मैं सुत हूं और जीमूतबाहन मेरा नाम है राज्य के भंग होने से पितापुत्र हम दोनों यहां आनके रहेहैं फिर सखीने यह सुनकर सब बातें राजकन्या से कहीं यह सुन राजकन्या अपने जीमें बहुत दुःखपाय घरको आई और रातको चिन्ता करके सो-रही पर यह दशा उसकी देख सखीने वह वृत्तान्त उसकी माता के आगे प्रकट किया रानीने सुनकर राजाके आगे वर्णनकिया और कहा महाराज पुत्री आपकी वरयोग्य हुईहै इसका वर क्यों नहीं ढूँढ़ते यह सुनके राजाने अपने जीमें चिन्ताकर उसीसमय मित्राबसु नाम अपने पुत्रको बुलाकर कहा बेटा अपनी बहिन का वर ढूँढ़लाओ तब वह बोला कि महाराज गन्धर्वोंका राजा जीमूतकेतु नाम तिसका पुत्र जीमूलबाहन नाम राज्य छोड़ पिता पुत्र दोनों सुनाहै कि यहां आए हैं यह सुन मलयकेतु राजाने कहा यह पुत्री जीमूतबाहनको दूँगा इतना कह बेटेको आज्ञा दी कि पुत्र जीमूतबाहन राजकुमार को राजाके पास से जाकर बुला लाओ मित्राबसु राजाका हुक्म पाकर उसीमकान पर गया और वहां जाकर उसके पिता से कहा अपने पुत्र को हमारे साथ करदो कि हमारे पिताने कन्यादान देनेको बुलाया है यह सुनके राजा जीमूतकेतु अपने बेटे को साथ कर दिया और वह तब यहां आया मलयकेतु राजाने उसका गन्धर्वविवाह करदिया जब इसका ब्याह होचुका तब दुलहिनको और मित्रा-बसुको अपने स्थानपर लेकर आया फिर इन तीनोंने राजा को दण्डवत् की और राजाने भी उन्हें आशीश दी वह दिन तो यो-

हीं बीता दूसरे दिन प्रातःकालको उठतेही दोनों राजकुमार मलयागिरि पर्वतपर फिरनेको गए वहां जाकर जीमूतवाहन क्या देखता है कि एक सफेद ढेर ऊँचासा है तब इसने अपने साले से पूछा भाई यह धौला२ ढेर कैसा दृष्टि आताहै वह बोला पाताल लोकसे करोड़ों नागकुमार वहां आतेहैं तिन्हें गरुड़ आन के खाताहै यह उन्हींके हाड़ोंका ढेरहै यह सुनके जीमूतवाहन ने सालेसे कहा मित्र तुम घर जाके भोजन करो क्योंकि मैं इस समय अपनी नित्य पूजा करता हूं मेरे पूजा करने का अब समय हुआहै यह सुनके वहतो गया और जीमूतवाहन आगे को ज्यों बढ़ा त्यों रोनेकी आवाज आनेलगी उसी आवाजकी ध्वनिपर चला २ वहां जो पहुँचा तो क्या देखता है कि एक बुढ़िया दुःखसे व्याकुलहो रोतीहै उसके पास जा पूछा हे माता! तू किस कारण रोतीहै तब वह बोली शंखचूड़ नाम नाग जो मेरा बेटाहै तिसकी आज बारी है उसे गरुड़ आ खावेगा इस दुःखसे मैं रोती हूं इसने कहा हे माता मत रो तेरे पुत्रके बदले मैं अपना प्राण दूंगा बुढ़िया बोली बेटा ऐसा मत कीजिये तुही मेरा शंखचूड़ है यह कहती थी कि शंखचूड़ भी आन पहुँचा और उसने सुनके कहा ऐ महाराज! मुझसे दरिद्री बहुतसे पैदा होतेहैं और मरते हैं पर आपसे धर्मात्मा दयावन्त संसारमें घड़ी घड़ी पैदा नहीं होते इससे आप मेरे पलटे अपना जी न दीजिए क्योंकि आपके जीते रहनेसे लाखों आदमियोंका उपकारहोगा और मेरा जीना मरना दोनों बराबर है तब जीमूतवाहन बोला कि यह सत्पुरुषों का धर्म नहीं है जो मुँहसे कहकर न करै तू जहांसे आयाहै वहींको जा यह सुन शंखचूड़ तो देवीके दर्शन को गया और आकाशसे गरुड़ उतरा इतनेमें राजकुमार देखता

क्या है कि पांव तो उसके चार २ बांस बराबर हैं और ताड़सी लम्बी चोंच है पहाड़ के समान पेट फाटक के मानिन्द आंखें और घटासे बार एकाएकी चोंच पसार राजपुत्र पर दौड़ा पहले राजपुत्रने अपने तईं बचाया पर दूसरी बार वह चोंचमें रख इस को लेउड़ा और चक्कर मारनेलगा इतने में एक बाजूबन्द कि उसके नगपर राजा का नाम खुदाहुआ था वह खुलकर लोहू भरा राजकन्या के सन्मुख गिरा वह उसको देखकर मूर्च्छा खा गिरपड़ी जब एक घड़ीके बाद चेती तो उसने सब वृत्तान्त अपने माता पिताको कहला भेजा वे यह बिपत्ति सुनकर आए और गहना रुधिर भरा देख रोये और तीनों आदमी ढूँढ़नेको निकले कि रास्ते में इन्हें शंखचूड़ भी मिला और उनसे बढ़कर अकेला वहां गया जहां राजकुमारको देखाथा और पुकार २ कहनेलगा ऐ गरुड़ छोड़दे २ यह तेरा भक्ष्य नहीं शंखचूड़ मेरा नाम है मैं तेरा भक्ष्य हूं यह सुनकर गरुड़ घबड़ाकर गिरा और अपने जी में शोचा कि ब्राह्मण या क्षत्री मैंने खाया यह क्या किया फिर इस राजपुत्रसे कहनेलगा ऐ पुरुष ! सच कह किसलिए अपना जी देताहै राजकुमार बोला ऐ गरुड़ वृक्ष छाया करतेहैं औरोंके ऊपर और आप धूप में बैठे फूलते फलतेहैं पराये वास्ते अच्छे पुरुषोंका और वृक्षोंका यही धर्महै जो यह देह औरोंके काम न आवे तो इस शरीरसे क्या प्रयोजन है दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि ज्यों २ चन्दनको घिसते हैं त्यों २ दूनी २ सुगन्ध देता है और ज्यों २ छील २ काट २ टुकड़े करते हैं त्यों २ ऊख अधिक २ स्वाद देती है ज्यों२ कंचनको जलातेहैं त्यों २ अति सुन्दरहोता जाताहै उत्तम लोग जो हैं सो प्राण जानेसे भी अपना स्वभाव नहीं छोड़ते उन्हें किसीने भला कहा तो क्या और बुराकहा तो

क्या जो दौलत रही तो क्या जो न रही तो क्या अभी मरे तो क्या और मुद्दत के बाद मरे तो क्या जो मनुष्य न्यायकी राह से चलतेहैं कुछहो और राहपर पांव नहीं रखते तो क्या हुआ जो मोटे हुए या दुबले निदान जिसके शरीर से उपकार न हो उसका जीना निष्फलहै और बिराने अर्थ जिसका जीवहै उन्हों का जीना सुफल है यों तो कुत्ता कौआ भी अपना तनपालता है जो ब्राह्मण गौ मित्र स्त्री के वास्ते अथवा औरों के वास्ते जी देतेहैं सो निश्चय सदा बैकुण्ठवास करतेहैं गरुड़ बोला जग में सब अपने प्राणकी रक्षा करतेहैं और अपना जी दे दूसरे के जी के बचानेवाले संसारमें बिरलेही होतेहैं यह कह गरुड़ बोला वर मांग मैं तेरे साहसपर सन्तुष्ट हुआ यह सुनके जीमूतबाहन ने कहा हे देव जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्न हुएहो तो अब नागोंको न खाओ और जो खायेहैं उन्हें जिलादो यह सुन गरुड़ने पाताल से अमृत लाकर सर्पोंके हाड़ोंपर छिड़का कि फिर वे जी उठे और इससे कहा ऐ जीमूतबाहन मेरे प्रसादसे तेरा गयाहुआ राज्य फिर तुझे मिलेगा यह वर दे गरुड़ अपने स्थान पर गया और शंखचूड़ भी अपने धाम गया और जीमूतबाहन भी वहां से चला कि राहमें उसका ससुर और सासु और स्त्री मिलीं फिर उन समेत अपने बापके पास आया जब यह अहवाल सुना तो उसके चचा और चचेरे भाई और सारे कुटुम्ब के लोग मिलने को आए और पावों पड़ इन्हें लेजा राजपर बिठाया इतनीकथा कह बैताल ने पूछा ऐ राजा! इनमें से सत किसका अधिक हुआ राजा बीरबिक्रमादित्य बोला शंखचूड़ का बैताल ने कहा किस तरह राजा ने कहा गयाहुआ शंखचूड़ फिर जी देने को आया और गरुड़के खानेसे इसे बचाया बैताल बोला कि जिस

ने पराए लिए अपनी जान दी उसका सत् क्यों न अधिकहुआ राजाने कहा जीमूतवाहन जाति का क्षत्री है उसे जी देने का अभ्यास होरहा है इससे उसे जान देना कुछ कठिन न मालूम दिया यह सुन बैताल फिर उसी पेड़ में जा लटका और राजा वहां जा उसे बांध कांधेपर रख लेचला ॥ १५ ॥

सोलहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐराजा वीरविक्रमादित्य ! चन्द्रशेखरनाम एक नगरहै वहांका रहनेवाला रत्नदत्त सेठथा उसकेएक बेटीथी उसका नाम उन्मादिनीथा जबवह नवयौवना हुई तब उसके बापने वहांके राजासे जाकर कहा महाराज ! मेरे घरमें एक कन्या है जो आपको उसकी चाहहो तो लीजिये नहींतो मैं और किसी को दूं यहसुन राजाने दो तीन प्राचीन दासोंको बुलाकर कहा इससेठकी पुत्रीकेलक्षण देखआओ वेराजाकी आज्ञासे सेठकेघर आये और उसलड़कीकारूप देख सभी मोहितहुये रूप ऐसाथा मानों अँधेरेघरका उजालाहै आंखें मृग कीसी, चोटीनागिनसी, भौहेंकमान सी, नाककीरकी सी, दांतकीबत्ती सी मोतियोंकी सी लड़ी, ओठकुँदरूकेमानिन्द, गलाकपोतकासा, कमरचीतेकीसी, हाथपांवकोमलकमलसे, चन्द्रमुखी, चम्पकवदनी, कोकिलबयनी जिसकेरूपकोदेखइन्द्रकी अप्सराभी लजाई इसप्रकारकी सुंदरी सब सुलक्षण भरी देखी उन्होंने आपसमें विचारकिया कि ऐसी जो नारी राजाके घरमें जायगी तो राजा इसके आधीन होवेगा और राजपाट की चिन्ता कुछ न करेगा इससे भला यह है कि राजासे कहिए यह कुलक्षणी है आपके योग्य नहीं यह विचार कर वहां से राजा के पास आकर उन्होंने यह निवेदन किया महाराज उस कन्या को हमने देखा वह आपके योग्य नहीं है

यह सुनके राजाने सेठसे कहा मैं ब्याह न करूंगा फिर सेठने अपने घर आ क्या कामकिया कि बलभद्र जो राजा का सेनापति था उसके साथ अपनी पुत्रीका बिवाह करदिया वह उसके घर में रहनेलगी एक दिनका हाल है कि राजाकी सवारी उस राह से निकली और वहभी उस समय शृंगार किये अपने कोठेपर खड़ी थी संयोगबश राजाकी और उसकी चार नज़रें हुईं राजा अपने मनमें कहनेलगा यह देवकन्या है या अप्सरा है या नर-कन्या है निदान उसका रूप देख मोहित होगया और वहांसे निपट बेक़रार हो अपने मन्दिरको आया तो राजाका मुँह देख द्वारपाल बोला महाराज! आपके शरीरमें क्या व्यथाहै राजा ने कहा आज मैंने आतेहुए बाटमें एक कोठेपर सुन्दर स्त्री देखी है मैं नहीं जानता हूं कि वह देवकन्या है या परी है अथवा नर-कन्याहै कि उसके रूप ने एकाएक मेरा मन मोह लिया इससे बेकल हूं यह सुनके दरवान ने विनय की! महाराज उसी सेठ की लड़की है जो आपका सेनापति बलभद्र है वह उसे ब्याह लाया है राजाने कहा मैंने जिन लोगोंको लक्षण देखने भेजाथा उन्हों ने हमसे छलकिया यह कह राजाने चोपदार को आज्ञा दी कि उन्हें जल्दी लेआओ राजाकी यह आज्ञा पा चोपदार उन्हें बुला लाया जब वे राजाके सन्मुख आये तो राजाने कहा मैंने जिस लिए तुम्हें भेजाथा और जो मेरी इच्छाथी सो तुमने नकी और अपने जीसे एकबात झूठी बनाकर मुझे उत्तरदिया और आज मैंने अपनी आंखोंसे उसे देखा वह ऐसी सुन्दर नारी सब गुण पूरीहै कि इस समय उससी मिलनी कठिनहै यह सुनके उन्होंने कहा महाराज! जो आप कहतेहैं सो सच है पर हमने उसे कुल-क्षणी जिसवास्ते हुजूरमें विनय की सो वह मुद्दा आप सुनिए

आपसमें हमने यहविचारा कि ऐसी सुन्दर स्त्रीजो महाराजके घर में जायगी तो महाराज देखतेही उसके वशहोंगे और राजकार्य्य सब छोड़देंगे तो राज्य भंगहोगा इस भयसे हमने ऐसा बनाकर कहाथा यह सुन राजा ने उन्हें तो कहा तुम सच कहते हो पर उसकी यादमें राजाको निपट बेचैनी थी और सब लोगोंपर राजा की बेकरारी प्रकटथी इतने में बलभद्र भी आ पहुँचा और उसने हाथजोड़ राजाके सामने खड़ेहोकर विनय की हे पृथ्वीनाथ! मैं आपका दासहूं यह आपकी दासीहै और उसके हेत आप इतना कष्टपावें इससे महाराज! आप आज्ञा दीजिये कि वह हाजिरहो यहबात सुन राजा बहुत क्रोध करके बोला बिरानी स्त्री के पास जाना बड़ा अधर्महै यह बात क्या तूने कही क्या मैं अधर्मी हूं जो अधर्म करूं बिरानी स्त्री माताके समानहै और बिराना धन माटीके बराबर है सुनो भाई जैसा अपना जी आदमी समझे वैसाही सबका जी समझे फिर बलभद्र बोला वह मेरी दासी है जब मैंने आपको दी फिर बिरानी स्त्री क्योंकर हुई राजाने कहा जिस कामके करनेसे संसारमें कलंक लगे सो काम मैं न करूंगा फिर सेनापति ने विनय किया महाराज! उसे मैं घर से निकाल और जगह रख वेश्याकर आपके पास लाऊंगा तब राजाने कहा जो तू सतीनारीको वेश्या करेगा तो मैं तुझे बड़ा दण्ड दूंगा यह कह राजा उसकी यादमें चिन्ता करके दश दिनमें मरगया फिर बलभद्र सेनापतिने अपने गुरू से जाकर पूछा मेरा स्वामी उन्मादिनी के कारण मुआ अब मुझे क्या करना उचित है सो आज्ञा कीजिये उसने कहा सेवकका धर्म यह है कि स्वामी के पीछे अपना जी दे यह सुनके बख़्शी वहां गया जहां राजा के तईं जलाने को लेगये थे जितनीबेर में राजाकी चिता तय्यार हुई

उसने भी स्नान पूजासे छुट्टीकी और जब चितामें आगदी तब यह भी चिताके पासगया और सूर्य के सामने हाथ जोड़ कर कहने लगा ऐ सूर्यदेवता ! मैं मनवच कर्म करके यही कामना मांगताहूं कि जन्म २ इसी स्वामी को पाऊं और तेरागुण गाऊं इतनाकह दण्डवत् कर आग में कूदपड़ा यह खबरसुन उन्मादिनी अपने गुरूके पासगई और उससे सबहाल कहके पूछा महाराज ! स्त्रीकाधर्म क्याहै उसने कहा माता पिताने जिसको आपनी कन्या दी उसीकी सेवाकरने से वह कुलवन्ती कहलाती है और धर्मशास्त्र में ऐसा लिखा है कि जो नारी अपने स्वामी के जीते तप व्रत करती है वह अपने स्वामीकी अवस्थाकम करती है और अंत काल में नरकमें पड़ती है और उत्तम यह है कि कैसाही स्वामी-हीनहो उसी की सेवा करने से इसकी मुक्तिहोती है और जो नारी श्मशान में सती होने की कामना कर जितने पावँ ज़मीन पर रखती है उतने अश्वमेध यज्ञ करने का फल होता है इसमें कुछ सन्देह नहीं और सतीहोने के समान नारीका कोई धर्म नहीं यहसुन वह दण्डवत्कर अपने घरको आई और स्नान ध्यान कर बहुतसा दान ब्राह्मणों को दे चितापास जा एक परिक्रमा कर बोली कि हे नाथ ! मैं जन्म २ दासी तेरी हूं इतना कह यह भी आगमें जाबैठी और जलगई इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा ! इन तीनोंमें किसका सत् अधिक हुआ राजा वीर विक्रमादित्य ने कहा उस राजाका बैतालने कहा किस तरह राजाबोला सेनापतिकी दीहुई स्त्रीको छोड़ा और उसीके वास्ते जानदी पर धर्मरक्खा स्वामी के लिये सेवकको जीदेना उचित है और पतिके लिये स्त्रीको सती होना उचितहै इसका-रण राजा का सत् अधिक हुआ बैताल इतना सुन उसी तरुवर

में जा लटका राजाभी पीछे २ जा फिर उसे बांध कांधे पर रख लेचला ॥ १६ ॥

सत्रहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा ! उज्जैन नगरी का महासेन नाम राजाथा और वहांका बासी देवशर्मा ब्राह्मणथा जिसके बेटेका नाम गुणाकरथा वह ज्वारीहुआ यहांतक कि जो कुछ ब्राह्मण का धनथा सो जुए में हारदिया तब सारे कुनबे के लोगों ने गुणाकरको घरसे निकालदिया और उससे कुछ बन न आया लाचारहो वहां से चला तो कितने एक दिनोंमें एकशहर में आया वहां देखता क्या कि एक योगी धूनी लगायेहुये बैठा है उसे दण्डवत्कर यह भी वहां बैठगया योगी ने इससे पूछा तू कुछ खायगा इसने कहा महाराज !दोगे तो क्यों न खाऊंगा योगीने एक आदमी की खोपड़ी में खाना भर के इसे लादिया इसने देखकर कहा इसकपालका अन्न मैं न खाऊंगा जब इन्ने भोजन न किया तब योगीने ऐसा मंत्रपढ़ा कि एकयक्षिणी हाथजोड़ आनके प्रकटहुई और बोली महाराज जो आज्ञाहो सो करूं योगी ने कहा इस ब्राह्मण को इच्छाभोजनदे इतना सुनके एक अच्छा सा मन्दिर बना उसमें सब सुखके सामान रखके इसे यहांसे अपने साथ ले गई और एक चौकी पर बैठा भांति भांतिके ब्यंजन और पकवान थालभर २ उसके सामने रक्खे उसने मनमाना जो भायासोखाया और इसके बाद पानदान इसके सम्मुख रखदिया और केसर चन्दन गुलाबमें घिसकर उसके बदनमें लगाया फेर अच्छे २ बस्त्रसुगन्धों से बसाकर पहना फूलोंकी माला गले में डाल वहांसे पलँग परजा बिठाया इतनेमें सांझहुई और यहभी अपनी तैयारीकर सेजपर जा बैठी और उसब्राह्मणने

सारी रैन सुखचैनसे काटी जब भोरहुआ तो वह यक्षिणी अपने स्थान परगई तब इसने योगीसे आनकर कहा कि स्वामी वह तो चलीगई अब मैं क्या करूं योगी बोला वह बिद्याके बलसे आईथी जिसे बिद्या आती है उसके पास रहती है इसने कहा महाराज वहविद्या मुझे दो तो मैं साधूं तब योगीने एकमंत्र उसको दिया और कहा कि इस मंत्रको चालीस दिन आधीरातके समय जलमें बैठ एक चित्त होके साध इसी तरह से वह साधने को जाया करता और अनेक २ तरहके भय दृष्टि आते पर यह किसीसे न डरता जबकि वह मुद्दत होचुकी तो इसने योगीसे आकर कहा कि महाराज जितने दिन आपने कहेथे मैं साध आया उसने कहा इतने दिन अब आगमें बैठ कर साध इसने कहा महाराज एक बार अपने कुटुम्ब से मिल आऊं फिर आके साधूंगा यह योगीसे कह बिदाहो अपने घर को गया और कुनबेके लोगोंने इसे जो देखा तो गले लगा २ रोने लगे और इसके बापने कहा अय गुणाकर! इतने दिनों तू कहां था और किसवास्ते घरको बिसारा अय पुत्र! ऐसे कहा है कि जो पतिव्रता स्त्रीको छोड़के जुदा रहता है और युवास्त्री को पीठ देताहै अथवा जो जिसे चाहता है वह उसे नहीं चाहता तो चांडाल के समान होताहै और ऐसे कहा है कि गृहस्थी धर्मके बराबर कोई संसार में सुख देनेवाली स्त्री नहीं और जो माता पिताकी निंदा करताहै सो अधम नरहै और उसकी गति मुक्ति कभी नहीं होती ऐसा शास्त्रमें कहाहै तब गुणाकर बोला कि यह शरीर रक्त और मांसका बना हुआ है सो कीड़ों की खानि है और स्वभाव इसका यहहै कि एकदिन इसकी खबर न लीजे तो दुर्गंध आती है जो ऐसे शरीरसे प्रीति करते हैं सो मूर्ख हैं और जो इससे

हित नहीं करते वे पण्डित हैं और इस शरीर का यही धर्म है कि बारबार जन्म लेता है और मरता है ऐसे शरीरका क्या भरोसा कीजिये इसे बहुतेरा पवित्र कीजिये पर यह पवित्र नहीं होता जैसे मलका भरा घड़ा ऊपर के धोने से पाकनहीं होता और कोयले को कोई बहुतेरा धोवे पर वह धौला नहीं होता और जिस शरीर में मलही सदा बहाकरे वह किस तरह से शुद्ध हो सक्ता है इतना कह फिर बोला कि किसकी माता और किसका बाप किसकी जोरू किसका भाई इस संसार की यही रीति है कि कितने आते हैं और कितने जाते हैं जो यज्ञ और होमके करेनवाले हैं सो अग्निको ईश्वर जानते हैं और जो बुद्धिहीन हैं सो प्रतिमाकर भगवान को मानते हैं और योगी लोग अपने घटमेंही हरिको जानते हैं ऐसे गृहस्थी धर्मको मैं न करूंगा और योगाभ्यास करूंगा इतना कह उसने घरसे बिदाले योगीके पास अग्निमें बैठ मंत्र साधा पर यक्षिणी न आई तब योगी के पास गया और योगी ने उससे कहा विद्या तुझे न आई फिर उसने कहा महाराज हां न आई इतनी कथा कह बैताल बोला कि ऐ राजा! कहो किसकारण उसे विद्या न आई राजाबोला वह साधक दुचित्ताहुआ इसलिये न आई और ऐसे कहाहै कि एकचित्त होने से मंत्र सिद्ध होता है और दुचित्ता होने से नहीं होता और ऐसे भी कहा है जो दान से हीन हैं उनकी कीर्ति नहीं होती और जो सत से हीन हैं उन्हें लाज नहीं जो न्यायसे हीन हैं तिन्हें लक्ष्मी नहीं मिलती और जो ध्यान से हीन हैं तिन्हें भगवान नहीं मिलता यह सुन बैतालने कहा जो साधक मन्त्र सिद्ध करने के लिये आगमें बैठा वह किस तरह दुचित्ता हुआ राजाने कहा मन्त्र साधने के समय जब वह अपने कुटुम्ब से

मिलने गया उस समय योगीने क्रोधकर अपने मनमें कहा कि ऐसे दुचित्ता साधक को मैंने विद्या क्यों सिखाई इसलिये उसे विद्या न आई और ऐसे कहा है कि मनुष्य कितनाही पराक्रम करे पर कर्म उसके साथ रहता है और कितनाही काम अपनी बुद्धि से करे पर कर्म का लिखाही मिलता है यह सुनकर बैताल फिर उसी वृक्ष पर जा लटका और राजाभी उसके पीछे जा उसे बांध कांधे पर रख लेचला ॥ १७ ॥

अठारहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा ! कूबलपुर नाम एक नगर है वहां के राजा का नाम सुदर्शीथा और उस नगर में धनाक्षनाम एक सेठ भी रहताथा उसकी पुत्रीका नाम धनवती था छोटी उमरमें उसका ब्याह एकगौरीदत्त नाम बनियेसे करदिया कितने दिनों के पीछे एक लड़की उसके हुई नाम उसका मोहनीरक्खा जब वह कईवर्ष की हुई तब बाप उसका मरगया और उस बनियेके भाई बंदोंने उसका सर्वस्व छीनलिया वह लाचारहो अपनी बेटीकाहाथ पकड़ अंधेरी रातके समय उस घरसे निकल अपने मातापिता के घरचली थोड़ी दूरजाकर राह भूल एक मरघटमें जा निकली वहां एक चोर शूलीपर टँगाहुआ था अचानक इसकापांव उसके पांवमें लगा वह बोला इससमय मुझे किन्ने दुःख दिया तब यह बोली मैंने जानकर तुझे दुःख नहीं दिया मेरा अपराध क्षमाकर उसने कहा दुःख और सुख कोई किसीको नहीं देता जैसा बिधाता उसके कर्म में लिख देताहै वैसाही होताहै और जो मनुष्य कहते हैं कि यह काम हमने किया सो बुद्धिहीन हैं क्योंकि मनुष्य कर्म्मके तागेमें बँधेहुये हैं वह जहां २ चाहताहै तहां२ खैंचलेजाताहै बिधाताकी बात

कुछ जानी नहीं जाती क्योंकि मनुष्य अपने मन में कुछ बिचारते हैं और वह कुछ और करदेताहै तब धनवती बोली ऐ पुरुष ! तू कौन है उसने कहा मैं चोरहूं तीसरादिन शूलीपर मुझको हुआ है और जाननहीं निकलती वह बोलीकिसकारण उसने कहा बिना ब्याहहूं यदि तू अपनी कन्या मुझे ब्याहदे तो करोड़ अशरफी तुझेदूं बिदितहै कि पापका मूललोभ और ब्याधिका मूलरस और दुःखका मूल नेह है जो इनतीनों को छोड़े सो सुखसेरहे पर ये हरएकसे छूटनहींसक्के अन्तकाल लालचके मारे धनवती ने कन्यादेने की इच्छाकी और पूछा कि यह चाहतीहूं कि तेरे पुत्र हो पर किस तरह से होगा उसने कहा कि यह जिस समय में जवान होगी उस समय एक सुन्दर ब्राह्मण को बुलाकर पांचसौ मोहर दे उसके पास रखियो इसतरह पर इसके बेटा होगा यह सुनके धनवतीने लड़की को शूली के गिर्द चार फेरे कर ब्याह करदिया तब चोरने उस्से कहा कि पूर्व दिशा इन्दारे के पास एकबड़का वृक्ष है उसके नीचे वे अशराफ़ियां गड़ी हुई हैं तू जाके ले ले यह कहके उसका प्राण निकलगया यह उधरको चली और वहां पहुंचकर उसमेंसे थोड़ी अशर्फ़ियां ले अपने माता पिताके घर आई उनसे यह वृत्तान्त कह उनको अपने साथले स्वामीके देशमें लाई फिर एक बड़ीसी हवेली बना उसमें रहनेलगी और वह लड़की दिन २ बढ़नेलगी जब यौवनवंतीहुई तब एकदिन सखीको साथले कोठेपर खड़ी बाट निहार रही थी कि इतने में एक जवान ब्राह्मण उस राहमें आ निकला और यह उसे देख कामके बश होकर सखीसे बोली कि ऐ आली ! इस पुरुष को मेरी माताके पास लेजा यहसुन वह ब्राह्मणको उसकी माताके पासलेगई वह उसे देखकर बोली मेरी

बेटी जवानहै जो तू इसके पास रहेगा तो मैं पुत्रके निमित्त पांच सौ अशरफी तुझे दूंगी यहसुनके उसने कहा मैं रहूंगा ये बातेंकरते थे कि इतने में सांझहुई तो इच्छाभोजन दिया उसने ब्याहकिया दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि भोग आठ प्रकारका है एक सुगन्ध दूसरा बनिता तीसरे वस्त्र चौथे गीत पांचवें पान छठे भोजन सातवें शय्या आठवें आभूषण ये सब वहां मौजूद थे निदान जब पहर रात आई तब उसने रङ्गमहलमें जा उसके साथ सारी रैन आनन्दसे काटी जब भोर हुआ तब वह अपनेघर गया और यह उठके अपनी सखियों के पास आई तब उसमेंसे एकने पूछा कि कहो रातको प्रीतम के साथ क्या २ आनन्द किये उसने कहा जिस समय कि मैं उसके पास जा बैठी मेरे जीमें एक धड़का मालूम हुआ था जबकि उसने मुसकराके मेरा हाथ पकड़ लिया मैं उसके बश होगई और मुझे कुछ खबर न रही कि क्या हुआ और ऐसे कहा है कि एक नामी दूसरे शूरमा तीसरे चतुर चौथे सरदार पांचवें सखी छठे गुणवान् सातवें स्त्री रक्षकहो ऐसे पुरुषको नारी इस जन्म में तो क्या उस जन्ममें भी नहीं भूलती लाभ यह हुआ कि उसी रात इसे गर्भ रहा जबकि दिन पूरे हुये एक पुत्र पैदाहुआ छठीकी रातको उसकी माताने सपने में देखा कि एक योगी जिसके शिर पर जटा माथे पर चांद उज्ज्वल भभूत मले श्वेत जनेऊ पहने श्वेत कमलके आसन पर बैठा सपेद सांपोंकी माल पहिने मुण्डमाल गलेमें डाले एक हाथमें खप्पर दूसरेमें त्रिशूल लियेहुये महाभयावनी सूरतबनाए उसके आगे आ कहने लगा कि कल आधी रात के समय एक पिटारेमें हज़ार मोहरका तोड़ा और इस लड़केको चन्दकर राजा के द्वारपर रख आ यह देखतेही उसकी आंख खुलगई और सबेरा

हुए अपनी मा के आगे इसने सब वृत्तांत कहा यह सुनके दूसरे दिन उसकी माता उसी तरह पिटारे में उस बालक को बन्दकर राजाके द्वारपर रख आई इधर राजाने रातको स्वप्नदेखा कि दश भुजा पांच शिर हरएक शिरमें तीन२ आंखें और हरएक शिरपर एक२ चांद बड़े२ त्रिशूल हाथमें लिये अति डरावनी सूरत इसके सामने आनके बोला कि ऐराजा! तेरे द्वारपर एक पिटारा रक्खा है उसमें जो लड़काहै उसे तू लेआ वही तेरा राज रक्खेगा यह सुनतेही राजाकी आंख खुलगई तब रानीसे सब अहवाल कहा फिर वहां से उठ दरवाजे पर आ देखा कि पिटार धराहै ज्योंहीं पिटारे को खोलकर देखा तो उसमें एक बालक और हजार मोहर का तोड़ा धरा है उस बालकको आप उठालिया और द्वारपालसे कहा कि इस तोड़े को उठाला फिर महलमें जा बालकको रानी की गोदमें दिया इतनेमें प्रभातहुआ तो राजाने बाहर आ पण्डितों से और ज्योतिषियों से बुलाके पूछा कि कहो इस बालकमें राज्य लक्षण क्या २ हैं तब उन पण्डितों में से एक सामुद्रिक जानने वाला ब्राह्मण बोला महाराज इसबालक में तीन लक्षण तो प्रत्यक्ष दीखते हैं एक तो बड़ी छाती दूसरे ऊंचाललाट तीसरे बड़ा चेहरा सिवाय इसके महाराज बत्तीस लक्षण पुरुषके जो कहे हैं सो सब इसमें हैं इससे निःसंदेह रहिये यह राज्य करेगा यह सुन राजाने प्रसन्नहो मोतियोंका हार अपने गलेसे उतार उस ब्राह्मणकोदिया और सब ब्राह्मणों को बहुतसा दानदे हुक्म किया इसलड़के का नामरक्खो तब पण्डितोंनेकहा महाराज आप गांठजोड़कर बैठिये और महारानी गोदमें बालकले बैठें और सब मांगलिकलोगोंको बुलाके मंगलाचार करवाओ तब हम शास्त्रकी रीतिसे नामकरण करें यहसुन राजाने दीवानको बुला आज्ञादी कि जो ये कहें सो

करो दीवानने बालकके होनेकी उसी समय नगर में डौंड़ी खुशी फिरवादी यहसुनके सब मंगलामुखी आये और घर२से बधाई आनेलगी राजाके मन्दिरमें आनन्दके बाजन बाजनेलगे और मंगलाचार होने लगे फिर राजा रानी गोदमें पुत्रको ले चौकपर आबैठे और ब्राह्मणवेद पढ़नेलगे. उन ब्राह्मणोंमें से एक ज्योतिषी ने शुभ घड़ी लग्न मुहूर्त्त बिचारउस बालक का नाम हरदत्त रक्खा फिर वह दिन२ बढ़ने लगा निदान वह नववर्षकी उमर में छओं शास्त्र चौदहों विद्या पढ़ कर पण्डित हुआ इस में भगवान् का चाहा यों हुआ कि उसके माता पिता मरगये वह राजगद्दी पर बैठा और धर्मराज करनेलगा कई एकवर्ष के पीछे एक दिन वह राजा अपने मन में चिन्ता करनेलगा कि मैंने मा बाप के यहां जन्म लेके उनके निमित्त क्या किया कहावत है कि जो दयावन्त होतेहैं वे सबपर दयाकरते हैं वेई ज्ञानीहैं और उन्हीं को बैकुण्ठ होताहै और जिनका मन शुद्ध नहीं तिनका दान पूजा तप तीर्थ करना शास्त्र सुनना सब वृथा है और जो श्रद्धाहीन डिम्भ समेत श्राद्ध करते हैं तिनका निष्फल होताहै और पितृ उनके निराशजातेहैं यहबात राजाने शोच समझकर बिचारा कि अब पितृकर्म किया चाहिये फिर राजा हरदत्त गया में गया और अपने पितरों के नामले फल्गू नदी के किनारे पिण्डदान देनेलगा तो उसनदी में से तीनों के हाथ निकले यह देख अपने जीमें घबड़ाया कि मैं किसके हाथमें पिण्ड दूं और किसके हाथमें न दूं इतनी कथा कह बैताल बोला कि ऐ राजा ! बिक्रम उन तीनों में से किसे पिण्डदेना उचितथा तब राजा ने कहा चोरको फिर बैताल बोला किस कारण तब राजा ने कहा उसमें से ब्राह्मणका बीज तो मोललिया गया और राजाने हज़ार अशरफीलेके पाला

इसवास्ते उन दोनों को पिण्डका अधिकार नहुआ इतनी बात सुन फिर बैताल उसी तरुवर पर जा लटका और राजा उसे वहां से लेचला ॥ १८ ॥

उन्नीसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा ! चित्रकूट नाम एक नगरहै वहां का रूपदत्तनाम राजा एकदिन अकेला सवार हो शिकार को गया सो भूलाहुआ एक महाबन में जा निकला वहां जाके देखता क्या है कि एक बड़ासा तालाब है उसमें कमल फूल रहे हैं और भांति २ के पक्षी कलोल कर रहेहैं तालाब के चारों ओर बृक्षोंकी घनी२ छायामें ठण्ढी २ हवा सुगन्धोंके साथ आरही है यह भी धूप गरमीका माराहुआ घोड़ेको एक बृक्षमें बांध जीनपोश बिछाकर बैठगया घड़ी एक बीती थी कि एक ऋषिकन्या अति सुन्दरी यौवनवती तहां पुष्प लेने को आई उसे फूल तोड़तेहुए देख राजा अति कामके वशहुआ जब वह फूल तोड़ के अपने स्थानको चली तब राजाबोला कि यह तुम्हारा कैसा आचार है कि हम तुम्हारे आश्रम में अतिथि आए और तुम हमारी सेवा न करो यह सुनके वह फिर खड़ीहुई तब राजाने कहा कि ऐसे कहतेहैं कि उत्तम वर्णके घर जो नीचवर्ण भी अतिथि आवे तो वहभी पूजनीयहै और चोर हो या चाण्डाल शत्रु हो या पितृघातकहो पर जो वह भी अपने घर आवे तो उसकी भी पूजा करनी उचित है क्योंकि अतिथि सबका गुरुहै इस तरहसे जब राजाने कहा तब वह खड़ीहुई फिरतो दोनों आंखें लड़ाने लगे इस में वह मुनि भी आपहुँचा राजाने उस तपस्वीको देख नमस्कार किया और उसने आशीर्वाद दिया कि चिरंजीवि रहो इतना कह राजासे पूछा कि यहां किसकारण आये हो राजा ने

कहा महाराज शिकार खेलने आयाहूं तपस्वी बोला किस लिए तू महापाप करता है ऐसाकहा है कि एक जना पाप करता है और अनेक जने उसके पापका फल भुगततेहैं राजाने कहा कि महाराज मुझपर कृपाकरके धर्म अधर्मका बिचार कहो तब वह मुनिबोला सुनिए महाराज ! जो जीव तृण जल खा बनवास करतेहैं तिनके मारनेसे बड़ा अधर्म होताहै और पशु पक्षी मनुष्य के प्रतिपाल करनेका बड़ा धर्महै और ऐसा कहाहै कि जो भय मानकर शरण आये को निर्भय करदेतेहैं सो महादान का फल पातेहैं और ऐसा कहाहै कि क्षमा बराबर तप नहीं और सन्तोष समानसुख मित्रता तुल्य धन नहीं और दयासम धर्म और जो नर अपने धर्ममें सावधान हैं और धन गुण विद्या यश प्रभुता पाय अभिमान नहीं करते और जो अपनी स्त्री से सन्तुष्ट हैं और सत्यवादी हैं सो अन्तकाल मुक्तिगति पातेहैं औरजो जटा-धारी वस्त्रहीन निरायुधको मारतेहैं वे लोग अन्तसमय नरकभोग करते हैं और जो राजा प्रजाके दुखदायियों को नहीं दण्ड देता वह भी नरक भुगतता है और जो राजपत्नी या मित्रकी स्त्री या कन्या या आठ नौ महीने की गर्भिणी स्त्री से भोग करते हैं सो महानरक में पड़तेहैं ऐसा धर्मशास्त्र में कहाहै यह सुन राजा ने कहा आजतक अनजानेसे पाप किया सो किया फिर भगवान् ने चाहा तो मैं न करूंगा राजाके इस कहनेसे मुनिने प्रसन्न हो के कहा कि जो तू वर मांग सो दूं मैं तुझसे बहुत सन्तुष्ट हुआ तब राजाने कहा महाराज जो तुम मुझपर संतुष्टहुएहो तो अपनी कन्यामुझे दो यह सुनके मुनिने अपनी पुत्री राजाको गन्धर्व-बिवाहकी रीतिसे ब्याहदी और आप अपने स्थानको गया फिर राजा ऋषिकन्याले अपने नगरकी तरफको चला कि रास्ते में

अनुमान आधीदूरके सूर्य्यास्तहुआ और चन्द्रमा उदयहुआ तब राजा एकवृक्ष घना सा देख उसके नीचे उतर घोड़ा उसकी जड़से बांध आप जीनपोश बिछा दोनों सोरहे फिर दोपहर रातके समय एक ब्रह्मराक्षस ने आ राजाको जगाकर कहा हे राजा! मैं तेरी स्त्रीको खाऊंगा राजाने कहा ऐसामतकर जो तू मांगेगा सोमैं दूंगा तब राक्षसने कहा कि ऐ राजा! जो सातवर्षके ब्राह्मणके लड़केका शिर काटकर अपने हाथसे मुझेदेतो मैं इसे न खाऊं राजा ने कहा ऐसेही मैं करूंगा परआजके सातवें दिन तू मेरे नगरमें आइयो मैं तुझे दूंगा इसी तरहसे राजाको वचन बन्द कर राक्षस अपने स्थानको गया और भोर हुये राजा भी अपने महलमें पहुंचा मंत्री ने सुनके बहुतसी खुशी की और आके भेंटदी और राजाने मंत्री से वह वृत्तान्त कहकर पूछा कि सातवें दिन राक्षस आवेगा कहो उस का यत्न क्याकरें मंत्रीने कहा महाराज आप किसीबात की चिन्ता न कीजिये भगवान् सब भला करेगा इतना कह मंत्री सवामन कंचनका एकपुतला बनवा उसमें जवाहिर जड़वा एक छकड़े पर रखवा चौराहे में खड़ाकरवाकर उसके रखवालोंसे कहा कि जो कोई इसके देखने को आवे यही उस्से कहो कि जो ब्राह्मण अपने सातवर्ष के लड़के का राजाको शिरकाटकरदे सो इसेले यहकह कर चला फिर लोग जो उसके देखने को आते थे उस्से चौकीदार यही कहतेथे दोदिन तो योंही बीते पर तीसरे दिन उसी नगर का एक दुर्बलसा ब्राह्मण कि जिसके तीन बेटेथे वह यहबात सुन घरमें आ ब्राह्मणी से कहने लगा कि एक पुत्र अपना राजाको बलिके वास्तेदे तो सवामन सोनेका पुतलाजड़ाऊ घरमें आवे यहसुन ब्राह्मणीबोली कि छोटे लड़केको मैं न दूंगी ब्राह्मणने कहा बड़ेको मैं न दूंगा

यहबात सुन मझिले ने कहा कि पिता मेरे तईं दीजिये उसने कहा अच्छा फिर ब्राह्मण बोला कि संसार में धनही मूलहै और धनहीन को सुख कहां और जो दरिद्री हुआ उसका संसार में आनावृथाहै इतना कह मझिले लड़केको लेजा चौकीदारों को दे उस पुतले को अपने घरले आया और इधर उस लड़के को लोग मंत्री के पास ले आये फिर जब सात दिन बीतगये वह राक्षस भी आया राजाने चन्दन अक्षत फूल धूप दीप नैवेद्य फल पान वस्त्रले उसकी पूजा की और उस लड़केको बुला खड्ग हाथ मेंले बलिदेने को खड़ाहुआ इसमें पहिले तो हँसा पीछे रोया इतनेमें राजा ने खड्ग माराकि शिर जुदाहोगया सचहै जोज्ञानी कहगयेहैं कि, स्त्री संसारमें दुःखकी खानिहै और वि-पत्तिका घर साहस की गिराने वाली है और मोहकी करने वाली धर्म की हरनेवाली ऐसी बिषकी जड़ है उसे उत्तम किन्ने कहा है और ऐसा कहा है कि आपदा के लिये धनराखिये और धन देके स्त्रीकी रक्षा कीजिये और धनस्त्री को देके अपने जी को बचाइये इतनी कथा कहबैताल बोलाहे राजा मरनेके समय आदमी रोताहै तू इसकी ब्यवस्था बता कि वह हँसा क्यों राजा ने कहा यह बिचार के वह हँसा कि बालकपनमें माता रक्षा करती है और बड़े हुयेसे पिता पालताहै और समय असमय में प्रजाकी राजा सहाय करता है संसारकी यह रीति है और मेरा यह हालहै कि मातापिता ने धनके लोभसे राजाको दिया और यह खड्ग लिए मारने को खड़ा है और देवता को बलि की इच्छाहै दया किसी को भी न आई यहसुन बैताल उसी बृक्ष पर जा लटका और राजा भी वहीं झटपट पहुँचा और उसेबांध कांधे पर रख लेचला ॥ १९ ॥

बीसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा! विशालपुर नाम एक नगर है वहां के राजाका नाम बिपुलेश्वर था उसके नगर में एक बनियाथा जिसका नाम अर्थदत्त और उसकी बेटीका नाम अनंगमंजरी था ब्याह उसका कमलपुरके मुन्नी नाम बनिये से करदियाथा कितने एकदिनोंके पीछे वह बनिया समुद्रपार बणिजको गया और यहां जब यह जवानहुई तब एक दिन अपने चौबारे पर खड़ीहुई रास्तेका तमाशा देखतीथी कि इसमें एक ब्राह्मणका पुत्र कमलाकर नाम चलाआताथा इनदोनों की चार नजरें हुईं और देखतेही मोहित होगये फिर घड़ीएक के पीछे सूरत संभाल ब्राह्मणका बेटा बिरहसे ब्याकुलहो अपने मित्रके घरगया और यहां यहभी उसके बियोगकी पीरसे निपट दुःखमें थी कि इतनेमें सखीने आनके उठाया पर इसे कुछ अपनी सुधि न थी फिर उसने गुलाब छिड़का और सुगंधोंको सुँघाया कि इतनेमें इसे होश आया और बोली कि ऐ कामदेव! महादेवने तुझे जला-कर भस्म किया तिसपर भी तू अपनी खुटाई से नहीं चूकता और बिन अपराध अबलाओं को दुःख देता है ये बातें कररही थी कि सांझ हुई और चांद दृष्टि आया तब चांदनी की ओर देखके बोली कि हे चन्द्रमा! हम सुनते थे कि तुम में अमृत है और किरणों की राहसे अमृत बर्षाते हो सो आज मुझपर तुम भी बिष बर्षाने लगे फिर सखीसे कहा कि यहां से मुझे उठाकर लेचल कि मैं चांदनी से जली मरती हूं तब वह उसे उठाकर चौबारे पर लेगई और कहा तुझे ऐसी बातें कहते लाज नहीं आती तब उन्ने कहा ऐ सखी मैं सब जानती हूं पर मन्मथने मुझे मारके निर्लज्जकिया और मैं धीरज बहुतेरा करतीहूं पर

बिरहकी आग से ज्यों २ जलती हूं त्यों २ मुझे घर बिषसा दृष्टि आता है सखीबोली कि तू खातिरजमारख मैं तेरा सब दुःख दूर करूंगी इतनाकह सखी अपने घर गई और इसने अपने जीमें बिचारा कि इसशरीरको उसके कारण तजूं और फिरके जन्मले उससे मिल सुखभोग करूं यह कामनाकर गलेमें फांसीडाल चाहे कि खैंचे इतने में सखी आ पहुंची और इसने झट इसके गले से रस्सी निकाल कर कहा जीने से सब कुछ है मरनेसे नहीं वह बोली कि ऐसे दुखपाने से मरनाभला है सखीने कहा एक घड़ी धैर्य्य धर मैं उसको जाकर लेआतीहूं इतना कह वह वहां गई जहां कमलाकर था फिर उसे छिपकर देखा तो वहभी बिरह से ब्याकुल होरहा है और उसका मित्र गुलाबके पानीसे चन्दन घिस २ उसके बदनमें लगाता है और केलेके कोमल २ पत्तोंसे पवन कर रहा है तिस परभी बिरह की आग से वह घबराकर जलाही जला पुकारता है और मित्रसे कहता है कि बिष लादे मैं अपना प्राण त्यागकर इस कष्टसे छूटूं इसकी यह दशा देख उसने अपने जी में कहा कैसाही साहसी पण्डित चतुर बिवेकी धीर मनुष्यहो पर कामदेव उसे एक क्षणमें बिकल करदेता है इतना अपने मनमें विचार सखीने उससे कहा ऐ कमलाकर तेरे तईं अनंगमंजरी ने कहाहै कि तू आके मुझे जीदानदे इसने कहा यह तो उसने मुझे जीवदान दिया इतना कह उठ खड़ा हुआ औ सखी इसे अपने साथ लियेहुये उसके पासगई यह वहां जाके देखे तो वह मरीहुई पड़ीहै फिर इसने भी एक आहकानारा मारा कि उसके साथ इसका दम निकलगया और जब सुबहहुई तो उसके घरके लोग इन दोनोंको मरघटमें लेगये और चिता चुनकर उन्हें रखकर आगलगाई थी कि इसमें उसका पतिभी

परदेशते मरघट की राह आ निकला तब लोगों के रोनेका शब्द सुनकर यह वहां गया तो देखता क्याहै कि इसकी स्त्री परपुरुष के साथ जलती है यहभी बिरहसे व्याकुलहो उसी आग में जलकर मरगया यह खबर नगर के लोग सुन आपस में कहने लगे कि ऐसा अचरज न आंखों देखा न कानों सुना इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा! इनतीनों में से कौनसा अधिक कामी हुआ राजा बोला कि उसका पति अधिक कामी हुआ बैतालने कहा किस कारण राजा ने कहा जिसने अपनी रानी को और के अर्थमरी देख क्रोध त्यागकर उसके प्रेममें मग्न हो जान दिया वह अधिक कामी हुआ यह बात सुन बैताल फिर उसी वृक्षपर जा लटका राजा भी वहीं जा उसे बांध कांधेपर रखलेचला॥ २०॥

॥ इक्कीसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा! जयस्तलनाम नगरहै वहांका वर्द्धमान नाम राजाथा उसके नगर में विष्णुस्वामी नाम ब्राह्मणथा उसके चार बेटे थे एक ज्वारी दूसरा कसबीबाज तीसरा छिनला चौथा नास्तिक एकदिन वह ब्राह्मण अपने बेटों को समझाने लगा कि जो कोई जुआ खेलता है उसके घरमें लक्ष्मी नहीं रहती यह सुन वह ज्वारी अपने जीमें बहुत दिक़हुआ और फिर उसने कहा कि राजनीति में ऐसे लिखता है कि ज्वारीके नाक कान काट देशसे निकाल देना इसी लिये उत्तम है कि और लोग जुआ न खेलैं और ज्वारीके जोरू लड़कों को घरमें होते भी घरमें न जानिये क्योंकि नहीं मालूम किस समय हारदे और जो वेश्या के चरित्रों पर मोहित होते हैं सो अपने जीको दुःख बिसाहते हैं और कसबीके बशमें हो सर्वस्व अपना दे अन्तको चोरी करते हैं और ऐसे कहा है कि जो स्त्री आदमीके मनको

एकघड़ी में मोहले ऐसी स्त्रीसे ज्ञानी दूर रहते हैं और अज्ञानी उससे प्रीतिकर अपनासत, शील यश आचार विचार नेम धर्म सब खोते हैं और उसको अपने गुरुका उपदेश भला नहीं लगता और ऐसे कहाहै कि जिसने अपनी लाज खोई दूसरे को वह कब बेहुरमत करने से डरता है और मसल है जो बिलाव अपने बच्चे को खाताहै सो चूहे कब छोड़ेगा फिर कहने लगा जिन्हों ने बालकपन में विद्या न पढ़ी और जवानी में कामसे आतुर हो यौवन के गर्व में रहे सो वृद्धकाल में पछिताकर हिरसकी आग में जलता है यह बातसुन उनचारों ने आपस में विचार कर कहा कि विद्याहीन पुरुष के जीनेसे मरजाना भलाहै इससे उत्तम यह है कि विदेशमें जाकर विद्यापढ़िये यह बात आपस में ठान के एक और नगर में गये और कितने एक दिनों में पढ़के पण्डित हो अपने घरको चले राहमें देखते क्याहैं कि एक कंजर मरेहुये शेरकी हड्डी चमड़ा जुदाकर गठरी बांध चाहे कि लेजाय इसमें इन्होंने आपस में कहा कि आवो अपनी विद्या अज़मावें यह ठहराय एकने उसे बुलाकर कुछ दिया और वह मोटले उसे बिदा किया और रस्ते से किनारेहो उसमोट को खोल एकने सारी हड्डियां कई जगह लगा मंत्रपढ़ छींटामारा कि वे हाड़ लगगये दूसरे ने इसी तरहसे उनहड्डियों पर मांस जमादिया तीसरे ने उसी भांतिसे मांसपर चाम बिठादिया चौथेने इसीरीति से उसे जिलादिया फिर वह उठतेही इनचारों को खागया इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा! उन चारोंमें कौन अधिक मूर्खथा राजा बिक्रमने कहा जिसने उसे जिलादिया सोई बड़ा मूर्खथा और ऐसाकहा है कि बुद्धि बिना विद्या किसी कामकी नहीं बल्कि विद्यासे बुद्धि उत्तम है और बुद्धिहीन इसी तरहसे मरते

हैं जैसे सिंहके जिलानेवाले मरे यह सुन बैताल उसी वृक्षपर जा लटका फिर राजा उसी तरह बांध कांधेपर रखले चला ॥ २१ ॥

बाइसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा ! विश्वपुरनाम एक नगर है वहांका विदग्ध नाम राजा था उसके नगरमें नारायण नाम ब्राह्मण था वह एक दिन अपने मनमें चिन्ता करने लगा कि मेरा शरीर वृद्ध हुआ और मैं दूसरे की काया में पैठने की विद्या जानता हूं इससे उचित यह है कि इस पुरानी देह को छोड़ और किसी युवाके शरीर में जाके भोग करूं जबवह यह अपने जी में बिचार कर चुका और एक तरुण शरीर में पैठनेलगा तो पहले रोया और पीछे हँसा फिर उसमें पैठकर अपने घरमें आया परन्तुइस के सारे कुटुम्बके लोग उसके कर्तबको जानतेथे फिर उनके आगे कहने लगा कि अब मैं योगी हुआ इतना कह के पढ़ने लगा कि आशाके सरोवरको तपस्या के तेजसे सुखा तिसमें मनको रखके शिथिलकरे सो योगी चतुर कहावे और यह गति संसारके लोगों की है अंग गले मुंडाहिले दांतगिरे बूढ़ेहुये लाठीले फिर तौभी तृष्णा नहीं मरती और इसीतरहसे काल चलाजाताहै कि दिन हुआ रातहुई महीनाहुआ वर्षहुआ बूढ़ाहुआ और कुछ नहीं माल्म कि कौनहूं और लोगकौनहैं और कौनकिस लिये किसी का शोक करता है एक आता है एक जाता है और अन्तकाल सब जीव जानेवाले हैं इनमें से एक न रहेगा अनेक अनेक मनहैं और अनेक अनेक मोह हैं भांति २ के पाखण्ड ब्रह्माने रचेहैं पर बुद्धिमान् इनसेबचे आशा और तृष्णाको मार शिरमुड़ा हाथ में दण्ड कमण्डलले काम क्रोधको मार योगी हो नंगे पावँ तीर्थ २ डोलते फिरते हैं सो मोक्ष पदार्थ पाते हैं

और यह संसार स्वप्ने की तरह है इसमें किसकी खुशी कीजिये और किस का ग़म और केलेके गाभे की तरह संसार है इसमें सार कुछ नहीं और धन यौवन विद्याका जो गर्व करतेहैं सो अज्ञान हैं और जो योगी हो कमण्डल हाथमें ले बारबार भीख मांग दूध घी चीनीसे अपने शरीर को पुष्टकर कामातुर हो स्त्री से भोग करते हैं सो अपना योग खोते हैं इतना पढ़कर वह बोला कि अबमैं तीर्थ यात्रा करूंगा यह बात सुन उसके कुटुम्ब के लोग बहुत प्रसन्न हुये इतनी कहानी कह बैताल बोला ऐ राजा ! किस कारण वह रोया और किस कारण हँसा तब राजा ने कहा कि बालकपन कामका प्यार और जवानी का सुख यादकर और इतने दिनों तक उस देहके रहने के मोह से रोया और अपनी विद्या सिद्ध करके नई काया में पैठनेकी खुशी से हँसा यह बात सुन बैताल उसी पेड़पर जालटका फिर राजा उसी तरह से बांध कांधेपर रखलेचला ॥ २२ ॥

तेईसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा ! धर्मपुर नाम नगर वहां का धर्मध्वज नामराजा उसके शहर में गोविन्द नाम ब्राह्मण चारों वेद छवों शास्त्रका जाननेवाला था और अपने धर्म कर्म में सावधान और हरिदत्त सोमदत्त यज्ञदत्त ब्रह्मदत्त उसके चार बेटे थे बड़े पण्डित बड़े चतुर और बापकी आज्ञामें सदा रहते थे कितने एक दिन पीछे बड़ा बेटा उसका मरगया और वह भी उसके दुःखसे मरने लगा तिस समय वहांके राजाका पुरोहित विष्णुशर्मा आनकर उसे समझाने लगा कि यह मनुष्य जिस समय माता के गर्भमें आताहै पहिले वहीं दुःख पाताहै दूसरे बालापनमें अनेक२ रोगों से सतायाजाताहै अपना दुःखदर्द नहीं कहसक्ता तीसरे जवानी

में कामके वशहो प्रियतमके बियोगसे दुःख सहता है चौथे बूढ़ा हो अपने शरीरके निर्बल होनेसे दुःखमें पड़ताहै गरज संसारमें जन्म लेनेसे बड़े दुःख होतेहैं और सुख थोड़ा क्योंकि यह संसार दुःखका मूलहै अगर कोई वृक्ष की फुनगीपर जा चढ़े या पहाड़ की चोटीपर जा बैठे या पानीमें छिपरहै या लोहेके पिंजरे में घुस रहे या पातालमें जाछिपै तौभी काल नहीं छोड़ता और पंडित मूर्ख धनवान् निर्धन ज्ञानी अज्ञानी बलवान् निर्बल कैसाही कोई होवे पर यह सर्वभक्षी काल किसी को नहीं छोड़ता तब सौ वर्ष की मनुष्यकी आयुर्बल है तिसमें से आधी तो रात में जाती है और आधी की आधी बाल और वृद्धावस्था में शेष जो रही सो विवाद वियोग शोकमें बीततीहै और जीव जो है पानीकी तरंग की तरह चञ्चलहै इससे इस मनुष्यको सुख कहां और अब कलियुग के समय सत्यवादी मनुष्य मिलना दुर्लभहै और दिनबदिन देश उजड़ते हैं राजा लोभी होते हैं पृथ्वी मन्दफल देती है चोर दुराचारी पृथ्वीमें उपाधि करते हैं और धर्म में तप संत संसार में थोड़ा रहाहै राजा कुटिल ब्राह्मण लालची लोग स्त्री के बश हुए स्त्री चञ्चल हुई पिताकी निन्दा पुत्र करनेलगे और मित्र शत्रुता और देखो जिनका मामा कन्हैया और पिता अर्जुन अभिमन्यु तिसको भी कालने न छोड़ा और जिससमय मनुष्यको यम ले जाताहै लक्ष्मी उसके घरमें रहती है और मा बाप जोरू लड़का भाई बन्धु कोई काम नहीं आता भलाई बुराई पाप पुण्यही साथ जाताहै और वेई कुनबे के लोग उसे मरघटमें ले जलादेतेहैं और देखो इधर रात व्यतीत होती है उधर दिन आता है इधर चांद अस्त होताहै उधर सूर्य्य उदय ऐसेही जवानी जाती है बुढ़ापा आताहै इसीतरहसे काल बीता चला जाताहै पर यह देखकर भी

इस मनुष्यको ज्ञान नहीं होता और देखो सतयुग में मान्धाता ऐसा राजा जिसने धर्म के यश से सारी पृथ्वी को छा दिया था और त्रेतामें श्रीरामचन्द्र राजा कि जिन्होंने समुद्रका पुल बांध लंकासा गढ़ तोड़ रावणको मारा और द्वापरमें युधिष्ठिरने ऐसा राजकिया कि जिसका यश अबतक लोग गाते हैं पर काल ने उन्हें भी न छोड़ा और आकाशके उड़नेवाले पक्षी और समुद्रके रहनेवाले जीव समय पाय वेभी आपत्तिमें आपड़तेहैं इससंसार में आके दुःखसे कोई नहीं छूटा इसका मोह करना वृथाहै इस्से उत्तम यहहै कि धर्मकार्य्य कीजिए इसतरहसे जब विष्णुशर्मा ने समझाया तब उस ब्राह्मणके जीमें आया कि पुण्यकार्य्य कीजिए यह मनमें शोच अपने बेटोंसे कहा कि मैं यज्ञ करने बैठताहूं तुम समुद्रसे जाकर कछुआ लेआओ अपने बापकी आज्ञा पाय एक धीवर से जाकर उन्होंने कहा कि एक रुपैया ले और कच्छप पकड़ दे उसने लिया और पकड़दिया तब उनमेंसे बड़े भाई ने मँझले से कहा तू उठाले उसने छोटे से कहा भाई तुम उठा लो उसने कहा मैं इसे न छुऊँगा मेरे हाथमें दुर्गन्ध आवेगी औ मैं भोजन करने में चतुर हूं मँझला बोला मैं स्त्री रखने में चतुर हूं बड़े ने कहा मैं सेजपर सोनेमें चतुरहूं इसतरह तीनों विवाद करने लगे औ कछुवे को वहीं छोड़ झगड़तेहुए राजाके द्वार पर जा द्वारपालसे कहा कि तीन ब्राह्मण नालिशी आएहैं यह जाके तू राजा से कह यह सुनके दरवान ने राजा को खबर दी राजा ने बुलवाकर पूछा कि तुम किसवास्ते आपसमें झगड़तेहो तब उन में से छोटा बोला कि महाराज मैं भोजन में चतुर हूं मँझले ने कहा कि पृथ्वीनाथ मैं नारीचतुर हूं बड़ेने कहा मैं शय्याचतुर हूं यह सुन राजा ने कहा कि तुम अपनी २ परीक्षा दो उन्होंने

कहा बहुत अच्छा राजाने अपने रसोइयें को बुलाकर कहा कि भांति २ के व्यंजन और पकवान बना इस ब्राह्मण को अच्छी तरह भोजन करवावो यह सुन रसोइयें ने जा रसोई तैयार कर उस भोजनचतुरको लेजा थालपरस बिठलाया चाहे कि वह ग्रास उठा मुँहमें दे कि इसमें दुर्गन्ध आई उसे छोड़ हाथ धो राजाके पास आया राजाने पूछा कि तूने सुखसे भोजनकिया तब उसने कहा कि महाराज अन्नमें दुर्गंध आई मैंने भोजन न किया फिर राजाने कहा दुर्गन्धका कारण कह उसने कहा महाराज ! मर-घटकी भूमिके चावलथे मुर्देकी बू उसमेंसे आईथी इसकारण न खाया यहसुनके राजाने अपने भण्डारीको बुलाकर पूछा अरे ये किस गांवके चावलथे उसने कहा महाराज शिवपुर के राजा ने कहा वहां के किसान को बुलाओ तब भण्डारी ने उस गांव के ज़मीदारको हुजूरमें बुलाया राजाने पूछा ये किस भूमि के चा-वल हैं उसने कहा महाराज श्मशानके हैं यहसुनके राजाने उस ब्राह्मण के लड़के से कहा कि तू सच भोजनचतुर है फिर नारी-चतुरको बुलवा एक मकानमें पलँग बिछवा सब खुशीके सामान रख एक अच्छी स्त्रीको बुलवा उसकेपास करदिया और वे दोनों लेटेहुए आपसमें बातें करनेलगे राजाछिपके झरोखेसे देखनेलगा और उस ब्राह्मण ने चाहा कि उसका बोसः ले इसमें उसके मुँह की बास पा मुँह फेर सोरहा राजाने यह चरित्रदेख अपने मंदिर में जाकर आरामकिया भोरके समय उठ सभामें आ उस ब्राह्मण को बुलाकर पूछा कि हे ब्राह्मण आजकी रात तूने सुखसे काटी उसने कहा महाराज सुख न पाया फिर राजाने कहा किस का-रण ब्राह्मण ने कहा उसके मुखसे बकरी की गन्ध आतीथी इससे मेरा जीव बहुत बेचैन रहा यह सुन राजाने कुटनी को बुलाकर

पूछा कि इसे तू कहां से लाई थी और यह कौन है उसने कहा मेरी बहिनकी बेटीहै जब तीन महीनेकी थी तब इसकी मा मर गई और मैंने इसे बकरी का दूध पिला २ कर पाला है यह सुन राजाने कहा सच तू नारिचतुर है फिर सेजचतुर को अच्छे २ बिछौने करवा पलँगपर सुलवाया प्रभात हुए राजा ने उसे बुला कर पूछा कि रात भर सुखसे सोया उन्ने कहा महाराज रात भर नींद न आई यहसुन राजाने कहा किसकारण उसनेकहा महाराज इसकी सातवीं तहमें एक बालहै वह मेरी पीठमें चुभताथा इस्से नींद न आई यहसुन राजाने उस सातवीं तह में देखा तो एक बाल निकला तब उससे कहा कि तू सच्च सेजचतुरहै इतनी बातकह बैतालने पूछा ऐ राजा ! उन तीनोंमें कौन अति चतुर है राजा ने कहा जो सेजचतुर है यहसुन बैताल फिर उसी वृक्ष पर जा लटका राजाभी वहीं जा उसेबांध कंधेपर रख लेचला॥२३

चौबीसवीं कहानी॥

बैतालने कहा ऐ राजा! कलिंग देशमें एक यज्ञशर्मा नाम ब्राह्मण तिसकी स्त्रीका नाम सोमदत्ता अतिरूपवती थी वह ब्राह्मण यज्ञकरने लगा इसमें उसस्त्रीके एक सुन्दर लड़का हुआ जब वह पांचवर्षका हुआ तब बाप उसका शास्त्रपढ़ाने लगा बारह वर्ष की उमर में वह सब शास्त्र पढ़के बड़ा पण्डित हुआ और सदा अपने बापकी सेवामें रहने लगा कुछ दिनके बीते वह लड़का मरगया उसके शोकमें उसके माता पिता चिल्ला चिल्ला रोनेलगे यह खबर पा सारे कुनबेके लोग धाये और उस लड़के को अरथीमें बांधकर श्मशानमें लेगये और वहां जा उसे देख आपसमें कहने लगे देखो मुयेपर भी सुन्दर लगता है इसीतरह से बातें करतेथे और चिता चुनतेथे कि वहां एक योगीभी बैठा

तपस्या कर रहाथा यह बात सुन वह अपने जीमें बिचारने लगा कि मेरा शरीर अति बृद्धहुआ जो इस लड़के के शरीरमें पैठूं तो सुख भोग योगकरूं यह शोच कर वह उस लड़के के शरीरमें पैठगया करवटले राम कृष्ण कहि ऐसा उठ बैठा जैसे कोई सोतेसे उठ बैठे यह देख तमाम लोग अचंभे में हो अपने २ घर आये और उसके बापको यह अचरज देखकर बैराग्य हुआ पहिले हँसा पीछे रोया इतनी कथा कहि बैताल बोला ऐ राजा! बिक्रम कहो वह क्यों हँसा और क्यों रोया तब राजाने कहा कि योगी को इसके शरीर में जाते देख और यह विद्या सीखकर हँसा और अपने शरीर के छोड़ने के मोहसे रोया कि एक दिन इसीतरह से मुझे भी अपना शरीर छोड़ना पड़ेगा यह सुन बैताल फिर उसी बृक्ष पर जा लटका और राजा भी पीछे जा उसे बांध कांधे पर रख ले चला २४॥

पचीसवी कहानी॥

बैताल बोला ऐ राजा दक्षिण दिशामें धर्मपुर नगर है वहांके राजाका नाम महाबल है एक समय उंसी देशका एक और राजा फौजले चढ़ आया और उसका नगर आनघेर कितने एकदिनों लड़तारहा जब सेना इसकी मिलगई और कुछ कटगई तब ला-चार हो रातमें रानीको बेटी समेत साथले बनमें निकलगया जब कईएक कोस बनमें पहुँचा तो प्रभात हुआ और एक गांव नज़र आया तब राजा रानी और कन्याको एक पेड़तले बिठला आप गांवकी तरफ खानेका कुछ सामान लेने चलाथा कि इतने में भीलोंने आनघेरा और कहा हथियार डालदे यह सुनके राजा ने तीर मारनाशुरूकिया और उधरसे इन्होंने इसतरह एक पहर लड़ाई की और कितने एक लोग भीलोंके मारेगये इतने में एक

तीर राजाके माथे में ऐसा लगा कि भैरा के गिरपड़ा और एकने आ राजाका शिर काटलिया जब रानी और राजकन्या ने अपने राजाको मुआ देखा तो रोती पीटती उलटी बनको चली इसी तरह से कोस दो एक चल मांदी होके बैठीं और अनेक अनेक भांतिकी चिन्ता करने लगीं इतने में चन्द्रसेन राजा और उसका बेटा दोनों शिकार खेलते हुये उसी ओर आ निकले और दोनों के पांवके चिन्ह देख राजाने अपने पुत्रसे कहा कि इस महाबननें आदमी के पांवके निशान कहांसे आये राजपुत्रने कहा महाराज ये चरण चिह्न स्त्रियों के हैं पुरुषका पांव ऐसा छोटा नहीं होता राजाने कहा सच ऐसा कोमल चरण पुरुषका नहीं होता फिर राजकुमार ने कहा इसी समय गईं हैं राजाने कहा चलो इसबन में ढूंढें जो मिलैं तो जिसका यह बड़ा पांव है सो तुझेदूंगा और दूसरी मैं लूंगा इसतरह आपस में वचनबद्ध हो आगे जा देखें तो दोनों बैठी हुई हैं उन्हें देख खुशहो अपने अपने घोडे पर बिठा घर ले आये रानीको राजकुँवर ने रक्खा और राजकन्या को राजाने इतनी कथा कहिकर बैताल बोला ऐ राजा ! विक्रम उन दोनों के लड़कों का आपस में क्या नाता होगा यह सुन राजा अज्ञानहो चुपरहा फिर बैताल खुशहो बोला कि, ऐ राजा! मैं तेरा धीरज और साहस देख अतिप्रसन्न हुआ पर एक बात मैं कहता हूं सो तू मान उसके शरीर के रोम समान कांटों के और देह उसकी गोर और नाम शांतिशील सो तेरे नगर में आया है और तुझे उसने मेरे लेने को भेजा है आप बैठा मरघट में मंत्र जगा रहा है और तुझे मारा चाहता है इस लिये मैं जता देता हूं कि जब पूजाकर चुकेगा तब तुझसे कहेगा कि ऐ राजा ! तू आकर योग कर तब तू कहियो मैं सब राजाओंका राजा हूं और सब

राजा मुझे आन के दण्डवत करते हैं मैंने आजतक किसी को दण्डवत् नहींकी और मैं नहीं जानता आप गुरूहैं कृपाकरके सिखा दीजिये तो मैं करूं जब वह दण्डवत् करै तब ऐसा खड्ग मारियो कि शिर जुदा होजाय तब तू अखंड राज्य करैगा और जो तू यह न करेगा तो वह तुझे मार अचल राज्य करैगा इतनी बात राजाको चिता बैताल उस मुर्देके देहसे निकलकर चलागया और कुछरात रहते वह मुर्दा ला राजाने योगीके आगे रखदिया योगीने उसको देखकर खुशहो राजा की बहुतसी बड़ाई की फिर मंत्र पढ़ उस मुर्देको जगाया होमकर बलिदिया और दक्षिणकी तरफ बैठ जितना कुछ सराजाम तैयार कियाथा सो अपने देवता को चढ़ादिया और पान फूल धूप दीप नैवेद्य दे पूजाकर राजासे कहा कि तू दण्डवत् कर तेरा बड़ा तेज प्रताप होगा और अष्टसिद्धि नवनिद्धि सदा तेरे घरमें रहैगी यह सुन राजाने बैतालकी बात यादकर हाथजोड़ निपट आधीनतासे कहा कि महाराज मैं प्रणाम करना नहीं जानता पर आप गुरूहैं जो कृपाकरके सिखाइये तो मैं करूं यह सुन योगीने ज्योंहीं दण्ड-वत् करने को शिरझुकाया त्योंहीं राजाने एक हाथ ऐसा मारा कि शिरजुदा होगया और बैतालने आन फूलोंकी बर्षा वर्षाया ऐसा कहा है कि जो अपने तईं मारा चाहे उसको मारने से अधर्म नहीं उस समय राजाका साहस देख इन्द्रसमेत सब देवता अपने अपने बिमानों पर बैठ वहां जयजयकार करनेलगे और राजा इन्द्र ने प्रसन्नहो राजा बीरबिक्रमादित्य से कहा कि बरमांग तब राजाने हाथ जोड़कर कहा महाराज! यह कथा मेरी संसारमें प्रसिद्धहो इन्द्रने कहा जबतक चन्द्र सूर्य्य पृथ्वी आकाश स्थिर हैं तबतक यह कथा प्रसिद्ध रहेगी और तू सर्व भूमिका राजा होगा इतना

कह राजा इन्द्र अपने स्थान को गया और राजाने उन दोनों लोथोंको ले उस तेलके कढ़ावमें डालदिया तब वे दोनों बीर आ हाजिर हुए और कहने लगे कि हमें क्या आज्ञाहै राजाने कहा जब मैं याद करूं तब तुम आना इस तरह से उनसे वचन ले राजा अपने घर आ राज्य करनेलगा ऐसा कहा है पण्डित हो या मूर्ख या लड़का हो या जवान जो बुद्धिमान होगा उसकी जय होगी ॥ २५ ॥

इति बैतालपच्चीसी सम्पूर्णम् ॥